Hindi Easy-to-Read Version

Language: हिन्दी (Hindi)
Provided by: Bible League International.

Copyright and Permission to Copy

Taken from the Hindi Easy-to-Read Version © 1995 by Bible League International.
PDF generated on 2017-08-22 from source files dated 2017-08-22.
a28f7793-64e5-53d1-b0c7-eb243e526a41
ISBN: 978-1-5313-1305-0

प्रेरितों के काम

लूका द्वारा लिखी गयी दूसरी पुस्तक का परिचय

1 १ हे थियुफिलुस,

मैंने अपनी पहली पुस्तक में उन सब कार्यों के बारे में लिखा जिन्हें प्रारंम्भ से ही यीशु ने किया और २ उस दिन तक उपदेश दिया जब तक पवित्र आत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को निर्देश दिए जाने के बाद उसे ऊपर स्वर्ग में उठा न लिया गया। ३ अपनी मृत्यु के बाद उसने अपने आपको बहुत से ठोस प्रमाणों के साथ उनके सामने प्रकट किया कि वह जीवित है। वह चालीस दिनों तक उनके समने प्रकट होता रहा तथा परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताता रहा। ४ फिर एक बार जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था तो उसने उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को मत छोड़ना बल्कि जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है, परम पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा करना। ५ क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया था, किन्तु तुम्हें अब थोड़े ही दिनों बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।"

यीशु का स्वर्ग में ले जाया जाना

६ सो जब वे आपस में मिले तो उन्होंने उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल के राज्य की फिर से स्थापना कर देगा?"

७ उसने उनसे कहा, "उन अवसरों या तिथियों को जानना तुम्हारा काम नहीं है, जिन्हें परम पिता ने स्वयं अपने अधिकार से निश्चित किया है। ८ बल्कि जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तुम्हें शक्ति प्राप्त हो जायेगी, और यरूशलेम में, समूचे यहूदिया और सामरिया में और धरती के छोरों तक तुम मेरे साक्षी बनोगे।"

९ इतना कहने के बाद उनके देखते देखते उसे स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया और फिर एक बादल ने उसे उनकी आँखों से ओझल कर दिया। १० जब वह जा रहा था तो वे आकाश में उसके लिये आँखें बिछाये थे। तभी तत्काल श्वेत वस्त्र धारण किये हुए दो पुरुष उनके बराबर आ खड़े हुए ११ और कहा, "हे गलीली लोगों, तुम वहाँ खड़े-खड़े आकाश में टकटकी क्यों लगाये हो? यह यीशु जिसे तुम्हारे बीच से स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया, जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा, वैसे ही वह फिर वापस लौटेगा।"

एक नये प्रेरित का चुनाव

१२ फिर वे जैतून नाम के पर्वत से, जो यरूशलेम से कोई एक किलोमीटर *की दूरी पर स्थित है, यरूशलेम लौट आये। १३ और वहाँ पहुँच कर वे ऊपर के उस कमरे में गये जहाँ वे ठहरे हुए थे। ये लोग थे: पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बर्तुलमै और मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, उत्साही शमौन और याकूब का पुत्र यहूदा।

१४ इनके साथ कुछ स्त्रियाँ, यीशु की माता मरियम और यीशु के भाई भी थे। ये सभी अपने आपको एक साथ प्रार्थना में लगाये रखते थे।

१५ फिर इन्हीं दिनों पतरस ने भाई-बंधुओं के बीच खड़े होकर, जिनकी संख्या कोई एक सौ बीस थी, कहा, १६-१७ "हे मेरे भाईयों, यीशु को बंदी बनाने वालों के अगुआ यहूदा के विषय में, पवित्र शास्त्र का वह लेख जिसे दाऊद के मुख से पवित्र आत्मा ने बहुत पहले ही कह दिया था, उसका पूरा होना आवश्यक था। वह हम में ही गिना गया था और इस सेवा में उसका भी भाग था।"

१८ (इस मनुष्य ने जो धन उसे उसके नीचतापूर्ण काम के लिये मिला था, उससे एक खेत मोल लिया किन्तु वह पहले तो सिर के बल गिरा और फिर उसका शरीर फट गया और उसकी आँतें बाहर निकल आई। १९ और सभी यरूशलेम वासियों को इसका पता चल गया। इसीलिये उनकी भाषा में उस खेत को हक्लदमा कहा गया जिसका अर्थ है "लहू का खेत।")

२० पतरस ने कहा, "क्योंकि भजन संहिता में यह लिखा है कि,

'उसका घर उजड़ जाये और
उसमें रहने को कोई न बचे।' †
और
'उसका मुखियापन कोई दूसरा व्यक्ति ले ले।' ‡

---

*१:१२ किलोमीटर शाब्दिक, सब्त के एक दिन की दूरी पर यानी सब्त के दिन विधान के द्वारा कितनी दूर चलना वैध था।

†१:२० उद्धरण भजन संहिता ६९:२५

‡१:२० उद्धरण भजन संहिता १०९:८

२१-२२ "इसलिये यह आवश्यक है कि जब प्रभु यीशु हमारे बीच था तब जो लोग सदा हमारे साथ थे, उनमें से किसी एक को चुना जाये। यानी उस समय से लेकर जब से यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा देना प्रारम्भ किया था और जब तक यीशु को हमारे बीच से उठा लिया गया था। इन लोगों में से किसी एक को उसके फिर से जी उठने का हमारे साथ साक्षी होना चाहिये।"

२३ इसलिये उन्होंने दो व्यक्ति सुझाये! एक यूसुफ़ जिसे बरसब्बा कहा जाता था (यह यूसतुस नाम से भी जाना जाता था।) और दूसरा मत्तियाह। २४-२५ फिर वे यह कहते हुए प्रार्थना करने लगे, "हे प्रभु, तू सब के मनों को जानता है, हमें दर्शा कि इन दोनों में से तूने किसे चुना है। जो एक प्रेरित के रूप में सेवा के इस पद को ग्रहण करे जिसे अपने स्थान को जानने के लिए यहूदा छोड़ गया था।" २६ फिर उन्होंने उनके लिये पर्चियाँ डाली और पर्ची मत्तियाह के नाम की निकली। इस तरह वह ग्यारह प्रेरितों के दल में सम्मिलित कर लिया गया।

पवित्र आत्मा का आगमन

२ १ जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक ही स्थान पर इकट्ठे थे। २ तभी अचानक वहाँ आकाश से भयंकर आँधी का शब्द आया और जिस घर में वे बैठे थे, उसमें भर गया। ३ और आग की फैलती लपटों जैसी जीभें वहाँ सामने दिखायी देने लगीं। वे आग की विभाजित जीभें उनमें से हर एक के ऊपर आ टिकीं। ४ वे सभी पवित्र आत्मा से भावित हो उठे। और आत्मा के द्वारा दिये गये सामर्थ्य के अनुसार वे दूसरी भाषाओं में बोलने लगे।

५ वहाँ यरूशलेम में आकाश के नीचे के सभी देशों से आये यहूदी भक्त रहा करते थे। ६ जब यह शब्द गरजा तो एक भीड़ एकत्र हो गयी। वे लोग अचरज में पड़े थे क्योंकि हर किसी ने उन्हें उसकी अपनी भाषा में बोलते सुना।

७ वे आश्चर्य में भर कर विस्मय के साथ बोले, "ये बोलने वाले सभी लोग क्या गलीली नहीं हैं? ८ फिर हममें से हर एक उन्हें हमारी अपनी मातृभाषा में बोलते हुए कैसे सुन रहा है? ९ वहाँ पारथी, मेदी और एलामी, मिसुपुतामिया के निवासी, यहूदिया और कप्पूदूकिया, पुन्तुस और एशिया। १० फ्रूगिया और पम्फूलिया, मिसर और साइरीन नगर के निकट लीबिया के कुछ प्रदेशों के लोग, रोम से आये यात्री जिनमें जन्मजात यहूदी और यहूदी धर्म ग्रहण करने वाले लोग, क्रेती तथा अरब के रहने वाले ११ हम सब परमेश्वर के आश्चर्यपूर्ण कामों को अपनी अपनी भाषाओं में सुन रहे हैं।"

१२ वे सब विस्मय में पड़ कर भौंचक्के हो आपस में पूछ रहे थे, "यह सब क्या हो रहा है?" १३ किन्तु दूसरे लोगों ने प्रेरितों का उपहास करते हुए कहा, "ये सब कुछ ज्यादा ही, नयी दाखरस चढ़ा गये हैं।"

पतरस का संबोधन

१४ फिर उन ग्यारहों के साथ पतरस खड़ा हुआ और ऊँचे स्वर में लोगों को सम्बोधित करने लगा, "यहूदी साथियो और यरूशलेम के सभी निवासियो! इसका अर्थ मुझे बताने दो। मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। १५ ये लोग पिये हुए नहीं हैं, जैसा कि तुम समझ रहे हो। क्योंकि अभी तो सुबह के नौ बजे हैं। १६ बल्कि यह वह बात है जिसके बारे में योएल नबी ने कहा था:

१७ 'परमेश्वर कहता है:
अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं सभी मनुष्यों पर
अपनी आत्मा उँड़ेल दूँगा
फिर तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ भविष्यवाणी करने
लगेंगे।
तथा तुम्हारे युवा लोग दर्शन पायेंगे
और तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न देखेंगे।
१८ हाँ, उन दिनों मैं अपने सेवकों और सेविकाओं
पर अपनी आत्मा उँड़ेल दूँगा
और वे भविष्यवाणी करेंगे।
१९ मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कर्म
और नीचे धरती पर चिन्ह दिखाऊँगा
लहू, आग और धुएँ के बादल।
२० सूर्य अन्धेरे में और
चाँद रक्त में बदल जायेगा।
तब प्रभु का महान और महिमामय दिन आएगा।
२१ और तब हर उस किसी का बचाव होगा जो प्रभु
का नाम पुकारेगा।' *

२२ "हे इस्राएल के लोगों, इन वचनों को सुनो: नासरी यीशु एक ऐसा पुरुष था जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे सामने अद्भुत कर्मों, आश्चर्यों और चिन्हों समेत जिन्हें परमेश्वर ने उसके द्वारा किया था तुम्हारे बीच प्रकट किया। जैसा कि तुम

*२ :२१ उद्धरण योएल २ :२८-३२

स्वयं जानते ही हो। २३ इस पुरूष को परमेश्वर
की निश्चित योजना और निश्चित पूर्व ज्ञान के
अनुसार तुम्हारे हवाले कर दिया गया, और तुमने
नीच मनुष्यों की सहायता से उसे क्रूस पर
चढ़ाया और कीलें ठुकवा कर मार डाला। २४ किन्तु
परमेश्वर ने उसे मृत्यु की वेदना से मुक्त करते
हुए फिर से जिला दिया। क्योंकि उसके लिये यह
सम्भव ही नहीं था कि मृत्यु उसे अपने वश में रख
पाती। २५ जैसा कि दाऊद ने उसके विषय में कहा
है :
'मैंने प्रभु को सदा ही अपने सामने देखा है।
वह मेरी दाहिनी ओर विराजता है, ताकि मैं डिग
न जाऊँ।
२६ इससे मेरा हृदय प्रसन्न है
और मेरी वाणी हर्षित है ;
मेरी देह भी आशा में जियेगी,
२७ क्योंकि तू मेरी आत्मा को अधोलोक में नहीं
छोड़ देगा।
तू अपने पवित्र जन को क्षय की अनुभूति नहीं
होने देगा।
२८ तूने मुझे जीवन की राह का ज्ञान कराया है।
अपनी उपस्थिति से तू मुझे आनन्द से पूर्ण कर
देगा।' *
२९ "हे मेरे भाईयों। मैं विश्वास के साथ आदि
पुरूष दाऊद के बारे में तुमसे कह सकता हूँ कि
उसकी मृत्यु हो गयी और उसे दफ़ना दिया गया।
और उसकी कब्र हमारे यहाँ आज तक मौजूद है।
३० किन्तु क्योंकि वह एक नबी था और जानता था
कि परमेश्वर ने शपथपूर्वक उसे वचन दिया है कि
वह उसके वंश में से किसी एक को उसके सिंहासन
पर बैठायेगा। ३१ इसलिये आगे जो घटने वाला है,
उसे देखते हुए उसने जब यह कहा था :
'उसे अधोलोक में नहीं छोड़ा गया
और न ही उसकी देह ने सड़ने गलने का अनुभव
किया।'
तो उसने मसीह की फिर से जी उठने के बारे
में ही कहा था। ३२ इसी यीशु को परमेश्वर ने
पुनर्जीवित कर दिया। इस तथ्य के हम सब साक्षी
हैं। ३३ परमेश्वर के दाहिने हाथ सब से ऊँचा पद
पाकर यीशु ने परम पिता से प्रतिज्ञा के अनुसार
पवित्र आत्मा प्राप्त की और फिर उसने इस
आत्मा को उँड़ेल दिया जिसे अब तुम देख रहे हो
और सुन रहे हो। ३४ दाऊद क्योंकि स्वर्ग में नहीं
गया सो वह स्वयं कहता है :
'प्रभु परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा :
मेरे दाहिने बैठ,
३५ जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों तले पैर
रखने की चौकी की तरह न कर दूँ।' †
३६ "इसलिये समूचा इस्राएल निश्चयपूर्वक
जान ले कि परमेश्वर ने इस यीशु को जिसे तुमने
क्रूस पर चढ़ा दिया था प्रभु और मसीह दोनों ही
ठहराया था!"
३७ लोगों ने जब यह सुना तो वे व्याकुल हो
उठे और पतरस तथा अन्य प्रेरितों से कहा, "तो
बंधुओ, हमें क्या करना चाहिये?"
३८ पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ और
अपने पापों की क्षमा पाने के लिये तुममें से हर
एक को यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना
चाहिये। फिर तुम पवित्र आत्मा का उपहार पा
जाओगे। ३९ क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे लिये,
तुम्हारी संतानों के लिए और उन सबके लिये है
जो बहुत दूर स्थित हैं। यह प्रतिज्ञा उन सबके
लिए है जिन्हें हमारा प्रभु परमेश्वर को अपने
पास बुलाता है।"
४० और बहुत से वचनों द्वारा उसने उन्हें
चेतावनी दी और आग्रह के साथ उनसे कहा,
"इस कुटिल पीढ़ी से अपने आपको बचाये रखो।"
४१ सो जिन्होंने उसके संदेश को ग्रहण किया, उन्हें
बपतिस्मा दिया गया। इस प्रकार उस दिन उनके
समूह में कोई तीन हज़ार व्यक्ति और जुड़ गये।

विश्वासियों का साझा जीवन

४२ उन्होंने प्रेरितों के उपदेश, संगत, रोटी
के तोड़ने और प्रार्थनाओं के प्रति अपने को
समर्पित कर दिया। ४३ हर व्यक्ति पर भय मिश्रित
विस्मय का भाव छाया रहा और प्रेरितों द्वारा
आश्चर्य कर्म और चिन्ह प्रकट किये जाते रहे।
४४ सभी विश्वासी एक साथ रहते थे और उनके
पास जो कुछ था, उसे वे सब आपस में बाँट लेते
थे। ४५ उन्होंने अपनी सभी वस्तुएँ और सम्पत्ति
बेच डाली और जिस किसी को आवश्यकता थी,
उन सब में उसे बाँट दिया। ४६ मन्दिर में एक समूह
के रूप में वे हर दिन मिलते-जुलते रहे। वे अपने
घरों में रोटी को विभाजित करते और उदार मन
से आनन्द के साथ, मिल-जुलकर खाते। ४७ सभी

*२ :२८ उद्धरण भजन संहिता १६ :८-११
†२ :३५ उद्धरण भजन संहिता ११० :१

लोगों की सद्भावनाओं का आनन्द लेते हुए वे
प्रभु की स्तुति करते, और प्रतिदिन परमेश्वर,
जिन्हें उद्धार मिल जाता, उन्हें उनके दल में और
जोड़ देता।

लँगड़े भिखारी का अच्छा किया जाना

३ १दोपहर बाद तीन बजे प्रार्थना के समय
पतरस और यूहन्ना मन्दिर जा रहे थे। २तभी
एक ऐसे व्यक्ति को जो जन्म से ही लँगड़ा था, ले
जा रहा था। वे हर दिन उसे मन्दिर के सुन्दर नामक
द्वार पर बैठा दिया करते थे। ताकि वह मन्दिर में
जाने वाले लोगों से भीख के पैसे माँग लिया करे।
३इस व्यक्ति ने जब देखा कि यूहन्ना और पतरस
मन्दिर में प्रवेश करने ही वाले हैं तो उसने उनसे
पैसे माँगे।
४यूहन्ना के साथ पतरस उसकी ओर एकटक
देखते हुए बोला, "हमारी तरफ़ देख।" ५सो उसने
उनसे कुछ मिल जाने की आशा करते हुए उनकी
ओर देखा। ६किन्तु पतरस ने कहा, "मेरे पास सोना
या चाँदी तो है नहीं किन्तु जो कुछ है, मैं तुझे दे
रहा हूँ। नासरी यीशु मसीह के नाम में खड़ा हो जा
और चल दे।"
७फिर उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसने उसे
उठाया। तुरन्त उसके पैरों और टखनों में जान
आ गयी। ८और वह अपने पैरों के बल उछला
और चल पड़ा। वह उछलते कूदते चलता और
परमेश्वर की स्तुति करता उनके साथ ही मन्दिर
में गया। ९सभी लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर
की स्तुति करते देखा। १०लोगों ने पहचान लिया
कि यह तो वही है जो मन्दिर के सुन्दर द्वार पर बैठ
कर भीख माँगता था। उसके साथ जो कुछ घटा
था उस पर वे आश्चर्य और विस्मय से भर उठे।

पतरस का प्रवचन

११वह व्यक्ति अभी पतरस और यूहन्ना के
साथ-साथ ही था। सो सभी लोग अचरज में भर
कर उस स्थान पर उनके पास दौड़े-दौड़े आये जो
सुलैमान की डयोढ़ी कहलाता था।
१२पतरस ने जब यह देखा तो वह लोगों से
बोला, "हे इस्राएल के लोगों, तुम इस बात पर
चकित क्यों हो रहे हो? ऐसे घूर घूर कर हमें क्यों
देख रहे हो, जैसे मानो हमने ही अपनी शक्ति
या भक्ति के बल पर इस व्यक्ति को चलने फिरने
योग्य बना दिया है। १३इब्राहीम, इसहाक और
याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने
अपने सेवक यीशु को महिमा से मण्डित किया।
और तुमने उसे मरवा डालने को पकड़वा दिया।
और फिर पिलातुस के द्वारा उसे छोड़ दिये जाने का
निश्चय करने पर पिलातुस के सामने ही तुमने उसे
नकार दिया। १४उस पवित्र और नेक बंदे को तुमने
अस्वीकार किया और यह माँगा कि एक हत्यारे को
तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाये। १५लोगों को जीवन
की राह दिखाने वाले को तुमने मार डाला किन्तु
परमेश्वर ने मरे हुओं में से उसे फिर से जिला दिया
है। हम इसके साक्षी हैं।
१६"क्योंकि हम यीशु के नाम में विश्वास करते
हैं इसलिये यह उसका नाम ही है जिसने इस
व्यक्ति में जान फूँकी है जिसे तुम देख रहे हो
और जानते हो। हाँ, उसी विश्वास ने जो यीशु से
प्राप्त होता है, तुम सब के सामने इस व्यक्ति को
पूरी तरह चंगा किया है।
१७"हे भाईयों, अब मैं जानता हूँ कि जैसे
अनजाने में तुमने वैसा किया, वैसे ही तुम्हारे
नेताओं ने भी किया। १८परमेश्वर ने अपने सब
भविष्यवक्ताओं के मुख से पहले ही कहलवा दिया
था कि उसके मसीह को यातनाएँ भोगनी होंगी।
उसने उसे इस तरह पूरा किया। १९इसलिये तुम
अपना मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट
आओ ताकि तुम्हारे पाप धुल जायें। २०ताकि प्रभु
की उपस्थिति में आत्मिक शांति का समय आ सके
और प्रभु तुम्हारे लिये मसीह को भेजे जिसे वह
तुम्हारे लिये चुन चुका है, यानी यीशु को।
२१"मसीह को उस समय तक स्वर्ग में रहना
होगा जब तक सभी बातें पहले जैसी न हो जायें
जिनके बारे में बहुत पहले से ही परमेश्वर ने अपने
पवित्र नबियों के मुख से बता दिया था। २२मूसा
ने कहा था, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे लिये, तुम्हारे
अपने लोगों में से ही एक मेरे जैसा नबी खड़ा
करेगा। वह तुमसे जो कुछ कहे, तुम उसी पर
चलना, २३और जो कोई व्यक्ति उस नबी की बातों
को नहीं सुनेगा, उनको पूरी तरह नष्ट कर दिया
जायेगा।' *
२४"हाँ! शमूएल और उसके बाद आये सभी
नबियों ने जब कभी कुछ कहा तो इन ही दिनों की
घोषणा की। २५और तुम तो उन नबियों और उस
करार के उत्तराधिकारी हो जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे
पूर्वजों के साथ किया था। उसने इब्राहीम से कहा
था, 'तेरी संतानों से धरती के सभी लोग आशीर्वाद

*३:२३ उद्धरण व्यवस्था विवरण १८:१५,१९

पायेंगे।’ *२६ परमेश्वर ने जब अपने सेवक को पुनर्जीवित किया तो पहले-पहले उसे तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम्हें तुम्हारे बुरे रास्तों से हटा कर आशीर्वाद दे।”

पतरस और यूहन्ना : यहूदी सभा के सामने

४ १ अभी पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर रहे थे कि याजक, मन्दिर के सिपाहियों का मुखिया और कुछ सदूकी उनके पास आये। २ वे उनसे इस बात पर चिढ़े हुए थे कि पतरस और यूहन्ना लोगों को उपदेश देते हुए यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे थे। ३ सो उन्होंने उन्हें बंदी बना लिया और क्योंकि उस समय साँझ हो चुकी थी, इसलिये अगले दिन तक हिरासत में रख छोड़ा। ४ किन्तु जिन्होंने वह संदेश सुना उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया और इस प्रकार उनकी संख्या लगभग पाँच हजार पुरूषों तक जा पहुँची।

५ अगले दिन उनके नेता, बुजुर्ग और यहूदी धर्मशास्त्री यरूशलेम में इकट्ठे हुए। ६ महायाजक हन्ना, कैफ़ा, यूहन्ना, सिकन्दर और महायाजक के परिवार के सभी लोग भी वहाँ उपस्थित थे। ७ वे इन प्रेरितों को उनके सामने खड़ा करके पूछने लगे, “तुमने किस शक्ति या अधिकार से यह कार्य किया?”

८ फिर पवित्र आत्मा से भावित होकर पतरस ने उनसे कहा, “हे लोगों के नेताओ और बुजुर्ग नेताओं! ९ यदि आज हमसे एक लँगड़े व्यक्ति के साथ की गयी भलाई के बारे में यह पूछताछ की जा रही है कि वह अच्छा कैसे हो गया १० तो तुम सब को और इस्राएल के लोगों को यह पता हो जाना चाहिये कि यह काम नासरी यीशु मसीह के नाम से हुआ है जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया और जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से पुनर्जीवित कर दिया है। उसी के द्वारा पूरी तरह से ठीक हुआ यह व्यक्ति तुम्हारे सामने खड़ा है। ११ यह यीशु वही,

‘वह पत्थर जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने नाकारा
ठहराया था,
वही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया है।’ †

१२ किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है। क्योंकि इस आकाश के नीचे लोगों को कोई दूसरा ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये।”

१३ उन्होंने जब पतरस और यूहन्ना की निर्भीकता को देखा और यह समझा कि वे बिना पढ़े लिखे और साधारण से मनुष्य हैं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। फिर वे जान गये कि ये यीशु के साथ रह चुके लोग हैं। १४ और क्योंकि वे उस व्यक्ति को जो चंगा हुआ था, उन ही के साथ खड़ा देख पा रहे थे सो उनके पास कहने को कुछ नहीं रहा।

१५ उन्होंने उनसे यहूदी महासभा से निकल जाने को कहा और फिर वे यह कहते हुए आपस में विचार-विमर्श करने लगे, १६ “इन लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाये? क्योंकि यरूशलेम में रहने वाला हर कोई जानता है कि इनके द्वारा एक उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म किया गया है और हम उसे नकार भी नहीं सकते। १७ किन्तु हम इन्हें चेतावनी दे दें कि वे इस नाम की चर्चा किसी और व्यक्ति से न करें ताकि लोगों में इस बात को और फैलने से रोका जा सके।”

१८ सो उन्होंने उन्हें अन्दर बुलाया और आज्ञा दी कि यीशु के नाम पर वे न तो किसी से कोई ही चर्चा करें और न ही कोई उपदेश दें। १९ किन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम ही बताओ, क्या परमेश्वर के सामने हमारे लिये यह उचित होगा कि परमेश्वर की न सुन कर हम तुम्हारी सुनें? २० हम, जो कुछ हमने देखा है और सुना है, उसे बताने से नहीं चूक सकते।”

२१-२२ फिर उन्होंने उन्हें और धमकाने के बाद छोड़ दिया। उन्हें दण्ड देने का उन्हें कोई रास्ता नहीं मिल सका क्योंकि जो घटना घटी थी, उसके लिये सभी लोग परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। जिस व्यक्ति पर अच्छा करने का यह आश्चर्यकर्म किया गया था, उसकी आयु चालीस साल से ऊपर थी।

पतरस और यूहन्ना की वापसी

२३ जब उन्हें छोड़ दिया गया तो वे अपने ही लोगों के पास आ गये और उनसे जो कुछ प्रमुख याजकों और बुजुर्ग यहूदी नेताओं ने कहा था, वह सब उन्हें कह सुनाया। २४ जब उन्होंने यह सुना तो मिल कर ऊँचे स्वर में वे परमेश्वर को पुकारते हुए बोले, “स्वामी, तूने ही आकाश, धरती, समुद्र

---

*३ :२५ उद्धरण उत्पत्ति २२ :१८ ; २६ :२४
†४ :११ उद्धरण भजन संहिता ११८ :२२

और उनके अन्दर जो कुछ है, उसकी रचना की है। २५ तूने ही पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक, हमारे पूर्वज दाऊद के मुख से कहा था :

'इन जातियों ने जाने क्यों अपना अहंकार
दिखाया?
लोगों ने व्यर्थ ही षड़यन्त्र क्यों रच डाले?
२६ 'धरती के राजाओं ने, उसके विरुद्ध युद्ध करने
को तैयार किया।
और शासक प्रभु और उसके मसीह के विरोध में
एकत्र हुए।' *

२७ हाँ, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी इस नगर में ग़ैर यहूदियों और इस्राएलियों के साथ मिल कर तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तूने मसीह के रूप में अभिषिक्त किया था, वास्तव में एकजुट हो गये थे। २८ वे इकट्ठे हुए ताकि तेरी शक्ति और इच्छा के अनुसार जो कुछ पहले ही निश्चित हो चुका था, वह पूरा हो। २९ और अब हे प्रभु, उनकी धमकियों पर ध्यान दे और अपने सेवकों को निर्भयता के साथ तेरे वचन सुनाने की शक्ति दे। ३० जबकि चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ाये और चिन्ह तथा अद्भुत कर्म तेरे पवित्र सेवकों द्वारा यीशु के नाम पर किये जा रहे हों।"

३१ जब उन्होंने प्रार्थना पूरी की तो जिस स्थान पर वे एकत्र थे, वह हिल उठा और उन सब में पवित्र आत्मा समा गया, और वे निर्भयता के साथ परमेश्वर के वचन बोलने लगे।

विश्वासियों का सहयोगी जीवन

३२ विश्वासियों का यह समूचा दल एक मन और एक तन था। कोई भी यह नहीं कहता था कि उसकी कोई भी वस्तु उसकी अपनी है। उनके पास जो कुछ होता, उस सब कुछ को वे बाँट लेते थे। ३३ और वे प्रेरित समूची शक्ति के साथ प्रभु यीशु के फिर से जी उठने की साक्षी दिया करते थे। परमेश्वर का महान बरदान उन सब पर बना रहता। ३४ उस दल में से किसी को भी कोई कमी नहीं थी। क्योंकि जिस किसी के पास खेत या घर होते, वे उन्हें बेच दिया करते थे और उससे जो धन मिलता, उसे लाकर ३५ प्रेरितों के चरणों में रख देते और जिसको जितनी आवश्यकता होती, उसे उतना धन दे दिया जाता था।

३६ उदाहरण के लिये यूसुफ नाम का, साइप्रस में पैदा हुआ, एक लेवी था जिसे प्रेरित बरनाबास (अर्थात चैन का पुत्र) भी कहा करते थे। ३७ उसने एक खेत बेच दिया जिसका वह मालिक था और उस धन को लाकर प्रेरितों के चरणों पर रख दिया।

हनन्याह और सफ़ीरा

५ १ हनन्याह नाम के एक व्यक्ति और उसकी पत्नी सफ़ीरा ने मिलकर अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा बेच दिया। २ और अपनी पत्नी की जानकारी में उसने इसमें से कुछ धन बचा लिया और कुछ धन प्रेरितों के चरणों में रख दिया।

३ इस पर पतरस ने कहा, "हे हनन्याह, शैतान को तूने अपने मन में यह बात क्यों डालने दी कि तूने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और खेत को बेचने से मिले धन में से थोड़ा बचा कर रख लिया? ४ उसे बेचने से पहले क्या वह तेरी ही नहीं थी? और जब तूने उसे बेच दिया तो वह धन क्या तेरे ही अधिकार में नहीं था? तूने इस बात की क्यों सोची? तूने मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से झूठ बोला है।"

५-६ हनन्याह ने जब ये शब्द सुने तो वह पछाड़ खाकर गिर पड़ा और दम तोड़ दिया। जिस किसी ने भी इस विषय में सुना, सब पर गहरा भय छा गया। फिर जवान लोगों ने उठ कर उसे कफ़न में लपेटा और बाहर ले जाकर गाड़ दिया।

७ कोई तीन घण्टे बाद, जो कुछ घटा था, उससे अनजान उसकी पत्नी भीतर आयी। ८ पतरस ने उससे कहा, "बता, तूने तेरे खेत क्या इतनें में ही बेचे थे?"

सो उसने कहा, "हाँ। इतने में ही।"

९ तब पतरस ने उससे कहा, "तुम दोनों प्रभु की आत्मा की परीक्षा लेने को सहमत क्यों हुए? देख तेरे पति को दफनाने वालों के पैर दरवाज़े तक आ पहुँचे हैं और वे तुझे भी उठा ले जायेंगे।" १० तब वह उसके चरणों पर गिर पड़ी और मर गयी। फिर जवान लोगों भीतर आये और मरा पा कर उसे उठा ले गये और उसके पति के पास ही उसे दफ़ना दिया। ११ सो समूची कलीसिया और जिस किसी ने भी इन बातों को सुना, उन सब पर गहरा भय छा गया।

प्रमाण

१२ प्रेरितों द्वारा लोगों के बीच बहुत से चिन्ह प्रकट हो रहे थे और आश्चर्यकर्म किये जा रहे थे। वे सभी सुलैमान के दालान में एकत्र थे। १३ उनमें सम्मिलित होने का साहस कोई नहीं

*४:२६ उद्धरण भजन संहिता २:१-२

करता था। पर लोग उनकी प्रशंसा अवश्य करते
थे। १४ उधर प्रभु पर विश्वास करने वाले स्त्री
और पुरूष अधिक से अधिक बढ़ते जा रहे थे।
१५ परिणामस्वरूप लोग अपने बीमारों को लाकर
चारपाइयों और बिस्तरों पर गलियों में लिटाने
लगे ताकि जब पतरस उधर से निकले तो उनमें
से कुछ पर कम से कम उसकी छाया ही पड़
जाये। १६ यरूशलेम के आसपास के नगरों से अपने
बीमारों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को
लेकर ठट के ठट लोग आने लगे, और वे सभी
अच्छे हो जाया करते थे।

यहूदियों का प्रेरितों को रोकने का जतन

१७ फिर महायाजक और उसके साथी, यानी
सदूकियों का दल, उनके विरोध में खड़े हो गये।
वे ईर्ष्या से भरे हुए थे। १८ सो उन्होंने प्रेरितों को
बंदी बना लिया और उन्हें सार्वजनिक बंदीगृह में
डाल दिया। १९ किन्तु रात के समय प्रभु के एक
स्वर्गदूत ने बंदीगृह के द्वार खोल दिये। उसने उन्हें
बाहर ले जाकर कहा, २० "जाओ, मन्दिर में खड़े
हो जाओ और इस नये जीवन के विषय में लोगों
को सब कुछ बताओ।" २१ जब उन्होंने यह सुना
तो भोर के तड़के वे मन्दिर में प्रवेश कर गये और
उपदेश देने लगे।

फिर जब महायाजक और उसके साथी वहाँ
पहुँचे तो उन्होंने यहूदी संघ तथा इस्राएल
के बुजुर्गों की पूरी सभा बुलायी। फिर उन्होंने
बंदीगृह से प्रेरितों को बुलावा भेजा। २२ किन्तु
जब अधिकारी बंदीगृह में पहुँचे तो वहाँ उन्हें
प्रेरित नहीं मिले। उन्होंने लौट कर इसकी सूचना
दी और २३ कहा, "हमें बंदीगृह की सुरक्षा के ताले
लगे हुए और द्वारों पर सुरक्षा-कर्मी खड़े मिले थे
किन्तु जब हमने द्वार खोले तो हमें भीतर कोई नहीं
मिला।" २४ मन्दिर के रखवालों के मुखिया ने और
महायाजकों ने जब ये शब्द सुने तो वे उनके बारे
में चक्कर में पड़ गये और सोचने लगे, "अब क्या
होगा।"

२५ फिर किसी ने भीतर आकर उन्हें बताया,
"जिन लोगों को तुमने बंदीगृह में डाल दिया था,
वे मन्दिर में खड़े लोगों को उपदेश दे रहे हैं।"
२६ सो मन्दिर के सुरक्षा-कर्मियों का मुखिया अपने
अधिकारियों के साथ वहाँ गया और प्रेरितों को
बिना बल प्रयोग किये वापस ले आया क्योंकि
उन्हें डर था कि कहीं लोग उन्हें (मन्दिर के
सुरक्षाकर्मियों को) पत्थर न मारें।

२७ वे उन्हें भीतर ले आये और सर्वोच्च यहूदी
सभा के सामने खड़ा कर दिया। फिर महायाजक
ने उनसे पूछते हुए कहा, २८ "हमने इस नाम से
उपदेश न देने के लिए तुम्हें कठोर आदेश दिया
था और तुमने फिर भी समूचे यरूशलेम को अपने
उपदेशों से भर दिया है। और तुम इस व्यक्ति की
मृत्यु का अपराध हम पर लादना चाहते हो।"

२९ पतरस और दूसरे प्रेरितों ने उत्तर दिया,
"हमें मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की बात माननी
चाहिये। ३० उस यीशु को हमारे पूर्वजों के परमेश्वर
ने मृत्यु से फिर जिला कर खड़ा कर दिया है जिसे
एक पेड़ पर लटका कर तुम लोगों ने मार डाला
था। ३१ उसे ही प्रमुख और उद्धारकर्ता के रूप में
महत्त्व देते हुए परमेश्वर ने अपने दाहिने स्थित
किया है ताकि इस्राएलियों को मन फिराव और
पापों की क्षमा प्रदान की जा सके। ३२ इन सब
बातों के हम साक्षी हैं और वैसे ही वह पवित्र
आत्मा भी है जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो
उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।"

३३ जब उन्होंने यह सुना तो वे आग बबूला
हो उठे और उन्हें मार डालना चाहा। ३४ किन्तु
महासभा में से एक गमलिएल नामक फ़रीसी,
जो धर्मशास्त्र का शिक्षक भी था, तथा जिसका
सब लोग आदर करते थे, खड़ा हुआ और आज्ञा
दी कि इन्हें थोड़ी देर के लिये बाहर कर दिया
जाये। ३५ फिर वह उनसे बोला, "इस्राएल के
पुरूषो, तुम इन लोगों के साथ जो कुछ करने पर
उतारू हो, उसे सोच समझ कर करना। ३६ कुछ
समय पहले अपने आपको बड़ा घोषित करते हुए
थियूदास प्रकट हुआ था। और कोई चार सौ लोग
उसके पीछे भी हो लिये थे, पर वह मार डाला
गया और उसके सभी अनुयायी तितर-बितर हो
गये। परिणाम कुछ नहीं निकला। ३७ उसके बाद
जनगणना के समय गलील का रहने वाला यहूदा
प्रकट हुआ। उसने भी कुछ लोगों को अपने
पीछे आकर्षित कर लिया था। वह भी मारा गया।
उसके भी सभी अनुयायी इधर उधर बिखर गये।
३८ इसीलिए इस वर्तमान विषय में मैं तुमसे कहता
हूँ, इन लोगों से अलग रहो, इन्हें ऐसे अकेले
छोड़ दो क्योंकि इनकी यह योजना या यह काम
मनुष्य की ओर से है तो स्वयं समाप्त हो जायेगा।
३९ किन्तु यदि यह परमेश्वर की ओर से है तो तुम
उन्हें रोक नहीं पाओगे। और तब हो सकता है
तुम अपने आपको ही परमेश्वर के विरोध में लड़ते
पाओ!"

उन्होंने उसकी सलाह मान ली। ४० और प्रेरितों
को भीतर बुला कर उन्होंने कोड़े लगवाये और यह
आज्ञा देकर कि वे यीशु के नाम की कोई चर्चा न
करें, उन्हें चले जाने दिया। ४१ सो वे प्रेरित इस
बात का आनन्द मनाते हुए कि उन्हें उसके नाम
के लिये अपमान सहने योग्य गिना गया है, यहूदी
महासभा से चले गये। ४२ फिर मन्दिर और घर-घर
में हर दिन इस सुसमाचार का कि यीशु मसीह है
उपदेश देना और प्रचार करना उन्होंने कभी नहीं
छोड़ा।

विशेष कार्य के लिए सात पुरूषों का चुना जाना

६ १ उन्हीं दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ रही
थी, तो यूनानी बोलने वाले और इब्रानी
बोलने वाले यहूदियों में एक विवाद उठ खड़ा
हुआ क्योंकि वस्तुओं के दैनिक वितरण में उनकी
विधवाओं के साथ उपेक्षा बरती जा रही थी।
२ सो बारहों प्रेरितों ने शिष्यों की समूची
मण्डली को एक साथ बुला कर कहा, "हमारे लिये
परमेश्वर के वचन की सेवा को छोड़ कर भोजन का
प्रबन्ध करना उचित नहीं है। ३ सो बंधुओ अच्छी
साख वाले पवित्र आत्मा और सूझबूझ से पूर्ण
सात पुरूषों को अपने में से चुन लो। हम उन्हें इस
काम का अधिकारी बना देंगे। ४ और अपने आपको
प्रार्थना और वचन की सेवा के कामों में समर्पित
रखेंगे।"
५ इस सुझाव से सारी मण्डली बहुत प्रसन्न
हुई। (सो उन्होंने विश्वास और पवित्र आत्मा
से युक्त) स्तिफनुस नाम के व्यक्ति को और
फिलिप्पुस, प्रखुरूप, नीकानोर, तिमोन,
परमिनास और (अन्ताकिया के निकुलाऊस को,
जिसने यहूदी धर्म अपना लिया था,) चुन लिया।
६ और इन लोगों को फिर उन्होंने प्रेरितों के
सामने उपस्थित कर दिया। प्रेरितों ने प्रार्थना
की और उन पर हाथ रखे।
७ इस प्रकार परमेश्वर का वचन फैलने लगा
और यरूशलेम में शिष्यों की संख्या बहुत अधिक
बढ़ गयी। याजकों का एक बड़ा समूह भी इस मत
को मानने लगा था।

यहूदियों द्वारा स्तिफनुस का विरोध

८ स्तिफनुस एक ऐसा व्यक्ति था जो अनुग्रह
और सामर्थ्य से परिपूर्ण था। वह लोगों के बीच
बड़े-बड़े आश्चर्य कर्म और अद्भुत चिन्ह प्रकट
किया करता था। ९ किन्तु तथाकथित स्वतन्त्र
किये गये लोगों के आराधनालय के कुछ लोग जो
कुरेनी और सिकन्दरिया से तथा किलिकिया और
एशिया से आये यहूदी थे, वे उसके विरोध में वाद-
विवाद करने लगे। १० किन्तु वह जिस बुद्धिमानी
और आत्मा से बोलता था, वे उसके सामने नहीं
ठहर सके।
११ फिर उन्होंने कुछ लोगों को लालच देकर
कहलवाया, "हमने मूसा और परमेश्वर के विरोध
में इसे अपमानपूर्ण शब्द कहते सुना है।" १२ इस
तरह उन्होंने जनता को, बुजुर्ग यहूदी नेताओं
को और यहूदी धर्मशास्त्रियों को भड़का दिया।
फिर उन्होंने आकर उसे पकड़ लिया और सर्वोच्च
यहूदी महासभा के सामने ले आये।
१३ उन्होंने वे झूठे गवाह पेश किये जिन्होंने
कहा, "यह व्यक्ति इस पवित्र स्थान और
व्यवस्था के विरोध में बोलते कभी रुकता ही नहीं
है। १४ हमने इसे कहते सुना है कि यह नासरी यीशु
इस स्थान को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा और मूसा ने
जिन रीति-रिवाजों को हमें दिया है उन्हें बदल
देगा।" १५ फिर सर्वोच्च यहूदी महासभा में बैठे हुए
सभी लोगों ने जब उसे ध्यान से देखा तो पाया
कि उसका मुख किसी स्वर्गदूत के मुख के समान
दिखाई दे रहा था।

स्तिफनुस का भाषण

७ १ फिर महायाजक ने कहा, "क्या यह बात
ऐसे ही है?" २ उसने उत्तर दिया, "बंधुओं
और पितृतुल्य बुजुर्गो! मेरी बात सुनो। हारान में
रहने से पहले अभी जब हमारा पिता इब्राहीम
मिसुपुतामिया में ही था, तो महिमामय परमेश्वर
ने उसे दर्शन दिये ३ और कहा, 'अपने देश और
अपने लोगों को छोड़कर तू उस धरती पर चला
जा, जिसे तुझे मैं दिखाऊँगा।'
४ "सो वह कसदियों की धरती को छोड़ कर
हारान में जा बसा जहाँ से उसके पिता की मृत्यु के
बाद परमेश्वर ने उसे इस देश में आने की प्रेरणा
दी जहाँ तुम अब रह रहे हो। ५ परमेश्वर ने यहाँ
उसे उत्तराधिकार में कुछ नहीं दिया, डग भर धरती
तक नहीं। यद्यपि उसके कोई संतान नहीं थी किन्तु
परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की कि यह देश वह
उसे और उसके वंशजों को उनकी सम्पत्ति के रूप
में देगा।
६ "परमेश्वर ने उससे यह भी कहा, 'तेरे वंशज
कहीं विदेश में परदेसी होकर रहेंगे और चार सौ
साल तक उन्हें दास बनाकर, उनके साथ बहुत बुरा
बर्ताव किया जाएगा।' ७ परमेश्वर ने कहा, 'दास
बनाने वाली उस जाति को मैं दण्ड दूँगा और इसके

बाद वे उस देश से बाहर आ जायेंगे और इस स्थान
पर वे मेरी सेवा करेंगे।’
८ “परमेश्वर ने इब्राहीम को ख़तने की मुद्रा
से मुद्रित करके करार-प्रदान किया। और इस
प्रकार वह इसहाक का पिता बना। उसके जन्म
के बाद आठवें दिन उसने उसका ख़तना किया।
फिर इसहाक से याकूबऔर याकूब से बारह कुलों
के आदि पुरुष पैदा हुए।
९ “वे आदि पुरूष यूसुफ़ से ईर्ष्या रखते थे। सो
उन्होंने उसे मिसर में दास बनने के लिए बेच दिया।
किन्तु परमेश्वर उसके साथ था। १० और उसने उसे
सभी विपत्तियों से बचाया। परमेश्वर ने यूसुफ़ को
विवेक दिया और उसे इस योग्य बनाया जिससे
वह मिसर के राजा फिरौन का अनुग्रह पात्र
बन सका। फिरौन ने उसे मिसर का राज्यपाल
और अपने घर-बार का अधिकारी नियुक्त किया।
११ फिर समूचे मिसर और कनान देश में अकाल
पड़ा और बड़ा संकट छा गया। हमारे पूर्वज खाने
को कुछ नहीं पा सके।
१२ “जब याकूब ने सुना कि मिसर में अन्न है,
तो उसने हमारे पूर्वजों को वहाँ भेजा-यह पहला
अवसर था। १३ उनकी दूसरी यात्रा के अवसर
पर यूसुफ़ ने अपने भाइयों को अपना परिचय दे
दिया और तभी फिरौन को भी यूसुफ़ के परिवार
की जानकारी मिली। १४ सो यूसुफ़ ने अपने पिता
याकूब और परिवार के सभी लोगों को, जो कुल
मिलाकर पिचहत्तर थे, बुलवा भेजा। १५ तब याकूब
मिसर आ गया और उसने वहाँ वैसे ही प्राण त्यागे
जैसे हमारे पूर्वजों ने वहाँ प्राण त्यागे थे। १६ उनके
शव वहाँ से वापस सेकेम ले जाये गये जहाँ उन्हें
मकबरे में दफना दिया गया। यह वही मकबरा था
जिसे इब्राहीम ने हमोर के बेटों से कुछ धन देकर
खरीदा था।
१७ “जब परमेश्वर ने इब्राहीम को जो वचन
दिया था, उसके पूरा होने का समय निकट आया
तो मिसर में हमारे लोगों की संख्या बहुत अधिक
बढ़ गयी। १८ आख़िरकार मिसर पर एक ऐसे राजा
का शासन हुआ जो यूसुफ़ को नहीं जानता था।
१९ उसने हमारे लोगों के साथ धूर्ततापूर्ण व्यवहार
किया। उसने हमारे पूर्वजों को बड़ी निर्दयता के
साथ विवश किया कि वे अपने बच्चों को बाहर
मरने को छोड़ें ताकि वे जीवित ही न बच पायें।
२० “उसी समय मूसा का जन्म हुआ। वह बहुत
सुन्दर बालक था। तीन महीने तक वह अपने पिता
के घर के भीतर पलता बढ़ता रहा। २१ फिर जब
उसे बाहर छोड़ दिया गया तो फिरौन की पुत्री
उसे अपना पुत्र बना कर उठा ले गयी। उसने
अपने पुत्र के रूप में उसका लालन-पालन किया।
२२ मूसा को मिसरियों के सम्पूर्ण कला-कौशल की
शिक्षा दी गयी। वह वाणी और कर्म दोनों में ही
समर्थ था।
२३ “जब वह चालीस साल का हुआ तो उसने
इस्राएल की संतान, अपने भाई-बंधुओं के पास
जाने का निश्चय किया। २४ सो जब एक बार उसने
देखा कि उनमें से किसी एक के साथ बुरा व्यवहार
किया जा रहा है तो उसने उसे बचाया और मिसरी
व्यक्ति को मार कर उस दलित व्यक्ति का बदला
ले लिया। २५ उसने सोचा था कि उसके अपने भाई
बंधु जान जायेंगे कि उन्हें छुटकारा दिलाने के लिए
परमेश्वर उसका उपयोग कर रहा है। किन्तु वे इसे
नहीं समझ पाये।
२६ “अगले दिन उनमें से (उसके अपने लोगों में
से) जब कुछ लोग झगड़ रहे थे तो वह उनके पास
पहुँचा और यह कहते हुए उनमें बीच-बचाव का
जतन करने लगा, ‘कि तुम लोग तो आपस में भाई-
भाई हो। एक दूसरे के साथ बुरा बर्ताव क्यों करते
हो?’ २७ किन्तु उस व्यक्ति ने जो अपने पड़ोसी के
साथ झगड़ रहा था, मूसा को धक्का मारते हुए
कहा, ‘तुझे हमारा शासक और न्यायकर्ता किसने
बनाया? २८ जैसे तूने कल उस मिस्री की हत्या
कर दी थी, क्या तू वैसे ही मुझे भी मार डालना
चाहता है?’ *२९ मूसा ने जब यह सुना तो वह वहाँ
से चला गया और मिद्यान में एक परदेसी के रूप
में रहने लगा। वहाँ उसके दो पुत्र हुए।
३० “चालीस वर्ष बीत जाने के बाद सिनाई
पर्वत के पास मरुभूमि में एक जलती झाड़ी की
लपटों के बीच उसके सामने एक स्वर्गदूत प्रकट
हुआ। ३१ मूसा ने जब यह देखा तो इस दृश्य पर
वह आश्चर्य चकित हो उठा। जब और अधिक
निकटता से देखने के लिये वह उसके पास गया तो
उसे प्रभु की वाणी सुनाई दी : ३२ ‘मैं तेरे पूर्वजों
का परमेश्वर हूँ, इब्राहीम का, इसहाक का और
याकूब का परमेश्वर हूँ।’ †भय से काँपते हुए मूसा
कुछ देखने का साहस नहीं कर पा रहा था।

*७:२८ उद्धरण निर्गमन २:१४
†७:३२ उद्धरण निर्गमन ३:६

३३ “तभी प्रभु ने उससे कहा, ‘अपने पैरों की
चप्पलें उतार क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है,
वह पवित्र भूमि है। ३४ मैंने मिस्र में अपने लोगों
के साथ हो रहे दुर्व्यवहार को देखा है, परखा है।
मैंने उन्हें विलाप करते हुए सुना है। उन्हें मुक्त
कराने के लिये मैं नीचे उतरा हूँ। आ, अब मैं तुझे
मिस्र भेजूँगा।’ *

३५ “यह वही मूसा है जिसे उन्होंने यह कहते
हुए नकार दिया था, ‘तुझे शासक और न्यायकर्ता
किसने बनाया है?’ यह वही है जिसे परमेश्वर ने
उस स्वर्गदूत द्वारा, जो उसके लिए झाड़ी में प्रकट
हुआ था, शासक और मुक्तिदाता होने के लिये
भेजा। †३६ वह उन्हें मिसर की धरती और लाल
सागर तथा वनों में से चालीस साल तक आश्चर्य
कर्म करते हुए और चिन्ह दिखाते हुए बाहर निकाल
लाया।

३७ “यह वही मूसा है जिसने इस्राएल की
संतानों से कहा था, ‘तुम्हारे भाइयों में से ही
तुम्हारे लिये परमेश्वर एक मेरे जैसा नबी भेजेगा।’
‡३८ यह वही है जो वीराने में सभा के बीच हमारे
पूर्वजों और उस स्वर्गदूत के साथ मौजूद था
जिसने सिनाई पर्वत पर उससे बातें की थी। इसी ने
हमें देने के लिये परमेश्वर से सजीव वचन प्राप्त
किये थे।

३९ “किन्तु हमारे पूर्वजों ने उसका अनुसरण
करने को मना कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने
उसे नकार दिया और अपने हृदयों में वे फिर मिस्र
की ओर लौट गये। ४० उन्होंने आरों से कहा था,
‘हमारे लिये ऐसे देवताओं की रचना करो जो हमें
मार्ग दिखायें। इस मूसा के बारे में, जो हमें मिस्र
से बाहर निकाल लाया, हम नहीं जानते कि उसके
साथ क्या कुछ घटा।’ ¶४१ उन्हीं दिनों उन्होंने
बछड़े की एक मूर्ति बनायी। और उस मूर्ति पर बलि
चढ़ाई। वे, जिसे उन्होंने अपने हाथों से बनाया था,
उस पर आनन्द मनाने लगे। ४२ किन्तु परमेश्वर ने
उनसे मुँह मोड़ लिया था। उन्हें आकाश के ग्रह-
नक्षत्रों की उपासना के लिये छोड़ दिया गया था।
जैसा कि नबियों की पुस्तक में लिखा है:

‘हे इस्राएल के परिवार के लोगो, क्या तुम
पशुबलि और अन्य बलियाँ वीराने में मुझे
नहीं चढ़ाते रहे चालीस वर्ष तक?
४३ तुम मोलेक के तम्बू और अपने देवता
रिफान के तारे को भी अपने साथ ले गये थे।
वे मूर्तियाँ भी तुम ले गये जिन्हें तुमने उपासना के
लिये बनाया था।
इसलिए मैं तुम्हें बाबुल से भी परे भेजूँगा।’ §

४४ “साक्षी का तम्बू भी उस वीराने में हमारे
पूर्वजों के साथ था। यह तम्बू उसी नमूने पर
बनाया गया था जैसा कि उसने देखा था और जैसा
कि मूसा से बात करने वाले ने बनाने को उससे
कहा था। ४५ हमारे पूर्वज उसे प्राप्त करके तभी
वहाँ से आये थे जब यहोशू के नेतृत्त्व में उन्होंने
उन जातियों से यह धरती ले ली थी जिन्हें हमारे
पूर्वजों के सम्मुख परमेश्वर ने निकाल बाहर किया
था। दाऊद के समय तक वह वहीं रहा। ४६ दाऊद
ने परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द उठाया। उसने
चाहा कि वह याकूब के लोगों **के लिए एक
मन्दिर बनवा सके ४७ किन्तु वह सुलैमान ही था
जिसने उसके लिए मन्दिर बनवाया।

४८ “कुछ भी हो परम परमेश्वर तो हाथों से
बनाये भवनों में नहीं रहता। जैसा कि नबी ने कहा
है:
४९ ‘प्रभु ने कहा,
स्वर्ग मेरा सिंहासन है,
और धरती चरण की चौकी बनी है।
किस तरह का मेरा घर तुम बनाओगे?
कहीं कोई जगह ऐसी है, जहाँ विश्राम पाऊँ?
५० क्या यह सभी कुछ, मेरे करों की रचना नहीं
रही?’” ††

५१ स्तिफनुस ने कहा, “हे बिना ख़तने के मन और
कान वाले हठीले लोगो! तुमने सदा ही पवित्र
आत्मा का विरोध किया है। तुम अपने पूर्वजों के
जैसे ही हो। ५२ क्या कोई भी ऐसा नबी था, जिसे
तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? उन्होंने तो उन्हें भी
मार डाला जिन्होंने बहुत पहले से ही उस धर्मी के
आने की घोषणा कर दी थी, जिसे अब तुमने धोखा

---

*७:३४ उद्धरण निर्गमन ३:५-१०
†७:३५ उद्धरण निर्गमन २:१४
‡७:३७ उद्धरण व्यवस्था विवरण १८:१५
¶७:४० उद्धरण निर्गमन ३२:१
§७:४३ उद्धरण आमोस ५:२५-२७
**७:४६ याकूब के लोगों कुछ यूनानी प्रतियों में “याकूब के परमेश्वर के लिए” है।
††७:५० उद्धरण यशायाह ६६:१-२

देकर पकड़वा दिया और मरवा डाला। ५३ तुम वही
हो जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा दिये गये व्यवस्था के
विधान को पा तो लिया किन्तु उस पर चले नहीं।"

स्तिफनुस की हत्या

५४ जब उन्होंने यह सुना तो वे क्रोध से
आगबबूला हो उठे और उस पर दाँत पीसने लगे।
५५ किन्तु पवित्र आत्मा से भावित स्तिफनुस
स्वर्ग की ओर देखता रहा। उसने देखा परमेश्वर
की महिमा को और परमेश्वर के दाहिने खड़े यीशु
को। ५६ सो उसने कहा, "देखो। मैं देख रहा हूँ कि
स्वर्ग खुला हुआ है और मनुष्य का पुत्र परमेश्वर
के दाहिने खड़ा है।"

५७ इस पर उन्होंने चिल्लाते हुए अपने कान
बन्द कर लिये और फिर वे सभी उस पर एक साथ
झपट पड़े। ५८ वे उसे घसीटते हुए नगर से बाहर ले
गये और उस परपथराव करने लगे। तभी गवाहों ने
अपने वस्त्र उतार कर शाउल नाम के एक युवक
के चरणों में रख दिये। ५९ स्तिफ़नुस पर जब से
उन्होंने पत्थर बरसाना प्रारम्भ किया, वह यह
कहते हुए प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु,
मेरी आत्मा को स्वीकार कर।" ६० फिर वह घुटनों
के बल गिर पड़ा और ऊँचे स्वर में चिल्लाया,
"प्रभु, इस पाप कोउनके विरुद्ध मत ले।" इतना
कह कर वह चिर निद्रा में सो गया।

८ १-३ इस तरह शाऊल ने स्तिफनुस की हत्या
का समर्थन किया।

विश्वासियों पर अत्याचार

उसी दिन से यरूशलेम की कलीसिया पर घोर
अत्याचार होने आरम्भ हो गये। प्रेरितों को छोड़
वे सभी लोग यहूदिया और सामरिया के गाँवों में
तितर-बितर हो कर फैल गये। कुछ भक्त जनों
ने स्तिफनुस को दफना दिया और उसके लिये
गहरा शोक मनाया। शाऊल ने कलीसिया को नष्ट
करना आरम्भ कर दिया। वह घर-घर जा कर औरत
और पुरूषों को घसीटते हुए जेल में डालने लगा।
४ उधर तितर-बितर हुए लोग हर कहीं जा कर
सुसमाचार का संदेश देने लगे।

सामरिया में फिलिप्पुस का उपदेश

५ फिलिप्पुस सामरिया नगर को चला गया और
वहाँ लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।
६ फिलिप्पुस के लोगों ने जब सुना और जिन
अद्भुत चिन्हों को वह प्रकट किया करता था,
देखा, तो जिन बातों को वह बताया करता था, उन
पर उन्होंने गम्भीरता के साथ ध्यान दिया। ७ बहुत
से लोगों में से, जिनमें दुष्टात्माएँ समायी थी, वे
ऊँचे स्वर में चिल्लाती हुई बाहर निकल आयीं थी।
बहुत से लकवे के रोगी और विकलांग अच्छे हो
रहे थे। ८ उस नगर में उल्लास छाया हुआ था।

९ वहीं शमौन नाम का एक व्यक्ति हुआ करता
था। वह काफी समय से उस नगर में जादू-टोना
किया करता था। और सामरिया के लोगों को
आश्चर्य में डालता रहता था। वह महापुरुष होने
का दावा किया करता था। १० छोटे से लेकर बड़े
तक सभी लोग उसकी बात पर ध्यान देते और
कहते, "यह व्यक्ति परमेश्वर की वही शक्ति है जो
'महान शक्ति कहलाती है।'" ११ क्योंकि उसने बहुत
दिनों से उन्हें अपने चमत्कारों के चक्कर में डाल
रखा था, इसीलिए वे उस पर ध्यान दिया करते
थे। १२ किन्तु उन्होंने जब फिलिप्पुस पर विश्वास
किया क्योंकि उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य का
सुसमाचार और यीशु मसीह का नाम सुनाया था,
तो वे स्त्री और पुरुष दोनों ही बपतिस्मा लेने
लगे। १३ और स्वयं शमौन ने भी उन पर विश्वास
किया। और बपतिस्मा लेने के बाद फिलिप्पुस के
साथ वह बड़ी निकटता से रहने लगा। उन महान्
चिन्हों और किये जा रहे अद्भुत कार्यों को जब
उसने देखा, तो वह दंग रह गया।

१४ उधर यरूशलेम में प्रेरितों ने जब यह सुना
कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन को
स्वीकार कर लिया है तो उन्होंने पतरस और
यूहन्ना को उनके पास भेजा। १५ सो जब वे पहुँचे
तो उन्होंने उनके लिये प्रार्थना की कि उन्हें
पवित्र आत्मा प्राप्त हो। १६ क्योंकि अभी तक
पवित्र आत्मा किसी पर भी नहीं उतरा था, उन्हें
बस प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा ही दिया गया
१७ सो पतरस और यूहन्ना ने उन पर अपने हाथ
रखे और उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो गया।

१८ जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने
भर से पवित्र आत्मा दे दिया गया तो उनके सामने
धन प्रस्तुत करते हुए वह बोला, १९ "यह शक्ति
मुझे दे दो ताकि जिस किसी पर मैं हाथ रखूँ, उसे
पवित्र आत्मा मिल जाये।"

२० पतरस ने उससे कहा, "तेरा और तेरे धन का
सत्यानाश हो, क्योंकि तूने यह सोचा कि तू धन से
परमेश्वर के वरदान को मोल ले सकता है। २१ इस
विषय में न तेरा कोई हिस्सा है, और न कोई साझा
क्योंकि परमेश्वर के सम्मुख तेरा हृदय ठीक नहीं
है। २२ इसलिए अपनी इस दुष्टता से मन फिराव
कर और प्रभु से प्रार्थना कर। हो सकता है तेरे

मन में जो विचार था, उस विचार के लिये तू क्षमा
कर दिया जाये। २३ क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तू
कटुता से भरा है और पाप के चंगुल में फँसा है।”
२४ इस पर शमौन ने उत्तर दिया, “तुम प्रभु से
मेरे लिये प्रार्थना करो ताकि तुमने जो कुछ कहा
है, उसमें से कोई भी बात मुझ पर न घटे!”
२५ फिर प्रेरित अपनी साक्षी देकर और प्रभु
का वचन सुना कर रास्ते के बहुत से सामरी गाँवों
में सुसमाचार का उपदेश करते हुए यरूशलेम लौट
आये।

कूश से आये व्यक्ति को फिलिप्पुस का उपदेश

२६ प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस को कहते हुए
बताया, “तैयार हो, और दक्षिण दिशा में उस राह
पर जा, जो यरूशलेम से गाजा को जाती है।” (यह
एक सुनसान मार्ग है।)
२७ सो वह तैयार हुआ और चल पड़ा। वहीं
एक कूश का खोजा था। वह कूश की रानी कंदाके
का एक अधिकारी था जो उसके समुचे कोष का
कोषपाल था। वह आराधना के लिये यरूशलेम
गया था। २८ लौटते हुए वह अपने रथ में बैठा
भविष्यवक्ता यशायाह का ग्रंथ पढ़ रहा था।
२९ तभी फिलिप्पुस को आत्मा से प्रेरणा
मिली, “उस रथ के पास जा और वहीं ठहर।”
३० फिलिप्पुस जब उस रथ के पास दौड़ कर गया
तो उसने उसे यशायाह को पढ़ते सुना। सो वह
बोला, “क्या जिसे तू पढ़ रहा है, उसे समझता है?”
३१ उसने कहा, “मैं भला तब तक कैसे समझ
सकता हूँ, जब तक कोई मुझे इसकी व्याख्या नहीं
करे?” फिर उसने फिलिप्पुस को रथ पर अपने साथ
बैठने को बुलाया। ३२ शास्त्र के जिस अंश को वह
पढ़ रहा था, वह था :

“उसे वध होने वाली भेड़ के समान ले जाया जा
रहा था।
वह तो उस मेमने के समान चुप था। जो अपनी
ऊन काटने वाले के समक्ष चुप रहता है,
ठीक वैसे ही उसने अपना मुँह खोला नहीं!
३३ ऐसी दीन दशा में उसको न्याय से वंचित किया
गया।
उसकी पीढ़ी का कौन वर्णन करेगा?
क्योंकि धरती से उसका जीवन तो ले लिया था।”
*

३४ उस खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, “अनुग्रह
करके मुझे बता कि भविष्यवक्ता यह किसके बारे
में कह रहा है? अपने बारे में या किसी और के?”
३५ फिर फिलिप्पुस ने कहना शुरू किया और इस
शास्त्र से लेकर यीशु के सुसमाचार तक सब उसे
कह सुनाया।
३६ मार्ग में आगे बढ़ते हुए वे कहीं पानी के
पास पहुँचे। फिर उस खोजे ने कहा, “देख! यहाँ
जल है। अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या बाधा
है?” ३७ †३८ तब उसने रथ को रोकने की आज्ञा दी।
फिर फिलिप्पुस और वह खोजा दोनों ही पानी
में उतर गए और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा
दिया। ३९ और फिर जब वे पानी से बाहर निकले तो
फिलिप्पुस को प्रभु की आत्मा कहीं उठा ले गई,
और उस खोजे ने फिर उसे कभी नहीं देखा। उधर
खोजा आनन्द मनाता हुआ अपने मार्ग पर आगे
चला गया। ४० उधर फिलिप्पुस ने अपने आपको
अशदोद में पाया और जब तक वह कैसरिया नहीं
पहुँचा तब तक, सभी नगरों में सुसमाचार का
प्रचार करते हुए यात्रा करता रहा।

शाऊल का हृदय परिवर्तन

९ १ शाऊल अभी प्रभु के अनुयायियों को मार
डालने की धमकियाँ दिया करता था। वह
प्रमुख याजक के पास गया २ और उसने दमिश्क
के आराधनालयों के नाम माँग कर अधिकार पत्र
ले लिया जिससे उसे वहाँ यदि कोई इस पंथ का
अनुयायी मिले, फिर चाहे वह स्त्री हो, चाहे
पुरुष, तो वह उन्हें बंदी बना सके और फिर वापस
यरूशलेम ले आये।
३ सो जब चलते चलते वह दमिश्क के निकट
पहुँचा, तो अचानक उसके चारों ओर आकाश से
एक प्रकाश कौंध गया ४ और वह धरती पर जा
पड़ा। उसने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही
थी, “शाऊल, अरे ओ शाऊल! तू मुझे क्यों सता
रहा है?”
५ शाऊल ने पूछा, “प्रभु, तू कौन है?”
वह बोला, “मैं यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है। ६ पर
तू अब खड़ा हो और नगर में जा। वहाँ तुझे बता
दिया जायेगा कि तुझे क्या करना चाहिये।”
७ जो पुरुष उसके साथ यात्रा कर रहे थे, अवाक्
खड़े थे। उन्होंने आवाज़ तो सुनी किन्तु किसी को

---

*८:३३ उद्धरण यशायाह ५३:७-८

†८:३७ बाद की कुछ यूनानी प्रतियों में पद ३७ जोड़ा गया है : “फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, ‘यदि तू अपने सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करता है, तो ले सकता है।’ उसने उत्तर दिया, ‘हाँ। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।’”

भी देखा नहीं। ८ फिर शाऊल धरती पर से खड़ा
हुआ। किन्तु जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो वह
कुछ भी देख नहीं पाया। सो वे उसे हाथ पकड़ कर
दमिश्क ले गये। ९ तीन दिन तक वह न तो कुछ
देख पाया, और न ही उसने कुछ खाया या पिया।
१० दमिश्क में हनन्याह नाम का एक शिष्य था।
प्रभु ने दर्शन देकर उससे कहा, "हनन्याह।"
सो वह बोला, "प्रभु, मैं यह रहा।"
११ प्रभु ने उससे कहा, "खड़ा हो और सीधी
कहलाने वाली गली में जा। और वहाँ यहूदा के
घर में जाकर तरसुस निवासी शाऊल नाम के
एक व्यक्ति के बारे में पूछताछ कर क्योंकि वह
प्रार्थना कर रहा है। १२ उसने एक दर्शन में देखा है
कि हनन्याह नाम के एक व्यक्ति ने घर में आकर
उस पर हाथ रखे हैं ताकि वह फिर से देख सके।"
१३ हनन्याह ने उत्तर दिया, "प्रभु मैंने इस
व्यक्ति के बारे में बहुत से लोगों से सुना हूँ।
यरूशलेम में तेरे संतों के साथ इसने जो बुरी बातें
की हैं, वे सब मैंने सुनी हूँ। १४ और यहाँ भी यह
प्रमुख याजकों से तेरे नाम में सभी विश्वास रखने
वालों को बंदी बनाने का अधिकार लेकर आया
है।"
१५ किन्तु प्रभु ने उससे कहा, "तू जा क्योंकि इस
व्यक्ति को विधर्मियों, राजाओं और इस्राएल के
लोगों के सामने मेरा नाम लेने के लिये, एक साधन
के रूप में मैंने चुना है। १६ मैं स्वयं उसे वह सब कुछ
बताऊँगा, जो उसे मेरे नाम के लिए सहना होगा।"
१७ सो हनन्याह चल पड़ा और उस घर के भीतर
पहुँचा और शाऊल पर उसने अपने हाथ रख दिये
और कहा, "भाई शाऊल, प्रभु यीशु ने मुझे भेजा
है, जो तेरे मार्ग में तेरे सम्मुख प्रकट हुआ था
ताकि तू फिर से देख सके और पवित्र आत्मा से
भावित हो जाये।" १८ फिर तुरंत छिलकों जैसी
कोई वस्तु उसकी आँखों से ढलकी और उसे फिर
दिखाई देने लगा। वह खड़ा हुआ और उसने
बपतिस्मा लिया। १९ फिर थोड़ा भोजन लेने के बाद
उसने अपनी शक्ति पुनः प्राप्त कर ली।

शाऊल का दमिश्क में प्रचार कार्य

वह दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ समय
ठहरा। २० फिर वह तुरंत यहूदी आराधनालयों में
जाकर यीशु का प्रचार करने लगा। वह बोला,
"यह यीशु परमेश्वर का पुत्र है।"
२१ जिस किसी ने भी उसे सुना, चकित रह गया
और बोला, "क्या यह वही नहीं है, जो यरूशलेम
में यीशु के नाम में विश्वास रखने वालों को नष्ट
करने का यत्न किया करता था। और क्या यह
उन्हें यहाँ पकड़ने और प्रमुख याजकों के सामने
ले जाने नहीं आया था?"
२२ किन्तु शाऊल अधिक से अधिक
शक्तिशाली होता गया और दमिश्क में रहने
वाले यहूदियों को यह प्रमाणित करते हुए कि
यह यीशु ही मसीह है, पराजित करने लगा।

शाऊल का यहूदियों से बच निकलना

२३ बहुत दिन बीत जाने के बाद यहूदियों ने उसे
मार डालने का षडयन्त्र रचा। २४ किन्तु उनकी
योजनाओं का शाऊल को पता चल गया। वे नगर
द्वारों पर रात दिन घात लगाये रहते थे ताकि उसे
मार डालें। २५ किन्तु उसके शिष्य रात में उसे उठा
ले गये और टोकरी में बैठा कर नगर की चारदिवारी
से लटका कर उसे नीचे उतार दिया।

यरूशलेम में शाऊल का पहुँचना

२६ फिर जब वह यरूशलेम पहुँचा तो वह शिष्यों
के साथ मिलने का जतन करने लगा। किन्तु वे तो
सभी उससे डरते थे। उन्हें यह विश्वास नहीं था
कि वह भी एक शिष्य है। २७ किन्तु बरनाबास उसे
अपने साथ प्रेरितों के पास ले गया और उसने
उन्हें बताया कि शाऊल ने प्रभु को मार्ग में किस
प्रकार देखा और प्रभु ने उससे कैसे बातें कीं और
दमिश्क में किस प्रकार उसने निर्भयता से यीशु के
नाम का प्रचार किया।
२८ फिर शाऊल उनके साथ यरूशलेम में
स्वतन्त्रतापूर्वक आते जाते रहने लगा। वह
निर्भीकता के साथ प्रभु के नाम का प्रवचन किया
करता था। २९ वह यूनानी भाषा-भाषी यहूदियों के
साथ वाद-विवाद और चर्चाएँ करता किन्तु वे तो
उसे मार डालना चाहते थे। ३० किन्तु जब बंधुओं
को इस बात का पता चला तो वे उसे कैसरिया ले
गये और फिर उसे तरसुस पहुँचा दिया।
३१ इस प्रकार समूचे यहूदिया, गलील और
सामरिया के कलीसिया का वह समय शांति से
बीता। वह कलीसिया और अधिक शक्तिशाली
होने लगी। क्योंकि वह प्रभु से डर कर अपना
जीवन व्यतीत करती थी, और पवित्र आत्मा ने
उसे और अधिक प्रोत्साहित किया था सो उसकी
संख्या बढ़ने लगी।

पतरस लिद्दा और याफा में

३२ फिर उस समूचे क्षेत्र में घूमता फिरता
पतरस लिद्दा के संतों से मिलने पहुँचा। ३३ वहाँ

उसे अनियास नाम का एक व्यक्ति मिला जो आठ
साल से बिस्तर में पड़ा था। उसे लकवा मार गया
था। ३४ पतरस ने उससे कहा, “अनियास, यीशु
मसीह तुझे स्वस्थ करता है। खड़ा हो और अपना
बिस्तर ठीक कर।” सो वह तुरंत खड़ा हो गया।
३५ फिर लिद्दा और शारोन में रहने वाले सभी लोगों
ने उसे देखा और वे प्रभु की ओर मुड़ गये।

३६ याफा में तबीता नाम की एक शिष्या रहा
करती थी। जिसका यूनानी अनुवाद है दोरकास
अर्थात् “हिरणी।” वह सदा अच्छे अच्छे काम
करती और गरीबों को दान देती। ३७ उन्हीं दिनों
वह बीमार हुई और मर गयी। उन्होंने उसके शव
को स्नान करा के सीढ़ियों के ऊपर कमरे में रख
दिया। ३८ लिद्दा याफा के पास ही था, सो शिष्यों
ने जब यह सुना कि पतरस लिद्दा मैं है तो उन्होंने
उसके पास दो व्यक्ति भेजे कि वे उससे विनती करें,
“अनुग्रह कर के जल्दी से जल्दी हमारे पास आ
जा!”

३९ सो पतरस तैयार होकर उनके साथ चल
दिया। जब पतरस वहाँ पहुँचा तो वे उसे सीढ़ियों
के ऊपर कमरे में ले गये। वहाँ सभी विधवाएँ
विलाप करते हुए और उन कुर्तियों और दूसरे
वस्त्रों को जिन्हें दोरकास ने जब वह उनके साथ
थी, बनाया था, दिखाते हुए उसके चारों ओर खड़ी
हो गयीं। ४० पतरस ने हर किसी को बाहर भेज
दिया और घुटनों के बल झुक कर उसने प्रार्थना
की। फिर शव की ओर मुड़ते हुए उसने कहा,
“तबीता-खड़ी हो जा!” उसने अपनी आँखें खोल
दीं और पतरस को देखते हुए वह उठ बैठी। ४१ उसे
अपना हाथ देकर पतरस ने खड़ा किया और फिर
संतों और विधवाओं को बुलाकर उन्हें उसे जीवित
सौंप दिया।

४२ समूचे याफा में हर किसी को इस बात का
पता चल गया और बहुत से लोगों ने प्रभु में
विश्वास किया। ४३ फिर याफा में शमोन नाम के
एक चर्मकार के यहाँ पतरस बहुत दिनों तक ठहरा।

पतरस और कुरनेलियुस

१० १ कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक
व्यक्ति था। वह सेना के उस दल का नायक
था जिसे इतालवी कहा जाता था। २ वह परमेश्वर
से डरने वाला भक्त था और उसका परिवार भी
वैसा ही था। वह गरीब लोगों की सहायता के लिये
उदारतापूर्वक दान दिया करता था और सदा ही
परमेश्वर की प्रार्थना करता रहता था। ३ दिन के
नवें पहर के आसपास उसने एक दर्शन में स्पष्ट रूप
से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास
आया है और उससे कह रहा है, “कुरनेलियुस।”
४ सो कुरनेलियुस डरते हुए स्वर्गदूत की ओर
देखते हुए बोला, “हे प्रभु, यह क्या है?”

स्वर्गदूत ने उससे कहा, “तेरी प्रार्थनाएँ और
दीन दुखियों को दिया हुआ तेरा दान एक स्मारक के
रूप में तुझे याद दिलानेके लिए परमेश्वर के पास
पहुचें हैं। ५ सो अब कुछ व्यक्तियोंको याफा भेज
और शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो पतरस भी
कहलाता है, यहाँ बुलवा ले। ६ वह शमौन नाम के
एक चर्मकार के साथ रह रहा है। उसका घर सागर
के किनारे है।” ७ वह स्वर्गदूत जो उससे बात कर
रहा था, जब चला गया तो उसने अपने दो सेवकों
और अपने निजी सहायकों में से एक भक्त सिपाही
को बुलाया ८ और जो कुछ घटित हुआ था, उन्हें
सब कुछ बताकर याफा भेज दिया।

९ अगले दिन जब वे चलते चलते नगर के
निकट पहुँचने ही वाले थे, पतरस दोपहर के समय
प्रार्थना करने को छत पर चढ़ा। १० उसे भूख लगी,
सो वह कुछ खाना चाहता था। वे जब भोजन
तैयार कर ही रहे थे तो उसकी समाधि लग गयी।
११ और उसने देखा कि आकाश खुल गया है और
एक बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही
है। उसे चारों कोनों से पकड़ कर धरती पर उतारा
जा रहा है। १२ उस पर हर प्रकार के पशु, धरती
के रेंगने वाले जीवजंतु और आकाश के पक्षी थे।
१३ फिर एक स्वर ने उससे कहा, “पतरस उठ। मार
और खा।”

१४ पतरस ने कहा, “प्रभु, निश्चित रूप से नहीं,
क्योंकि मैंने कभी भी किसी तुच्छ या समय के
अनुसार अपवित्र आहार को नहीं लिया है।”

१५ इस पर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई
दी, “किसी भी वस्तु को जिसे परमेश्वर ने पवित्र
बनाया है, तुच्छ मत कहना!” १६ तीन बार ऐसा ही
हुआ और वह वस्तु फिर तुरंत आकाश में वापस
उठा ली गयी।

१७ पतरस ने जिस दृश्य को दर्शन में देखा था,
उस पर वह अभी चक्कर में ही पड़ा हुआ था कि
कुरनेलियुस के भेजे वे लोग दरवाजे पर खड़े पूछ
रहे थे कि शमौन का घर कहाँ है?

१८ उन्होंने बाहर बुलाते हुए पूछा, “क्या पतरस
कहलाने वाला शमौन अतिथि के रूप में यहीं
ठहरा है?”

१९ पतरस अभी उस दर्शन के बारे में सोच ही रहा
था कि आत्मा ने उससे कहा, “सुन, तीन व्यक्ति
तुझे ढूँढ रहे हैं। २० सो खड़ा हो, और नीचे उतर

बेझिझक उनके साथ चला जा, क्योंकि उन्हें मैंने
ही भेजा है।” २१ इस प्रकार पतरस नीचे उतर
आया और उन लोगों से बोला, “मैं वही हूँ, जिसे
तुम खोज रहे हो। तुम क्यों आये हो?”
२२ वे बोले, “हमें सेनानायक कुरनेलियुस ने
भेजा है। वह परमेश्वर से डरने वाला नेक पुरुष
है। यहूदी लोगों में उसका बहुत सम्मान है। उससे
पवित्र स्वर्गदूत ने तुझे अपने घर बुलाने का
निमन्त्रण देने को और जो कुछ तू कहे उसे सुनने
को कहा है।” २३ इस पर पतरस ने उन्हें भीतर बुला
लिया और ठहरने को स्थान दिया।
फिर अगले दिन तैयार होकर वह उनके साथ
चला गया। और याफा के निवासी कुछ अन्य
बन्धु भी उसके साथ हो लिये। २४ अगले ही दिन
वह कैसरिया जा पहुँचा। वहाँ अपने सम्बन्धियों
और निकट-मित्रों को बुलाकर कुरनेलियुस उनकी
प्रतीक्षा कर रहा था।
२५ पतरस जब भीतर पहुँचा तो कुरनेलियुस
से उसकी भेंट हुई। कुरनेलियुस ने उसके चरणों
पर गिरते हुए उसको दण्डवत प्रणाम किया।
२६ किन्तु उसे उठाते हुए पतरस बोला, “खड़ा हो।
मैं तो स्वयं मात्र एक मनुष्य हूँ।” २७ फिर उसके
साथ बात करते करते वह भीतर चला गया। और
वहाँ उसने बहुत से लोगों को एकत्र पाया।
२८ उसने उनसे कहा, “तुम जानते हो कि एक
यहूदी के लिये किसी दूसरी जाति के व्यक्ति के
साथ कोई सम्बन्ध रखना या उसके यहाँ जाना
विधान के विरुद्ध है किन्तु फिर भी परमेश्वर ने मुझे
दर्शाया है कि मैं किसी भी व्यक्ति को अशुद्ध या
अपवित्र न कहूँ। २९ इसीलिए मुझे जब बुलाया
गया तो मैं बिना किसी आपत्ति के आ गया।
इसलिए मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुमने मुझे किस
लिये बुलाया है।”
३० इस पर कुरनेलियुस ने कहा, “चार दिन पहले
इसी समय दिन के नवें पहर (तीन बजे) मैं अपने
घर में प्रार्थना कर रहा था। अचानक चमचमाते
वस्त्रों में एक व्यक्ति मेरे सामने आकर खड़ा
हुआ। ३१ और कहा, ‘कुरनेलियुस! तेरी विनती सुन
ली गयी है और दीन दुखियों को दिये गये तेरे दान
परमेश्वर के सामने याद किये गये हैं। ३२ इसलिए
याफा भेजकर पतरस कहलाने वाले शमौन को
बुलवा भेज। वह सागर किनारे चर्मकार शमौन के
घर ठहरा हुआ है।’ ३३ इसीलिए मैंने तुरंत तुझे
बुलवा भेजा और तूने यहाँ आने की कृपा करके
बहुत अच्छा किया। सो अब प्रभु ने जो कुछ
आदेश तुझे दिये हैं, उस सब कुछ को सुनने के लिये
हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने उपस्थित हैं।”

कुरनेलियुस के घर पतरस का प्रवचन

३४ फिर पतरस ने अपना मुँह खोला। उसने
कहा, “अब सचमुच मैं समझ गया हूँ कि परमेश्वर
कोई भेद भाव नहीं करता। ३५ बल्कि हर जाति का
कोई भी ऐसा व्यक्ति जो उससे डरता है और नेक
काम करता है, वह उसे स्वीकार करता है। ३६ यही
है वह संदेश जिसे उसने यीशु मसीह के द्वारा शांति
के सुसमाचार का उपदेश देते हुए इस्राएल के
लोगों को दिया था। वह सभी का प्रभु है।
३७ “तुम उस महान घटना को जानते हो, जो
समूचे यहूदिया में घटी थी। गलील में प्रारम्भ
होकर यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिए जाने के बाद
से जिसका प्रचार किया गया था। ३८ तुम नासरी
यीशु के विषय में जानते हो कि परमेश्वर ने पवित्र
आत्मा और शक्ति से उसका अभिषेक कैसे किया
था और उत्तम कार्य करते हुए तथा उन सब को जो
शैतान के बस में थे, चंगा करते हुए चारों ओर वह
कैसे घूमता रहा था। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ
था।
३९ “और हम उन सब बातों के साक्षी हैं जिन्हें
उसने यहूदियों के प्रदेश और यरूशलेम में किया
था। उन्होंने उसे ही एक पेड़ पर लटका कर मार
डाला। ४० किन्तु परमेश्वर ने तीसरे दिन उसे फिर
से जीवित कर दिया और उसे प्रकट होने को
प्रेरित किया। ४१ सब लोगों के सामने नहीं वरन्
बस उन साक्षियों के सामने जो परमेश्वर को द्वारा
पहले से चुन लिये गये थे। अर्थात् हमारे सामने
जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद
उसके साथ खाया और पिया।
४२ “उसी ने हमें आदेश दिया है कि हम लोगों
को उपदेश दें और प्रमाणित करें कि यह वही
है, जो परमेश्वर के द्वारा जीवितों और मरे हुओं
का न्यायकर्ता बनने को नियुक्त किया गया है।
४३ सभी भविष्यवक्ताओं ने उसके विषय में साक्षी
दी है कि उसमें विश्वास करने वाला हर व्यक्ति
उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है।”

ग़ैर यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उतरना

४४ पतरस अभी ये बातें कह ही रहा था कि
उन सब पर पवित्र आत्मा उतर आया जिन्होंने
सुसंदेश सुना था। ४५ क्योंकि पवित्र आत्मा का
वरदान ग़ैर यहूदियों पर भी उँडेला जा रहा था,
सो पतरस के साथ आये यहूदी विश्वासी आश्चर्य

में डूब गये। ४६ वे उन्हें नाना भाषाएँ बोलते
और परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुन रहे थे।
तब पतरस बोला, ४७ "क्या कोई इन लोगों को
बपतिस्मा देने के लिये, जल सुलभ कराने को मना
कर सकता है? इन्हें भी वैसे ही पवित्र आत्मा
प्राप्त हुआ हैं, जैसे हमें।" ४८ इस प्रकार उसने
यीशु मसीह के नाम में उन्हें बपतिस्मा देने की
आज्ञा दी। फिर उन्होंने पतरस से अनुरोध किया
कि वह कुछ दिन उनके साथ ठहरे।

पतरस का यरूशलेम लौटना

११ १ समूचे यहूदिया में बंधुओं और प्रेरितों ने
सुना कि प्रभु का वचन ग़ैर यहूदियों ने भी
ग्रहण कर लिया है! २ सो जब पतरस यरूशलेम
पहुँचा तो उन्होंने जो ख़तना के पक्ष में थे, उसकी
आलोचना की। ३ वे बोले, "तू ख़तना रहित लोगों
के घर में गया है और तूने उनके साथ खाना खाया
है।"

४ इस पर पतरस वास्तव में जो घटा था,
उसे सुनाने समझाने लगा, ५ "मैंने याफा नगर में
प्रार्थना करते हुए समाधि में एक दृश्य देखा। मैंने
देखा कि एक बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर
रही है, उसे चारों कोनों से पकड़ कर आकाश से
धरती पर उतारा जा रहा है। फिर वह उतर कर
मेरे पास आ गयी। ६ मैंने उसको ध्यान से देखा।
मैंने देखा कि उसमें धरती के चौपाये जीव-जंतु,
जँगली पशु रेंगने वाले जीव और आकाश के पक्षी
थे। ७ फिर मैंने एक आवाज़ सुनी, जो मुझसे कह
रही थी, 'पतरस उठ, मार और खा।'

८ "किन्तु मैंने कहा, 'प्रभु निश्चित रूप से नहीं,
क्योंकि मैंने कभी भी किसी तुच्छ या समय के
अनुसार किसी अपवित्र आहार को नहीं लिया
है।'

९ "आकाश से दूसरी बार उस स्वर ने फिर
कहा, 'जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है, उसे तू
अपवित्र मत समझ!'

१० "तीन बार ऐसा ही हुआ। फिर वह सब
आकाश में वापस उठा लिया गया। ११ उसी समय
जहाँ मैं ठहरा हुआ था, उस घर में तीन व्यक्ति आ
पहुचें। उन्हें मेरे पास कैसरिया से भेजा गया था।
१२ आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेझिझक चले जाने
को कहा। ये छह: बन्धु भी मेरे साथ गये। और
हमने उस व्यक्ति के घर में प्रवेश किया। १३ उसने
हमें बताया कि एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़े
उसने कैसे देखा था। जो कह रहा था याफा भेज
कर पतरस कहलाने वाले शमौन को बुलवा ले।
१४ वह तुझे वचन सुनायेगा जिससे तेरा और तेरे
परिवार का उद्धार होगा।

१५ "जब मैंने प्रवचन आरम्भ किया तो पवित्र
आत्मा उन पर उतर आया। ठीक वैसे ही जैसे
प्रारम्भ में हम पर उतरा था। १६ फिर मुझे प्रभु
का कहा यह वचन याद हो आया, 'यूहन्ना जल
से बपतिस्मा देता था किन्तु तुम्हें पवित्र आत्मा
से बपतिस्मा दिया जायेगा।' १७ इस प्रकार यदि
परमेश्वर ने उन्हें भी वही वरदान दिया जिसे उसने
जब हमने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया था,
तब हमें दिया था, तो विरोध करने वाला मैं कौन
होता था?"

१८ विश्वासियों ने जब यह सुना तो उन्होंने
प्रश्न करना बन्द कर दिया। वे परमेश्वर की
महिमा करते हुए कहने लगे, "अच्छा, तो
परमेश्वर ने विधर्मियों तक को मन फिराव का वह
अवसर दिया है, जो जीवन की ओर ले जाता है!"

अन्ताकिया में सुसमाचार का आगमन

१९ वे लोग जो स्तिफनुस के समय में दी जा रही
यातनाओं के कारण तितर-बितर हो गये थे, दूर-
दूर तक फीनिक, साइप्रस और अन्ताकिया तक
जा पहुँचे। ये यहूदियों को छोड़ किसी भी और को
सुसमाचार नहीं सुनाते थे। २० इन्हीं विश्वासियों
में से कुछ साइप्रस और कुरैन के थे। सो जब वे
अन्ताकिया आये तो यूनानियों को भी प्रवचन
देते हुए प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे।
२१ प्रभु की शक्ति उनके साथ थी। सो एक विशाल
जन समुदाय विश्वास धारण करके प्रभु की ओर
मुड़ गया।

२२ इसका समाचार जब यरूशलेम में कलीसिया
के कानों तक पहुँचा तो उन्होंने बरनाबास को
अन्ताकिया जाने को भेजा। २३ जब बरनाबास ने
वहाँ पहुँच कर प्रभु के अनुग्रह को सकारथ
होते देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने
उन सभी को प्रभु के प्रति भक्तिपूर्ण हृदय
से विश्वासी बने रहने को उत्साहित किया।
२४ क्योंकि वह पवित्र आत्मा और विश्वास से
पूर्ण एक उत्तम पुरुष था। फिर प्रभु के साथ एक
विशाल जनसमूह और जुड़ गया।

२५ बरनाबास शाऊल को खोजने तरसुस को
चला गया। २६ फिर वह उसे ढूँढ कर अन्ताकिया
ले आया। सारे साल वे कलीसिया से मिलते
जुलते और विशाल जनसमूह को उपदेश देते
रहे। अन्ताकिया में सबसे पहले इन्हीं शिष्यों को
"मसीही" कहा गया।

२७ इसी समय यरूशलेम से कुछ नबी
अन्ताकिया आये। २८ उनमें से अगबुस नाम के
एक भविष्यवक्ता ने खड़े होकर पवित्र आत्मा
के द्वारा यह भविष्यवाणी की सारी दुनिया में एक
भयानक अकाल पड़ने वाला है (क्लोदियुस के
काल में यह अकाल पड़ा था।) २९ तब हर शिष्य
ने अपनी शक्ति के अनुसार यहूदिया में रहने
वाले बन्धुओं की सहायता के लिये कुछ भेजने
का निश्चय किया था। ३० सो उन्होंने ऐसा ही
किया और उन्होंने बरनाबास और शाऊल के
हाथों अपने बुजुर्गों के पास अपने उपहार भेजे।

हेरोदेस का कलीसिया पर अत्याचार

१२ १ उसी समय के आसपास राजा हेरोदेस
*ने कलीसिया के कुछ सदस्यों को सताना
प्रारम्भ कर दिया। २ उसने यूहन्ना के भाई याकूब
की तलवार से हत्या करवा दी। ३ उसने जब यह
देखा कि इस बात से यहूदी प्रसन्न होते हैं तो
उसने पतरस को भी बंदी बनाने के लिये हाथ
बढ़ाया (यह बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव के
दिनों की बात है) ४ हेरोदेस ने पतरस को पकड़
कर जेल में डाल दिया। उसे चार चार सैनिकों
की चार पंक्तियों के पहरे के हवाले कर दिया
गया। प्रयोजन यह था कि उस पर मुकदमा चलाने
के लिये फसह पर्व के बाद उसे लोगों के सामने
बाहर लाया जाये। ५ सो पतरस को जेल में रोके
रखा गया। उधर कलीसिया ह्रदय से उसके लिये
परमेश्वर से प्रार्थना करती रही।

जेल से पतरस का छुटकारा

६ जब हेरोदेस मुकदमा चलाने के लिये उसे
बाहर लाने को था, उस रात पतरस दो सैनिकों के
बीच सोया हुआ था। वह दो ज़ंजीरों से बँधा था
और द्वार पर पहरेदार जेल की रखवाली कर रहे
थे। ७ अचानक प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ आकर
खड़ा हुआ, जेल की कोठरी प्रकाश से जगमग हो
उठी, उसने पतरस की बगल थपथपाई और उसे
जगाते हुए कहा, “जल्दी खड़ा हो।” जंजीरें उसके
हाथों से खुल कर गिर पड़ी। ८ तभी स्वर्गदूत ने
उसे आदेश दिया, “तैयार हो और अपनी चप्पल
पहन ले।” सो पतरस ने वैसा ही किया। स्वर्गदूत
ने उससे फिर कहा, “अपना चोगा पहन ले और मेरे
पीछे चला आ।”

९ फिर उसके पीछे-पीछे पतरस बाहर निकल
आया। वह समझ नहीं पाया कि स्वर्गदूत जो कुछ
कर रहा था, वह यथार्थ था। उसने सोचा कि वह
कोई दर्शन देख रहा है। १० पहले और दूसरे पहरेदार
को छोड़ कर आगे बढ़ते हुए वे लोहे के उस फाटक
पर आ पहुँचे जो नगर की ओर जाता था। वह उनके
लिये आप से आप खुल गया। और वे बाहर निकल
गये। वे अभी गली पार ही गये थे कि वह स्वर्गदूत
अचानक उसे छोड़ गया।

११ फिर पतरस को जैसे होश आया, वह बोला,
“अब मेरी समझ में आया कि यह वास्तव में सच
है कि प्रभु ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर हेरोदेस
के पंजे से मुझे छुड़ाया है। यहूदी लोग मुझ पर
जो कुछ घटने की सोच रहे थे, उससे उसी ने मुझे
बचाया है।”

१२ जब उसने यह समझ लिया तो वह यूहन्ना
की माता मरियम के घर चला गया। यूहन्ना जो
मरकुस भी कहलाता है। वहाँ बहुत से लोग एक
साथ प्रार्थना कर रहे थे। १३ पतरस ने द्वार को
बाहर से खटखटाया। उसे देखने रूदे नाम की एक
दासी वहाँ आयी। १४ पतरस की अवाज़ को पहचान
कर आनन्द के मारे उसके लिये द्वार खोले बिना
ही वह उल्टी भीतर दौड़ गयी और उसने बताया
कि पतरस द्वार पर खड़ा है। १५ वे उससे बोले, “तू
पागल हो गयी है।” किन्तु वह बलपूर्वक कहती
रही कि यह ऐसा ही है। इस पर उन्होंने कहा, “वह
उसका स्वर्गदूत होगा।”

१६ उधर पतरस द्वार खटखटाता ही रहा। फिर
उन्होंने जब द्वार खोला और उसे देखा तो वे
अचरज में पड़ गये। १७ उन्हें हाथ से चुप रहने का
संकेत करते हुए उसने खोलकर बताया कि प्रभु
ने उसे जेल से कैसे बाहर निकाला है। उसने कहा,
“याकूब तथा अन्य बन्धुओं को इस विषय में बता
देना।” और तब वह उस स्थान को छोड़कर किसी
दूसरे स्थान को चला गया।

१८ जब भोर हुई तो पहरेदारों में बड़ी खलबली
फैल गयी। वे अचरज में पड़े सोच रहे थे कि पतरस
के साथ क्या हुआ होगा। १९ इसके बाद हेरोदेस
जब उसकी खोज बीन कर चुका और वह उसे नहीं
मिला तो उसने पहरेदारों से पूछताछ की और उन्हें
मार डालने की आज्ञा दी।

*१२:१ हेरोदेस यहाँ हेरोदेस से अभिप्राय है हेरोदेस प्रथम जो हेरोदेस महान का पोता था।

हेरोदेस की मृत्यु

हेरोदेस फिर यहूदिया से जा कर कैसरिया में
रहने लगा। वहाँ उसने कुछ समय बिताया। २० वह
सूर और सैदा के लोगों से बहुत क्रोधित रहता
था। वे एक समूह बनाकर उससे मिलने आये। राजा
के निजी सेवक बलासतुस को मनाकर उन्होंने
हेरोदेस से शांति की प्रार्थना की क्योंकि उनके
देश को राजा के देश से ही खाने को मिलता था।
२१ एक निश्चित दिन हेरोदेस अपनी राजसी
वेश-भूषा पहन कर अपने सिंहासन पर बैठा और
लोगों को भाषण देने लगा। २२ लोग चिल्लाये,
"यह तो किसी देवता की वाणी है, मनुष्य की
नहीं।" २३ क्योंकि हेरोदेस ने परमेश्वर को महिमा
प्रदान नहीं की थी, इसलिए तत्काल प्रभु के एक
स्वर्गदूत ने उसे बीमार कर दिया। और उसमें कीड़े
पड़ गये जो उसे खाने लगे और वह मर गया।
२४ किन्तु परमेश्वर का वचन प्रचार पाता रहा
और फैलाता रहा।
२५ बरनाबास और शाऊल यरूशलेम में अपना
काम पूरा करके मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को
भी साथ लेकर अन्ताकिया लौट आये।

बरनाबास और शाऊल का चुना जाना

१३ १ अन्ताकिया के कलीसिया में कुछ नबी
और बरनाबास, काला कहलाने वाला
शमौन, कुरेन का लूकियुस, देश के चौथाई भाग के
राजा हेरोदेस के साथ पलितपोषित मनाहेम और
शाऊल जैसे कुछ शिक्षक थे। २ वे जब उपवास
करते हुए प्रभु की उपासना में लगे हुए थे, तभी
पवित्र आत्मा ने कहा, "बरनाबास और शाऊल
को जिस काम के लिये मैंने बुलाया है, उसे करने के
लिये मेरे निमित्त, उन्हें अलग कर दो।"
३ सो जब शिक्षक और नबी अपना उपवास और
प्रार्थना पूरी कर चुके तो उन्होंने बरनाबास और
शाऊल पर अपने हाथ रखे और उन्हें विदा कर
दिया।

बरनाबास और शाऊल की साइप्रस यात्रा

४ पवित्र आत्मा के द्वारा भेजे हुए वे सिलुकिया
गये जहाँ से जहाज़ में बैठ कर वे साइप्रस पहुँचें।
५ फिर जब वे सलमीस पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों
के आराधनालयों में परमेश्वर के वचन का प्रचार
किया। यूहन्ना सहायक के रूप में उनके साथ था।
६ उस समूचे द्वीप की यात्रा करते हुए वे पाफुस
तक जा पहुँचे। वहाँ उन्हें एक जादूगर मिला,
वह झूठा नबी था। उस यहूदी का नाम था बार-
यीशु। ७ वह एक अत्यंत बुद्धिमान पुरुष था। वह
राज्यपाल सिरगियुस पौलुस का सेवक था जिसने
परमेश्वर का वचन फिर सुनने के लिये बरनाबास
और शाऊल को बुलाया था। ८ किन्तु इलीमास
जादूगर ने उनका विरोध किया। (यह बार-यीशु का
अनुवादित नाम है।) उसने नगर-पति के विश्वास
को डिगाने का जतन किया। ९ फिर शाऊल ने
(जिसे पौलुस भी कहा जाता था,) पवित्र आत्मा
से अभिभूत होकर इलीमास पर पैनी दृष्टि डालते
हुए कहा, १० "सभी प्रकार के छलों और धूर्तताओं
से भरे, और शैतान के बेटे, तू हर नेकी का शत्रु
है। क्या तू प्रभु के सीधे-सच्चे मार्ग को तोड़ना
मरोड़ना नहीं छोड़ेगा? ११ अब देख प्रभु का हाथ
तुझ पर आ पड़ा है। तू अंधा हो जायेगा और कुछ
समय के लिये सूर्य तक को नहीं देख पायेगा।"
तुरन्त एक धुंध और अँधेरा उस पर छा गया
और वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका
हाथ पकड़ कर उसे चलाये। १२ सो नगर-पति ने,
जो कुछ घटा था, जब उसे देखा तो उसने विश्वास
धारण किया। वह प्रभु सम्बन्धी उपदेशों से बहुत
चकित हुआ।

पौलुस और बरनाबास का साइप्रस से प्रस्थान

१३ फिर पौलुस और उसके साथी पाफुस से
नाव के द्वारा पम्फूलिया के पिरगा में आ गये।
किन्तु यूहन्ना उन्हें वहीं छोड़ कर यरूशलेम लौट
आया। १४ उधर वे अपनी यात्रा पर बढ़ते हुए
पिरगा से पिसिदिया के अन्ताकिया में आ पहुँचे।
फिर सब्त के दिन यहूदी आराधनालय में जा
कर बैठ गये। १५ व्यवस्था के विधान और नबियों के
ग्रन्थों का पाठ कर चुकने के बाद यहूदी प्रार्थना
सभागार के अधिकारियों ने उनके पास यह संदेश
कहला भेजा, "हे भाईयों, लोगों को शिक्षा देने के
लिये तुम्हारे पास कहने को कोई और वचन है तो
उसे सुनाओ।"
१६ इस पर पौलुस खड़ा हुआ और अपने हाथ
हिलाते हुए बोलने लगा, "हे इस्राएल के लोगों
और परमेश्वर से डरने वाले ग़ैर यहूदियों सुनो :
१७ इन इस्राएल के लोगों के परमेश्वर ने हमारे
पूर्वजों को चुना था और जब हमारे लोग मिसरमें
ठहरे हुए थे, उसने उन्हें महान् बनाया था और
अपनी महान शक्ति से ही वह उनको उस धरती से
बाहर निकाल लाया था। १८ और लगभग चालीस
वर्ष तक वह जंगल में उनकी साथ रहा। १९ और
कनान देश की सात जातियों को नष्ट करके उसने

वह धरती इस्राएल के लोगों को उत्तराधिकार के
रूप में दे दी। २० इस सब कुछ में कोई लगभग साढ़े
चार सौ वर्ष लगे।

"इसके बाद शमूएल नबी के समय तक उसने
उन्हें अनेक न्यायकर्ता दिये। २१ फिर उन्होंने एक
राजा की माँग की, सो परमेश्वर ने बिन्यामीन
के गोत्र के एक व्यक्ति कीश के बेटे शाऊल
को चालीस साल के लिये उन्हें दे दिया। २२ फिर
शाऊल को हटा कर उसने उनका राजा दाऊद को
बनाया जिसके विषय में उसने यह साक्षी दी थी,
'मैंने यिशे के बेटे दाऊद को एक ऐसे व्यक्ति के
रूप में पाया है, जो मेरे मन के अनुकूल है। जो
कुछ मैं उससे कराना चाहता हूँ, वह उस सब कुछ
को करेगा।'

२३ "इस ही मनुष्य के एक वंशज को अपनी
प्रतिज्ञा के अनुसार परमेश्वर इस्राएल में
उद्धारकर्ता यीशु के रूप में ला चुका है। २४ उसके
आने से पहले यूहन्ना इस्राएल के सभी लोगों में
मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता रहा है।
२५ यूहन्ना जब अपने काम को पूरा करने को था,
तो उसने कहा था, 'तुम मुझे जो समझते हो, मैं वह
नहीं हूँ। किन्तु एक ऐसा है जो मेरे बाद आ रहा है।
मैं जिसकी जूतियों के बन्ध खोलने के लायक भी
नहीं हूँ।'

२६ "भाईयों, इब्राहीम की सन्तानो और
परमेश्वर के उपासक ग़ैर यहूदियो! उद्धार का
यह सुसंदेश हमारे लिए ही भेजा गया है।
२७ यरूशलेम में रहने वालों और उनके शासकों
ने यीशु को नहीं पहचाना। और उसे दोषी ठहरा
दिया। इस तरह उन्होंने नबियों के उन वचनों को
ही पूरा किया जिनका हर सब्त के दिन पाठ किया
जाता है। २८ और यद्यपि उन्हें उसे मृत्यु दण्ड
देने का कोई आधार नहीं मिला, तो भी उन्होंने
पिलातुस से उसे मरवा डालने की माँग की।

२९ "उसके विषय में जो कुछ लिखा था, जब वे
उस सब कुछ को पूरा कर चुके तो उन्होंने उसे
क्रूस पर से नीचे उतार लिया और एक कब्र में
रख दिया। ३० किन्तु परमेश्वर ने उसे मरने के बाद
फिर से जीवित कर दिया। ३१ और फिर जो लोग
गलील से यरूशलेम तक उसके साथ रहे थे वह
उनके सामने कई दिनों तक प्रकट होता रहा। ये
अब लोगों के लिये उसकी साक्षी हैं।

३२ "हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में
सुसमाचार सुना रहे हैं जो हमारे पूर्वजों के साथ की
गयी थी। ३३ यीशु को मर जाने के बाद पुनर्जीवित
करके, उनकी संतानों के लिये परमेश्वर ने उसी
प्रतिज्ञा को हमारे लिए पूरा किया है। जैसा कि
भजन संहिता के दूसरे भजन में लिखा भी गया है :
'तू मेरा पुत्र है,
मैं ने तुझे आज ही जन्म दिया है।' *
३४ और उसने उसे मरे हुओं में से जिला कर उठाया
ताकि क्षय होने के लिये उसे फिर लौटाना न पड़े।
उसने इस प्रकार कहा था :
'मैं तुझे वे पवित्र और अटल आशीश दूँगा जिन्हें
देने का वचन मैंने दाऊद को दिया था।' †
३५ इसी प्रकार एक अन्य भजन संहिता में वह
कहता है :
'तू अपने उस पवित्र जन को क्षय का अनुभव नहीं
होने देगा।' ‡
३६ फिर दाऊद अपने युग में परमेश्वर के प्रयोजन
के अनुसार अपना सेवा-कार्य पूरा करके चिर-
निद्रा में सो गया। उसे उसके पूर्वजों के साथ
दफना दिया गया और उसका क्षय हुआ। ३७ किन्तु
जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं के बीच से जिला
कर उठाया उसका क्षय नहीं हुआ। ३८–३९ सो हे
भाईयों, तुम्हें जान लेना चाहिये कि यीशु के द्वारा
ही पापों की क्षमा का उपदेश तुम्हें दिया गया
है। और इसी के द्वारा हर कोई जो विश्वासी है,
उन पापों से छुटकारा पा सकता है, जिनसे तुम्हें
मूसा की व्यवस्था छुटकारा नही दिला सकती थी।
४० सो सावधान रहो, कहीं नबियों ने जो कुछ कहा
है, तुम पर न घट जाये :
४१ 'निन्दा करने वालो, देखो,
भोचक्के हो कर मर जाओ;
क्योंकि तुम्हारे युग में
एक कार्य ऐसा करता हूँ,
जिसकी चर्चा तक पर तुमको कभी परतीति नहीं
होने की।'" ¶

४२ पौलुस और बरनाबास जब वहाँ से जा रहे थे
तो लोगों ने उनसे अगले सब्त के दिन ऐसी ही और
बातें बताने की प्रार्थना की। ४३ जब सभा समाप्त

---

*१३ :३३ उद्धरण भजन संहिता २ :७
†१३ :३४ उद्धरण यशायाह ५५ :३
‡१३ :३५ उद्धरण भजन संहिता १६ :१०
¶१३ :४१ उद्धरण हबक्कूक १ :५

हुई तो बहुत से यहूदियों और ग़ैर यहूदी भक्तों ने
पौलुस और बरनाबास का अनुसरण किया। पौलुस
और बरनाबास ने उनसे बातचीत करते हुए आग्रह
किया कि वे परमेश्वर के अनुग्रह में स्थिति बनाये
रखें।
४४ अगले सब्त के दिन तो लगभग समूचा
नगर ही प्रभु का वचन सुनने के लिये उमड़
पड़ा। ४५ इस विशाल जनसमूह को जब यहूदियों
ने देखा तो वे बहुत क्रुद्ध गये और अपशब्दों का
प्रयोग करते हुए पौलुस ने जो कुछ कहा था,
उसका विरोध करने लगे। ४६ किन्तु पौलुस और
बरनाबास ने निडर होकर कहा, "यह आवश्यक था
कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता
किन्तु क्योंकि तुम उसे नकारते हो तथा तुम अपने
आपको अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते, सो
हम अब गैर यहूदियों की ओर मुड़ते हैं। ४७ क्योंकि
प्रभु ने हमें ऐसी आज्ञा दी है :
'मैंने तुमको ग़ैर यहूदियों के लिये ज्योति बनाया,
ताकि धरती के छोरों तक सभी के उद्धार का
माध्यम हो।'" *
४८ ग़ैर यहूदियों ने जब यह सुना तो वे बहुत
प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रभु के वचन का
सम्मान किया। फिर उन्होंने जिन्हें अनन्त जीवन
पाने के लिये निश्चित किया था, विश्वास ग्रहण
कर लिया।
४९ इस प्रकार उस समूचे क्षेत्र में प्रभु के
वचन का प्रसार होता रहा। ५० उधर यहूदियों
ने उच्च कुल की भक्त महिलाओं और नगर के
प्रमुख व्यक्तियों को भड़काया तथा पौलुस और
बरनाबास के विरुद्ध अत्याचार करने आरम्भ कर
दिये और दबाव डाल कर उन्हें अपने क्षेत्र से बाहर
निकलवा दिया। ५१ फिर पौलुस और बरनाबास
उनके विरोध में अपने पैरों की धूल झाड़ कर
इकुनियुम को चल दिये। ५२ किन्तु उनके शिष्य
आनन्द और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

इकुनियुम में पौलुस और बरनाबास

१४ १ इसी प्रकार पौलुस और बरनाबास
इकुनियुम में यहूदी आराधनालय में गये।
वहाँ उन्होंने इस ढंग से व्याख्यान दिया कि
यहूदियों के एक विशाल जनसमूह ने विश्वास
धारण किया। २ किन्तु उन यहूदियों ने जो विश्वास
नहीं कर सके थे, ग़ैर यहूदियों को भड़काया और
बन्धुओं के विरूद्ध उनके मनों में कटुता पैदा कर
दी।
३ सो पौलुस और बरनाबास वहाँ बहुत दिनों
तक ठहरे रहे तथा प्रभु के विषय में निर्भयता से
प्रवचन करते रहे। उनके द्वारा प्रभु अद्भुत चिन्ह
और आश्चर्यकर्मों को करवाता हुआ अपने दया के
संदेश की प्रतिष्ठा कराता रहा। ४ उधर नगर के
लोगों में फूट पड़ गयी। कुछ प्रेरितों की तरफ़
और कुछ यहूदियों की तरफ़ हो गये।
५ फिर जब ग़ैर यहूदियों और यहूदियों ने अपने
नेताओं के साथ मिलकर उनके साथ बुरा व्यवहार
करने और उन पर पथराव करने की चाल चली।
६ जब पौलुस और बरनाबास को इसका पता चल
गया और वे लुकाउनिया के लिस्तरा और दिरबे
जैसे नगरों तथा आसपास के क्षेत्र में बच भागे।
७ वहाँ भी वे सुसमाचार का प्रचार करते रहे।

लिस्तरा और दिरबे में पौलुस

८ लिस्तरा में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वह
अपने पैरों से अपंग था। वह जन्म से ही लँगड़ा
था, चल फिर तो वह कभी नहीं पाया। ९ इस
व्यक्ति ने पौलुस को बोलते हुए सुना था। पौलुस
ने उस पर दृष्टि गड़ाई और देखा कि अच्छा हो
जाने का विश्वास उसमें है। १० सो पौलुस ने ऊँचे
स्वर में कहा, "अपने पैरों पर सीधा खाड़ा हो जा!"
सो वह ऊपर उछला और चलने-फिरने लगा।
११ पौलुस ने जो कुछ किया था, जब भीड़ ने
उसे देखा तो लोग लुकाउनिया की भाषा में पुकार
कर कहने लगे, "हमारे बीच मनुष्यों का रूप धारण
करके, देवता उतर आये है!" १२ वे बरनाबास को
"ज़ेअस" †और पौलुस को "हिरमेस" ‡कहने लगे।
पौलुस को हिरमेस इसलिये कहा गया क्योंकि
वह प्रमुख वक्ता था। १३ नगर के ठीक बाहर बने
ज़ेअस के मन्दिर का याजक नगर द्वार पर साँड़ों
और मालाओं को लेकर आ पहुँचा। वह भीड़ के
साथ पौलुस और बरनाबास के लिये बलि चढ़ाना
चाहता था।

---

*१३ :४७ उद्धरण यशायाह ४९ :६
†१४ :१२ ज़ेअस यूनानी बहुदेववादी है। ज़ेअस उनका एक अत्यन्त महत्वपूर्ण देवता था।
‡१४ :१२ हिरमेस एक और दूसरा यूनानी देवता। यूनानियों के विश्वास के अनुसार हिरमेस दूसरे देवताओं का संदेशवाहक।

१४ किन्तु जब प्रेरित बरनाबास और पौलुस ने
यह सुना तो उन्होंने अपने कपड़े फाड़ डाले *और
वे ऊँचे स्वर में यह कहते हुए भीड़ में घुस गये,
१५ "हे लोगो, तुम यह क्यों कर रहे हो? हम भी
वैसे ही मनुष्य हैं, जैसे तुम हो। यहाँ हम तुम्हें
सुसमाचार सुनाने आये हैं ताकि तुम इन व्यर्थ की
बातों से मुड़ कर उस सजीव परमेश्वर की ओर
लौटो जिसने आकाश, धरती, सागर और इनमें जो
कुछ है, उसकी रचना की।
१६ "बीते काल में उसने सभी जातियों को उनकी
अपनी-अपनी राहों पर चलने दिया। १७ किन्तु
तुम्हें उसने स्वयं अपनी साक्षी दिये बिना नहीं
छोड़ा। क्योंकि उसने तुम्हारे साथ भलाइयाँ की।
उसने तुम्हें आकाश से वर्षा दी और ऋतु के
अनुसार फसलें दी। वही तुम्हें भोजन देता है और
तुम्हारे मन को आनन्द से भर देता है।"
१८ इन वचनों के बाद भी वे भीड़ को उनके लिये
बलि चढ़ाने से प्राय: नहीं रोक पाये।
१९ फिर अन्ताकिया और इकुनियुम से आये
यहूदियों ने भीड़ को अपने पक्ष में करके पौलुस पर
पथराव किया और उसे मरा जान कर नगर के बाहर
घसीट ले गये। २० फिर जब शिष्य उसके चारों ओर
इकट्ठे हुए, तो वह उठा और नगर में चला आया
और फिर अगले दिन बरनाबास के साथ वह दिरबे
के लिए चल पड़ा।

सीरिया के अन्ताकिया को लौटना

२१-२२ उस नगर में उन्होंने सुसमाचार का प्रचार
करके बहुत से शिष्य बनाये। और उनकी आत्माओं
को स्थिर करके विश्वास में बने रहने के लिये उन्हें
यह कह कर प्रेरित किया "हमें बड़ी यातनाएँ झेल
कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है," वे
लिस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया लौट आये।
२३ हर कलीसिया में उन्होंने उन्हें उस प्रभु को
सौंप दिया जिसमें उन्होंने विश्वास किया था।
२४ इसके पश्चात पिसिदिया से होते हुए वे
पम्फूलिया आ पहुँचे। २५ और पिरगा में जब
सुसमाचार सुना चुके तो इटली चले गये। २६ वहाँ
से वे अन्ताकिया को जहाज़ द्वारा गये जहाँ जिस
काम को अभी उन्होंने पूरा किया था, उस काम के
लिये वे परमेश्वर के अनुग्रह को समर्पित हो गये।
२७ सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने कलीसिया के
लोगों को इकट्ठा किया और परमेश्वर ने उनके
साथ जो कुछ किया था, उसका विवरण कह
सुनाया। और उन्होंने घोषणा की कि परमेश्वर ने
विधर्मियों के लिये भी विश्वास का द्वार खोल दिया
है। २८ फिर अनुयायियों के साथ वे बहुत दिनों तक
वहाँ ठहरे रहे।

यरूशलेम में एक सभा

१५ १ फिर कुछ लोग यहूदिया से आये और
भाइयों को शिक्षा देने लगे: "यदि मूसा
की विधि के अनुसार तुम्हारा ख़तना नहीं हुआ
है तो तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता।" २ पौलुस
और बरनाबास उनसे सहमत नहीं थे, सो उनमें एक
बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। सो पौलुस बरनाबास
तथा उनके कुछ और साथियों को इस समस्या के
समाधान के लिये प्रेरितों और मुखियाओं के पास
यरूशलेम भेजने का निश्चय किया गया।
३ वे कलीसिया के द्वारा भेजे जाकर फीनीके और
सामरिया होते हुए सभी भाइयों को अधर्मियों
के हृदय परिवर्तन का विस्तार के साथ समाचार
सुनाकर उन्हें हर्षित कर रहे थे। ४ फिर जब वे
यरूशलेम पहुँचे तो कलीसिया ने, प्रेरितों ने
और बुजुर्गों ने उनका स्वागत सत्कार किया। और
उन्होंने उनके साथ परमेश्वर ने जो कुछ किया
था, वह सब कुछ उन्हें कह सुनाया। ५ इस पर
फरीसियों के दल के कुछ विश्वासी खड़े हुए और
बोले, "उनका ख़तना अवश्य किया जाना चाहिये
और उन्हें आदेश दिया जाना चाहिए कि वे मूसा
की व्यवस्था के विधान का पालन करें।"
६ सो इस प्रश्न पर विचार करने के लिये प्रेरित
तथा बुजुर्ग लोग परस्पर एकत्र हुए। ७ एक लम्बे
चौड़े वाद-विवाद के बाद पतरस खड़ा हुआ और
उनसे बोला, "भाइयो! तुम जानते हो कि बहुत
दिनों पहले तुममें से प्रभु ने एक चुनाव किया था
कि मेरे द्वारा अधर्मी लोग सुसमाचार का संदेश
सुनेंगे और विश्वास करेंगे। ८ और अन्तर्यामी
परमेश्वर ने हमारे ही समान उन्हें भी पवित्र
आत्मा का वरदान देकर, उनके सम्बन्ध में अपना
समर्थन दर्शाया था। ९ विश्वास के द्वारा उनके
हृदयों को पवित्र करके हमारे और उनके बीच
उसने कोई भेद भाव नहीं किया। १० सो अब शिष्यों
की गर्दन पर एक ऐसा जुआ लाद कर जिसे न हम
उठा सकते हैं और न हमारे पूर्वज, तुम परमेश्वर
को झमेले में क्यों डालते हो? ११ किन्तु हमारा तो

*१४:१४ अपने ... डाले लोगों के इस आचरण पर पौलुस और बरनाबास ने क्रोध व्यक्त करने के लिये अपने कपड़े फाड़ डाले।

यह विश्वास है कि प्रभु यीशु के अनुग्रह से जैसे
हमारा उद्धार हुआ है, वैसे ही हमें भरोसा है कि
उनका भी उद्धार होगा।”
१२ इस पर समूचा दल चुप हो गया और
बरनाबास तथा पौलुस को सुनने लगा। वे, ग़ैर
यहूदियों के बीच परमेश्वर ने उनके द्वारा दो
अद्भुत चिन्ह प्रकट किए और आश्चर्य कर्म
किये थे, उनका विवरण दे रहे थे। १३ वे जब बोल
चुके तो याकूब कहने लगा, “हे भाइयो, मेरी
सुनो। १४ शमौन ने बताया था कि परमेश्वर ने ग़ैर
यहूदियों में से कुछ लोगों को अपने नाम के लिये
चुनकर सर्वप्रथम कैसे प्रेम प्रकट किया था।
१५ नबियों के वचन भी इसका समर्थन करते हैं।
जैसा कि लिखा गया है :

१६ ‘मैं इसके बाद आऊँगा।
फिर से मैं खड़ा करूँगा
दाऊद के उस घर को जो गिर चुका।
फिर से सँवारूँगा
उसके खण्डहरों को जीर्णोद्धार करूँगा।
१७ ताकि जो बचे हैं वे ग़ैर यहूदी
सभी जो अब
मेरे कहलाते हैं,
प्रभु की खोज करें।’ *
१८ ‘यह बात वही प्रभु कहता है जो युगयुग से इन
बातों को प्रकट करता रहा है।’

१९ “इस प्रकार मेरा यह निर्णय है कि हमें उन
लोगों को, जो गैर यहूदी होते हुए भी परमेश्वर की
ओर मुड़े हैं, सताना नहीं चाहिये। २० बल्कि हमें तो
उनके पास लिख भेजना चाहिये कि:

मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन तुम्हें नहीं लेना
चाहिये।
और व्यभिचार से वचे रहे।
गला घोंट कर मारे गये किसी भी पशु का माँस खाने
से बचें और लहू को कभी न खायें।

२१ अनादि काल से मूसा की व्यवस्था के विधान
का पाठ करने वाले नगर-नगर में पाए जाते रहे
हैं। हर सब्त के दिन मूसा की व्यवस्था के विधान
का आराधनालयों में पाठ होता रहा है।”

ग़ैर यहूदी विश्वासियों के नाम पत्र

२२ फिर प्रेरितों और बुजुर्गों ने समूचे कलीसिया
के साथ यह निश्चय किया कि उन्हीं में से कुछ
लोगों को चुनकर पौलुस और बरनाबास के साथ
अन्ताकिया भेजा जाये। सो उन्होंने बरसब्बा कहे
जाने वाले यहूदा और सिलास को चुन लिया। वे
भाइयों में सर्व प्रमुख थे। २३ उन्होंने उनके हाथों
यह पत्र भेजा :

तुम्हारे बंधु, बुजुर्गों और प्रेरितों की ओर से
अन्ताकिया, सीरिया और किलिकिया के गैर
यहूदी भाईयों को नमस्कार पहुँचे।
प्यारे भाईयों:
२४ हमने जब से यह सुना है कि हमसे
कोई आदेश पाये बिना ही, हममें से कुछ
लोगों ने जाकर अपने शब्दों से तुम्हें दु:ख
पहुँचाया है, और तुम्हारे मन को अस्थिर कर
दिया है २५ हम सबने परस्पर सहमत होकर
यह निश्चय किया है कि हम अपने में से
कुछ लोग चुनें और अपने प्रिय बरनाबास
और पौलुस के साथ उन्हें तुम्हारे पास भेजें।
२६ ये वे ही लोग हैं जिन्होंने हमारे प्रभु
यीशु मसीह के नाम के लिये अपने प्राणों
की बाज़ी लगा दी थी। २७ हम यहूदा और
सिलास को भेज रहे हैं। वे तुम्हें अपने मुँह
से इन सब बातों को बताएँगे। २८ पवित्र
आत्मा को और हमें यही उचित जान पड़ा
कि तुम पर इन आवश्यक बातों के अतिरिक्त
और किसी बात का बोझ न डाला जाये :

२९ मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन तुम्हें नहीं लेना
चाहिये।
गला घोंट कर मारे गये किसी भी पशु का मांस खाने
से बचें और लहू को कभी न खायें।
व्यभिचार से बचे रहो।

यदि तुम ने अपने आपको इन बातों से बचाये
रखा तो तुम्हारा कल्याण होगा।
अच्छा विदा।

३० इस प्रकार उन्हें विदा कर दिया गया और
वे अंताकिया जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने धर्म-सभा
बुलाई और उन्हें वह पत्र दे दिया। ३१ पत्र पढ़
कर जो प्रोत्साहन उन्हें मिला, उस पर उन्होंने
आनन्द मनाया। ३२ यहूदा और सिलास ने, जो
स्वयं ही दोनों नबी थे, भाईयों के सामने उन्हें
उत्साहित करते हुए और दृढ़ता प्रदान करते हुए,
एक लम्बा प्रवचन किया। ३३ वहाँ कुछ समय
बिताने के बाद, भाईयों ने उन्हें शांतिपूर्वक उन्हीं

*१५:१७ उद्धरण आमोस ९:११-१२

के पास लौट जाने को विदा किया जिन्होंने उन्हें भेजा था। ३४ *

३५ पौलुस तथा बरनाबास ने अन्ताकिया में कुछ समय बिताया। बहुत से दूसरे लोगों के साथ उन्होंने प्रभु के वचन का उपदेश देते हुए लोगों में सुसमाचार का प्रचार किया।

पौलुस और बरनाबास का अलग होना

३६ कुछ दिनों बाद बरनाबास से पौलुस ने कहा, "आओ, जिन-जिन नगरों में हमनें प्रभु के वचन का प्रचार किया है, वहाँ अपने भाइयों के पास वापस चल कर यह देखें कि वे क्या कुछ कर रहे हैं।"

३७ बरनाबास चाहता था कि मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी वे अपने साथ ले चलें। ३८ किन्तु पौलुस ने यही ठीक समझा कि वे उसे अपने साथ न लें जिसने पम्फूलिया में उनका साथ छोड़ दिया था और (प्रभु के) कार्य में जिसने उनका साथ नहीं निभाया। ३९ इस पर उन दोनों में तीव्र विरोध पैदा हो गया। परिणाम यह हुआ कि वे आपस में एक दूसरे से अलग हो गये। बरनाबास मरकुस को लेकर पानी के जहाज़ से साइप्रस चला गया।

४० पौलुस सिलास को चुनकर वहाँ से चला गया और भाइयों ने उसे प्रभु के संरक्षण में सौंप दिया। ४१ सो पौलुस सीरिया और किलिकिया की यात्रा करते हुए वहाँ की कलीसिया को सुदृढ़ करता रहा।

तिमुथियुस का पौलुस और सिलास के साथ जाना

१६ १ पौलुस दिरबे और लुस्तरा में भी आया। वहीं तिमुथियुस नामक एक शिष्य हुआ करता था। वह किसी विश्वासी यहूदी महिला का पुत्र था किन्तु उसका पिता यूनानी था। २ लिस्तरा और इकुनियुम के बंधुओं के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। ३ पौलुस तिमुथियुस को यात्रा पर अपने साथ ले जाना चाहता था। सो उसे उसने साथ ले लिया और उन स्थानों पर रहने वाले यहूदियों के कारण उसका ख़तना किया; क्योंकि वे सभी जानते थे कि उसका पिता एक यूनानी था।

४ नगरों से यात्रा करते हुए उन्होंने वहाँ के लोगों को उन नियमों के बारे में बताया जिन्हें यरूशलेम में प्रेरितों और बुजुर्गो ने निश्चित किया था। ५ इस प्रकार वहाँ की कलीसिया का विश्वास और सुदृढ़ होता गया और दिन प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ने लगी।

पौलुस का एशिया से बाहर बुलाया जाना

६ सो वे फ्रूगिया और गलातिया के क्षेत्र से होकर निकले क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने को मना कर दिया था। ७ फिर वे जब मूसिया की सीमा पर पहुँचे तो उन्होंने बितुनिया जाने का जतन किया। किन्तु यीशु की आत्मा ने उन्हें वहाँ भी नहीं जाने दिया। ८ सो वे मूसिया होते हुए त्रोआस पहुँचे।

९ रात के समय पौलुस ने दिव्यदर्शन में देखा कि मकिदुनिया का एक पुरुष उस से प्रार्थना करते हुए कह रहा है, "मकिदुनिया में आ और हमारी सहायता कर।" १० इस दिव्यदर्शन को देखने के बाद तुरन्त ही यह परिणाम निकालते हुए कि परमेश्वर ने उन लोगों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने हमें बुलाया है, हमने मकिदुनिया जाने की ठान ली।

लीदिया का ह्रदय परिवर्तन

११ इस प्रकार हमने त्रोआस से जल मार्ग द्वारा जाने के लिये अपनी नावें खोल दीं और सीधे समोथ्रोके जा पहुँचे। फिर अगले दिन नियापुलिस चले गये। १२ वहाँ से हम एक रोमी उपनिवेश फिलिप्पी पहुँचे जो मकिदुनिया के उस क्षेत्र का एक प्रमुख नगर है। इस नगर में हमने कुछ दिन बिताये।

१३ फिर सब्त के दिन यह सोचते हुए कि प्रार्थना करने के लिये वहाँ कोई स्थान होगा हम नगर-द्वार के बाहर नदी पर गये। हम वहाँ बैठ गये और एकत्र स्त्रियों से बातचीत करने लगे। १४ वहीं लीदिया नाम की एक महिला थी। वह बैंजनी रंग के कपड़े बेचा करती थी। वह परमेश्वर की उपासक थी। वह बड़े ध्यान से हमारी बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसके ह्रदय के द्वार खोल दिये थे ताकि, जो कुछ पौलुस कह रहा था, वह उन बातों पर ध्यान दे सके। १५ अपने समूचे परिवार समेत बपतिस्मा लेने के बाद उसने हमसे यह कहते हुए विनती की, "यदि तुम मुझे प्रभु की सच्ची भक्त मानते हो तो आओ और मेरे घर ठहरो।" सो उसने हमें जाने के लिए तैयार कर लिया।

*१५:३४ कुछ यूनानी प्रतियों में पद ३४ जोड़ा गया है: "किन्तु सिलास ने वहीं ठहरे रहने का निश्चय किया।"

पौलुस और सिलास को बंदी बनाया जाना

१६ फिर ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना स्थल
की ओर जा रहे थे, हमें एक दासी मिली जिसमें
एक शकुन बताने वाली आत्मा *समायी थी। वह
लोगों का भाग्य बता कर अपने स्वामियों को
बहुत सा धन कमा कर देती थी। १७ वह हमारे और
पौलुस के पीछे पीछे यह चिल्लाते हुए हो ली, “ये
लोग परम परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुम्हें मुक्ति
के मार्ग का संदेश सुना रहे हैं।” १८ वह बहुत दिनों
तक ऐसा ही करती रही सो पौलुस परेशान हो
उठा। उसने मुड़ कर उस आत्मा से कहा, “मैं यीशु
मसीह के नाम पर तुझे आज्ञा देता हूँ, इस लड़की
में से बाहर निकल आए।” सो वह उसमें से तत्काल
बाहर निकल गयी।

१९ फिर उसके स्वामियों ने जब देखा कि उनकी
कमाई की आशा पर ही पानी फिर गया है तो
उन्होंने पौलुस और सिलास को धर दबोचा और
उन्हें घसीटते हुए बाजर के बीच अधिकारियों के
सामने ले गये। २० फिर दण्डनायक के पास उन्हें ले
जाकर वे बोले, “ये लोग यहूदी हैं और हमारे नगर
में गड़बड़ी फैला रहे हैं। २१ ये ऐसे रीति रिवाजों
की वकालत करते हैं जिन्हें अपनाना या जिन पर
चलना हम रोमियों के लिये न्यायपूर्ण नहीं है।”

२२ भीड़ भी विरोध में लोगों के साथ हो कर
उन पर चढ़ आयी। दण्डाधिकारी ने उनके कपड़े
फड़वा कर उतरवा दिये और आज्ञा दी कि उन्हें
पीटा जाये। २३ उन पर बहुत मार पड़ चुकने के
बाद उन्होंने उन्हें जेल में डाल दिया और जेल के
अधिकारी को आज्ञा दी कि उन पर कड़ा पहरा बैठा
दिया जाये। २४ ऐसी आज्ञा पाकर उसने उन्हें जेल
की भीतरी कोठरी में डाल दिया। उसने उनके पैर
काठ में कस दिये।

२५ लगभग आधी रात गये पौलुस और सिलास
परमेश्वर के भजन गाते हुए प्रार्थना कर रहे थे
और दूसरे क़ैदी उन्हें सुन रहे थे। २६ तभी वहाँ
अचानक एक ऐसा भयानक भूकम्प हुआ कि जेल
की नीवें हिल उठीं। और तुरंत जेल के फाटक
खुल गये। हर किसी की बेड़ियाँ ढीली हो कर गिर
पड़ीं। २७ जेल के अधिकारी ने जाग कर जब देखा
कि जेल के फाटक खुले पड़े हैं तो उसने अपनी
तलवार खींच ली और यह सोचते हुए कि कैदी भाग
निकले हैं वह स्वयं को जब मारने ही वाला था तभी
२८ पौलुस ने ऊँचे स्वर में पुकारते हुए कहा, “अपने
को हानि मत पहुँचा क्योंकि हम सब यहीं हैं!”

२९ इस पर जेल के अधिकारी ने मशाल मँगवाई
और जल्दी से भीतर गया। और भय से काँपते हुए
पौलुस और सिलास के सामने गिर पड़ा। ३० फिर
वह उन्हें बाहर ले जा कर बोला, “महानुभावो,
उद्धार पाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?”

३१ उन्होंने उत्तर दिया, “प्रभु यीशु पर विश्वास
कर। इससे तेरा उद्धार होगा-तेरा और तेरे परिवार
का।” ३२ फिर उसके समूचे परिवार के साथ उन्होंने
उसे प्रभु का वचन सुनाया। ३३ फिर जेल का वह
अधिकारी उसी रात और उसी घड़ी उन्हें वहाँ से
ले गया। उसने उनके घाव धोये और अपने सारे
परिवार के साथ उनसे बपतिस्मा लिया। ३४ फिर
वह पौलुस और सिलास को अपने घर ले आया
और उन्हें भोजन कराया। परमेश्वर में विश्वास
ग्रहण कर लेने के कारण उसने अपने समूचे
परिवार के साथ आनन्द मानाया।

३५ जब पौ फटी तो दण्डाधिकारियों ने यह कहने
अपने सिपाहियों को वहाँ भेजा कि उन लोगों को
छोड़ दिया जाये।

३६ फिर जेल के अधिकारी ने ये बातें पौलुस को
बतायीं कि दण्डाधिकारी ने तुम्हें छोड़ देने के लिये
कहलवा भेजा है। इसलिये अब तुम बाहर आओ
और शांति के साथ चले जाओ।

३७ किन्तु पौलुस ने उन सिपाहियों से कहा,
“यद्यपि हम रोमी नागरिक हैं पर उन्होंने हमें
अपराधी पाये बिना ही सब के सामने मारा-पीटा
और जेल में डाल दिया। और अब चुपके-चुपके
वे हमें बाहर भेज देना चाहते हैं, निश्चय ही ऐसा
नहीं होगा। होना तो यह चाहिये के वे स्वयं आकार
हमें बाहर निकालें!”

३८ सिपाहियों ने दण्डाधिकारियों को ये शब्द
जा सुनाये। दण्डाधिकारियों को जब यह पता
चला कि पौलुस और सिलास रोमी हैं तो वे बहुत
डर गये। ३९ सो वे वहाँ आये और उनसे क्षमा
याचना करके उन्हें बाहर ले गये और उनसे उस
नगर को छोड़ जाने को कहा। ४० पौलुस और
सिलास जेल से बाहर निकल कर लीदिया के घर
पहुँचे। धर्म-बंधुओं से मिलते हुए उन्होंने उनका
उत्साह बढ़ाया और फिर वहाँ से चल दिये।

---

*१६:१६ आत्मा यह आत्मा एक शैतान की रूह थी जिसने इस लड़की को एक विशेष ज्ञान दे रखा था।

पौलुस और सिलास थिस्सलुनिके में

१७ १फिर अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया
की यात्रा समाप्त करके वे थिस्सुलुनिके
जा पहुँचे। वहाँ यहूदियों का एक आराधनालय
था। २अपने सामान्य स्वभाव के अनुसार पौलुस
उनके पास गया और तीन सब्त तक उनके साथ
शास्त्रों पर विचार-विनिमय करता रहा। ३और
शास्त्रों से लेकर उन्हें समझाते हुए यह सिद्ध
करता रहा कि मसीह को यातनाएँ झेलनी ही
थीं और फिर उसे मरे हुओं में से जी उठना था।
वह कहता, “यह यीशु ही, जिसका मैं तुम्हारे
बीच प्रचार करता हूँ, मसीह है।” ४उनमें से कुछ
जो सहमत हो गए थे, पौलुस और सिलास के
मत में सम्मिलित हो गये। परमेश्वर से डरने
वाले अनगिनत यूनानी भी उनमें मिल गये। इनमें
अनेक महत्वपूर्ण स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं।
५पर यहूदी तो डाह में जले जा रहे थे। उन्होंने
कुछ बाजारू गुँडों को इकट्ठा किया और एक
हुजूम बना कर नगर में दंगे करा दिये। उन्होंने
यासोन के घर पर धावा बोल दिया। और यह
कोशिश करने लगे कि किसी तरह पौलुस और
सिलास को लोगों के सामने ले आयें। ६किन्तु जब
वे उन्हें नहीं पा सके तो यासोन को और कुछ दूसरे
बन्धुओं को नगर अधिकारियों के सामने घसीट
लाये। वे चिल्लाये, “ये लोग जिन्होंने सारी दुनिया
में उथल पुथल मचा रखी है, अब यहाँ आये हैं।
७और यासोन सम्मान के साथ उन्हें अपने घर में
ठहराये हुए है। और वे सभी कैसर के आदेशों के
विरोध में काम करते हैं और कहते है, एक राजा
और है जिसका नाम है यीशु।”
८जब भीड़ ने और नगर के अधिकारियों ने यह
सुना तो वे भड़क उठे। ९और इस प्रकार उन्होंने
यासोन तथा दूसरे लोगों को ज़मानती मुचलेका
लेकर छोड़ दिया।

पौलुस और सिलास बिरिया में

१०फिर तुरन्त रातों रात भाइयों ने पौलुस
और सिलास को बिरिया भेज दिया। वहाँ पहुँच
कर वे यहूदी, आराधनालय में गये। ११ये लोग
थिस्सुलुनिके के लोगों से अधिक अच्छे थे। इन
लोगों ने पूरा मन लगाकर वचन को सुना और हर
दिन शास्त्रों को उलटते पलटते यह जाँचते रहे
कि पौलुस ने जो बातें बतायी हैं, क्या वे सत्य हैं।
१२परिणामस्वरुप बहुत से यहूदियों और महत्वपूर्ण
यूनानी स्त्री-पुरुषों ने भी विश्वास ग्रहण किया।
१३किन्तु जब थिस्सुलुनिके के यहूदियों को यह
पता चला कि पौलुस बिरिया में भी परमेश्वर के
वचन का प्रचार कर रहा है तो वे वहाँ भी आ
धमके। और वहाँ भी दंगे करना और लोगों को
भड़काना शुरु कर दिया। १४इसलिए तभी भाइयों
ने तुरन्त पौलुस को सागर तट पर जाने को भेज
दिया। किन्तु सिलास और तिमुथियुस वहीं ठहरे
रहे। १५पौलुस को ले जाने वाले लोगों ने उसे
एथेंस पहुँचा दिया और सिलास तथा तिमुथियुस
के लिये यह आदेश देकर कि वे जल्दी से जल्दी
उसके पास आ जायें, वहीं से चल पड़ें।

पौलुस एथेंस में

१६पौलुस एथेंस में तिमुथियुस और सिलास की
प्रतीक्षा करते हुए नगर को मूर्तियों से भरा हुआ
देखकर मन ही मन तिलमिला रहा था। १७इसलिए
हर दिन वह यहूदी आराधनालय में यहूदियों और
यूनानी भक्तों से वाद-विवाद करता रहता था।
वहाँ हाट-बाजार में जो कोई होता वह उससे भी
हर दिन बहस करता रहता। १८कुछ इपीकुरी और
स्तोइकी दार्शनिक भी उससे शास्त्रार्थ करने लगे।
उनमें से कुछ ने कहा, “यह अंटशंट बोलने
वाला कहना क्या चाहता है?” दूसरों ने कहा, “यह
तो विदेशी देवताओं का प्रचारक मालूम होता
है।” उन्होंने यह इसलिए कहा था कि वह यीशु
के बारे में उपदेश देता था और उसके फिर से जी
उठने का प्रचार करता था।
१९वे उसे पकड़कर अरियुपगुस *की सभा में
अपने साथ ले गये और बोले, “क्या हम जान
सकते हैं कि तू जिसे लोगों के सामने रख रहा है,
वह नयी शिक्षा क्या है? २०तू कुछ विचित्र बातें
हमारे कानों में डाल रहा है, सो हम जानना चाहते
हैं कि इन बातों का अर्थ क्या है?” २१(वहाँ रह रहे
एथेंस के सभी लोग और परदेसी केवल कुछ नया
सुनने या उन्हीं बातों की चर्चा के अतिरिक्त किसी
भी और बात में अपना समय नहीं लगाते थे।)
२२तब पौलुस ने अरियुपगुस के सामने खड़े
होकर कहा, “हे एथेंस के लोगो! मैं देख रहा हूँ
तुम हर प्रकार से धार्मिक हो। २३घूमते फिरते
तुम्हारी उपासना की वस्तुओं को देखते हुए मुझे

---

*१७:१९ अरियुपगुस एथेंस के महत्वपूर्ण व्यक्तियों का एक दल। ये लोग न्यायधीशों के समान हुआ करते थे।

एक ऐसी वेदी भी मिली जिस पर लिखा था,
'अज्ञात परमेश्वर' के लिये सो तुम बिना जाने ही
जिस की उपासना करते हो, मैं तुम्हें उसी का वचन
सुनाता हूँ।
२४ "परमेश्वर, जिसने इस जगत की और इस
जगत के भीतर जो कुछ है, उसकी रचना की
वही धरती और आकाश का प्रभु है। वह हाथों
से बनाये मन्दिरों में नहीं रहता। २५ उसे किसी
वस्तु का अभाव नहीं है सो मनुष्य के हाथों से
उसकी सेवा नहीं हो सकती। वही सब को जीवन,
साँसें और अन्य सभी कुछ दिया करता है। २६ एक
ही मनुष्य से उसने मनुष्य की सभी जातियों का
निर्माण किया ताकि वे समूची धरती पर बस जायें
और उसी ने लोगों का समय निश्चित कर दिया
और उस स्थान की, जहाँ वे रहें सीमाएँ बाँध दीं।
२७ "उस का प्रयोजन यह था कि लोग परमेश्वर
को खोजें। हो सकता है वे उसे उस तक पहुँच कर
पा लें। इतना होने पर भी हममें से किसी से भी वह
दूर नहीं हैं: २८ क्योंकि उसी में हम रहते हैं उसी में
हमारी गति है और उसी में है हमारा अस्तित्व।
इसी प्रकार स्वयं तुम्हारे ही कुछ लेखकों ने भी
कहा है, 'क्योंकि हम उसके ही बच्चे हैं।'
२९ "और क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं
इसलिए हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि
वह दिव्य अस्तित्व सोने या चाँदी या पत्थर की
बनी मानव कल्पना या कारीगरी से बनी किसी
मूर्ति जैसा है। ३० ऐसे अज्ञान के युग की परमेश्वर
ने उपेक्षा कर दी है और अब हर कहीं के मनुष्यों
को वह मन फिराव ने का आदेश दे रहा है। ३१ उसने
एक दिन निश्चित किया है जब वह अपने नियुक्त
किये गये एक पुरुष के द्वारा न्याय के साथ जगत
का निर्णय करेगा। मरे हुओं में से उसे जिलाकर
उसने हर किसी को इस बात का प्रमाण दिया है।"
३२ जब उन्होंने मरे हुओं में से जी उठने की
बात सुनी तो उनमें से कुछ तो उसकी हँसी उड़ाने
लगे किन्तु कुछ ने कहा, "हम इस विषय पर तेरा
प्रवचन फिर कभी सुनेंगे।" ३३ तब पौलुस उन्हें
छोड़ कर चल दिया। ३४ कुछ लोगों ने विश्वास
ग्रहण कर लिया और उसके साथ हो लिये। इनमें
अरियुपगुस का सदस्य दियुनुसियुस और दमरिस
नामक एक महिला तथा उनके साथ के और लोग
भी थे।

पौलुस कुरिन्थियुस में

१८ १ इसके बाद पौलुस एथेंस छोड़ कर
कुरिन्थियुस चला गया। २ वहाँ वह पुन्तुस
के रहने वाले अक्विला नाम के एक यहूदी से
मिला। जो हाल में ही अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला
के साथ इटली से आया था। उन्होंने इटली
इसलिए छोड़ी थी कि क्लौदियुस ने सभी
यहूदियों को रोम से निकल जाने का आदेश दिया
था। सो पौलुस उनसे मिलने गया। ३ और क्योंकि
उनका काम धन्धा एक ही था सो वह उन ही के
साथ ठहरा और काम करने लगा। व्यवसाय से वे
तम्बू बनाने वाले थे।
४ हर सब्त के दिन वह यहूदी आराधनालयों
में तर्क-वितर्क करके यहूदियों और यूनानियों
को समझाने बुझाने का जतन करता। ५ जब वे
मकिदुनिया से सिलास और तिमुथियुस आये तब
पौलुस ने अपना सारा समय वचन के प्रचार में
लगा रखा था। वह यहूदियों को यह प्रमाणित
किया करता था कि यीशु ही मसीह है। ६ सो जब
उन्होंने उसका विरोध किया और उससे भला बुरा
कहा तो उसने उनके विरोध में अपने कपड़े झाड़ते
हुए उनसे कहा, "तुम्हारा खून तुम्हारे ही सिर पड़े।
उसका मुझ से कोई सरोकार नहीं है। अब से आगे
मैं ग़ैर यहूदियों के पास चला जाऊँगा।"
७ इस तरह पौलुस वहाँ से चल पड़ा और
तीतुस यूसतुस नाम के एक व्यक्ति के घर गया।
वह परमेश्वर का उपासक था। उसका घर यहूदी
आराधनालय से लगा हुआ था। ८ क्रिसपुस ने,
जो यहूदी आराधनालय का प्रधान था, अपने
समूचे घराने के साथ प्रभु में विश्वास ग्रहण
किया। साथ ही उन बहुत से कुरिन्थियों ने
जिन्होंने पौलुस का प्रवचन सुना था, विश्वास
ग्रहण करके बपतिस्मा लिया।
९ एक रात सपने में प्रभु ने पौलुस से कहा, "डर
मत, बोलता रह और चुप मत हो। १० क्योंकि मैं
तेरे साथ हूँ। सो तुझ पर हमला करके कोई भी
तुझे हानि नहीं पहुँचायेगा क्योंकि इस नगर में मेरे
बहुत से लोग हैं।" ११ सो पौलुस, वहाँ डेढ़ साल
तक परमेश्वर के वचन की उनके बीच शिक्षा देते
हुए, ठहरा।

पौलुस का गल्लियों के सामने लाया जाना

१२ जब अखाया का राज्यपाल गल्लियो था
तभी यहूदी एक जुट हो कर पौलुस पर चढ़
आये और उसे पकड़ कर अदालत में ले गये।
१३ और बोले, "यह व्यक्ति लोगों को परमेश्वर की
उपासना ऐसे ढंग से करने के लिये बहका रहा है
जो व्यवस्था के विधान के विपरीत है।"

१४ पौलुस अभी अपना मुँह खोलने को ही था
कि गल्लियो ने यहूदियो से कहा, “अरे यहूदियों,
यदि यह विषय किसी अन्याय या गम्भीर अपराध
का होता तो तुम्हारी बात सुनना मेरे लिये
न्यायसंगत होता। १५ किन्तु क्योंकि यह विषय
शब्दों नामों और तुम्हारी अपनी व्यवस्था के
प्रश्नों से सम्बन्धित है, इसलिए इसे तुम अपने
आप ही निपटो। ऐसे विषयों में मैं न्यायाधीश नहीं
बनना चाहता।” १६ और फिर उसने उन्हें अदालत
से बाहर निकाल दिया।
१७ सो उन्होंने आराधनालय के नेता सोस्थिनेस
को धर दबोचा और अदालत के सामने ही उसे
पीटने लगे। किन्तु गल्लियो ने इन बातों पर तनिक
भी ध्यान नहीं दिया।

पौलुस की वापसी

१८ बहुत दिनों बाद तक पौलुस वहाँ ठहरा रहा।
फिर भाइयों से विदा लेकर वह नाव के रास्ते
सीरिया को चल पड़ा। उसके साथ प्रिसकिल्ला
तथा अक्विला भी थे। पौलुस ने किंखिया में अपने
केश उतरवाये क्योंकि उसने एक मन्नत मानी
थी। १९ फिर वे इफिसुस पहुँचे और पौलुस ने
प्रिसकिल्ला और अक्विला को वहीं छोड़ दिया।
और आप आराधनालय में जाकर यहूदियों के
साथ बहस करने लगा। २० जब वहाँ के लोगों ने
उससे कुछ दिन और ठहरने को कहा तो उसने
मना कर दिया। २१ किन्तु जाते समय उसने कहा,
“यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो मैं तुम्हारे पास
फिर आऊँगा।” फिर उसने इफिसुस से नाव द्वारा
यात्रा की।
२२ फिर कैसरिया पहुँच कर वह यरूशलेम गया
और वहाँ कलीसिया के लोगों से भेंट की। फिर
वह अन्ताकिया की ओर चला गया। २३ वहाँ
कुछ समय बिताने के बाद उसने विदा ली और
गलातिया एवम् फ्रूगिया के क्षेत्रों में एक
स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हुए सभी
अनुयायिओं के विश्वास को बढ़ाने लगा।

इफिसुस में अपुल्लोस

२४ वहीं अपुल्लोस नाम का एक यहूदी था। वह
सिकंदरिया का निवासी था। वह विद्वान वक्ता था।
वह इफिसुस में आया। शास्त्रों का उसे सम्पूर्ण
ज्ञान था। २५ उसे प्रभु के मार्ग की दीक्षा भी मिली
थी। वह हृदय में उत्साह भर कर प्रवचन करता
तथा यीशु के विषय में बड़ी सावधानी में उपदेश
देता था। यद्यपि उसे केवल यूहन्ना के बपतिस्मा
का ही ज्ञान था। २६ यहूदी आराधनालय में वह
निर्भय हो कर बोलने लगा। जब प्रिस्किल्ला और
अक्विला ने उसे बोलते सुना तो वे उसे एक ओर
ले गये और अधिक बारीकी के साथ उसे परमेश्वर
के मार्ग की व्याख्या समझाई।
२७ सो जब उसने अखाया को जाना चाहा तो
भाइयों ने उसका साहस बढ़ाया और वहाँ के
अनुयायिओं को उसका स्वागत करने को लिख
भेजा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके लिये बड़ा
सहायक सिद्ध हुआ जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह
से विश्वास ग्रहण कर लिया था। २८ क्योंकि
शास्त्रों से यह प्रमाणित करते हुए कि यीशु
ही मसीह है, उसने यहूदियों को जनता के बीच
जोरदार शब्दों में बोलते हुए शास्त्रार्थ में पछाड़ा
था।

पौलुस इफ़िसुस में

१९ १ ऐसा हुआ कि जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में
था तभी पौलुस भीतरी प्रदेशों से यात्रा
करता हुआ इफिसुस में आ पहुँचा। वहाँ उसे कुछ
शिष्य मिले। २ और उसने उनसे कहा, “क्या जब
तुमने विश्वास धारण किया था तब पवित्र आत्मा
को ग्रहण किया था?”
उन्होंने उत्तर दिया, “हमने तो सुना तक नहीं है
कि कोई पवित्र आत्मा है भी।”
३ सो वह बोला, “तो तुमने कैसा बपतिस्मा
लिया है?”
उन्होंने कहा, “यूहन्ना का बपतिस्मा।”
४ फिर पौलुस ने कहा, “यूहन्ना का बपतिस्मा
तो मनफिराव का बपतिस्मा था। उसने लोगों से
कहा था कि जो मेरे बाद आ रहा है, उस पर अर्थात
यीशु पर विश्वास करो।”
५ यह सुन कर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का
बपतिस्मा ले लिया। ६ फिर जब पौलुस ने उन पर
अपने हाथ रखे तो उन पर पवित्र आत्मा उतर
आया और वे अलग अलग भाषाएँ बोलने और
भविष्यवाणियाँ करने लगे। ७ कुल मिला कर वे
कोई बारह व्यक्ति थे।
८ फिर पौलुस यहूदी आराधनालय में चला गया
और तीन महीने निडर होकर बोलता रहा। वह
यहूदियों के साथ बहस करते हुए उन्हें परमेश्वर के
राज्य के विषय में समझाया करता था। ९ किन्तु
उनमें से कुछ लोग बहुत हठी थे उन्होंने विश्वास
ग्रहण करने को मना कर दिया और लोगों के
सामने पंथ को भला बुरा कहते रहे। सो वह अपने
शिष्यों को साथ ले उन्हें छोड़ कर चला गया। और

तरन्नुस की पाठशाला में हर दिन विचार विमर्श
करने लगा। १० दो साल तक ऐसा ही होता रहा।
इसका परिणाम यह हुआ कि सभी एशिया निवासी
यहूदियों और ग़ैर यहूदियों ने प्रभु का वचन सुन
लिया।

स्कीवा के बेटे

११ परमेश्वर पौलुस के हाथों अनहोने आश्चर्य
कर्म कर रहा था। १२ यहाँ तक कि उसके छुए
रूमालों और अँगोछों को रोगियों के पास ले
जाया जाता और उन की बीमारियाँ दूर हो जातीं
तथा दुष्टात्माएँ उनमें से निकल भागतीं।

१३-१४ कुछ यहूदी लोग, जो दुष्टात्माएँ उतारते
इधर-उधर घूमा फिरा करते थे। यह करने लगे कि
जिन लोगों में दुष्टात्माएँ समायी थीं, उन पर प्रभु
यीशु के नाम का प्रयोग करने का यत्न करते
और कहते, "मैं तुम्हें उस यीशु के नाम पर जिसका
प्रचार पौलुस करता है, आदेश देता हूँ।" एक
स्कीवा नाम के यहूदी महायाजक के सात पुत्र
जब ऐसा कर रहे थे।

१५ तो दुष्टात्मा ने (एक बार) उनसे कहा, "मैं
यीशु को पहचानती हूँ और पौलुस के बारे में भी
जानती हूँ, किन्तु तुम लोग कौन हो ?"

१६ फिर वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्मा सवार थीं,
उन पर झपटा। उसने उन पर काबू पा कर उन दोनों
को हरा दिया। इस तरह वे नंगे ही घायल होकर
उस घर से निकल कर भाग गये।

१७ इफिसुस में रहने वाले सभी यहूदियों और
यूनानियों को इस बात का पता चल गया। वे सब
लोग बहुत डर गये थे। इस प्रकार प्रभु यीशु
के नाम का आदर और अधिक बढ़ गया। १८ उनमें
से बहुत से जिन्होंने विश्वास ग्रहण किया था,
अपने द्वारा किये गये बुरे कामों को सबके सामने
स्वीकार करते हुए वहाँ आये। १९ जादू टोना करने
वालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पुस्तकें लाकर
वहाँ इकट्ठी कर दीं और सब के सामने उन्हें जला
दिया। उन पुस्तकों का मूल्य पचास हजार चाँदी
के सिक्कों के बराबर था। २० इस प्रकार प्रभु का
वचन अधिक प्रभावशाली होते हुए दूर दूर तक
फैलने लगा।

पौलुस की यात्रा योजना

२१ इन घटनाओं के बाद पौलुस ने अपने मन में
मकिदुनिया और अखाया होते हुए यरूशलेम जाने
का निश्चय किया। उसने कहा, "वहाँ जाने के बाद
मुझे रोम भी देखना चाहिए।" २२ सो उसने अपने
तिमुथियुस और इरासतुस नामक दो सहायकों को
मकिदुनिया भेज दिया और स्वयं एशिया में थोड़ा
समय और बिताया।

इफ़िसुस में उपद्रव

२३ उन्हीं दिनों इस पँथ को लेकर वहाँ बड़ा
उपद्रव हुआ। २४ वहाँ देमेत्रियुस नाम का एक
चाँदी का काम करने वाला सुनार हुआ करता था।
उसने अरतिमिस के चाँदी के मन्दिर बनवाता था
जिससे कारीगरों को बहुत कारोबार मिलता था।

२५ उसने उन्हें और इस काम से जुड़े हुए दूसरे
कारीगरों को इकट्ठा किया और कहा, "देखो
लोगो, तुम जानते हो कि इस काम से हमें एक
अच्छी आमदनी होती है। २६ तुम देख सकते हो
और सुन सकते हो कि इस पौलुस ने न केवल
इफिसुस में बल्कि लगभग एशिया के समूचे क्षेत्र
में लोगों को बहका फुसला कर बदल दिया है। वह
कहता है कि मनुष्य के हाथों के बनाये देवता सच्चे
देवता नहीं है। २७ इससे न केवल इस बात का भय
है कि हमारा व्यवसाय बदनाम होगा बल्कि महान
देवी अरतिमिस के मन्दिर की प्रतिष्ठा समाप्त
हो जाने का भी डर है। और जिस देवी की उपासना
समूचे एशिया और संसार द्वारा की जाती है, उसकी
गरिमा छिन जाने का भी डर है।"

२८ जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रोधित
हुए और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे,
"इफ़िसियों की देवी अरतिमिस महान है!"
२९ उधर सारे नगर में अव्यवस्था फैल गयी। सो
लोगों ने मकिदुनिया से आये तथा पौलुस के
साथ यात्रा कर रहे गयुस और अरिस्तर्खुस को
धर दबोचा और उन्हें रंगशाला *में ले भागे।
३० पौलुस लोगों के सामने जाना चाहता था
किन्तु शिष्यों ने उसे नहीं जाने दिया। ३१ कुछ
प्रांतीय अधिकारियों ने जो उसके मित्र थे,
उससे कहलवा भेजा कि वह वहाँ रंगशाला में
आने का दुस्साहस न करे।

*१९:२९ रंगशाला एक विशेष स्थान जिसे रंगशाला के रूप में याजक सभाओं के लिए प्रयोग में लाते थे।

३२ अब देखो कोई कुछ चिल्ला रहा था, और
कोई कुछ, क्योंकि समूची सभा में हड़बड़ी फैली
हुई थी। उनमें से अधिकतर यह नहीं जानते थे कि
वे वहाँ एकत्र क्यों हुए हैं। ३३ यहूदियों ने सिकन्दर
को जिसका नाम भीड़ में से उन्होंने सुझाया था,
आगे खड़ा कर रखा था। सिकन्दर ने अपने हाथों
को हिला हिला कर लोगों के सामने बचाव पक्ष
प्रस्तुत करना चाहा। ३४ किन्तु जब उन्हें यह पता
चला कि वह एक यहूदी है तो वे सब कोई दो
घण्टे तक एक स्वर में चिल्लाते हुए कहते रहे,
“इफिसुसियों की देवी अरतिमिस महान है।”
३५ फिर नगर लिपिक ने भीड़ को शांत करके
कहा, “हे इफिसुस के लोगों क्या संसार में कोई
ऐसा व्यक्ति है जो यह नहीं जानता कि इफिसुस
नगर महान देवी अतरिमिस और स्वर्ग से गिरी हुई
पवित्र शिला का संरक्षक है? ३६ क्योंकि इन बातों
से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसलिए तुम्हें
शांत रहना चाहिए और बिना विचारे कुछ नहीं
करना चाहिए।
३७ “तुम इन लोगों को पकड़ कर यहाँ लाये हो
यद्यपि उन्होंने न तो कोई मन्दिर लूटा है और न
ही हमारी देवी का अपमान किया है। ३८ फिर भी
देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी
के विरुद्ध कोई शिकायत है तो अदालतें खुली हैं
और वहाँ राज्यपाल हैं। वहाँ आपस में एक दूसरे
पर वे अभियोग चला सकते हैं।
३९ “किन्तु यदि तुम इससे कुछ अधिक जानना
चाहते हो तो उसका फैसला नियमित सभा में
किया जायेगा। ४० जो कुछ है उसके अनुसार हमें
इस बात का डर है कि आज के उपद्रवों का दोष
कहीं हमारे सिर न मढ़ दिया जाये। इस दंगे के लिये
हमारे पास कोई भी हेतु नहीं है जिससे हम इसे
उचित ठहरा सकें।” ४१ इतना कहने के बाद उसने
सभा विसर्जित कर दी।

पौलुस का मकिदुनिया और यूनान जाना

२० १ फिर इस उपद्रव के शांत हो जाने के बाद
पौलुस ने यीशु के शिष्यों को बुलाया और
उनका हौसला बढ़ाने के बाद उनसे विदा ले कर वह
मकिदुनिया को चल दिया। २ उस प्रदेश से होकर
उसने यात्रा की और वहाँ के लोगों की उत्साह
के अनेक वचन प्रदान किये। फिर वह यूनान आ
गया। ३ वह वहाँ तीन महीने ठहरा और क्योंकि
यहूदियों ने उसके विरुद्ध एक षडचन्त्र रच रखा
था।
सो जब वह जल मार्ग से सीरिया जाने
को ही था कि उसने निश्चय किया कि वह
मकिदुनिया को लौट जाये। ४ बिरिया के पिरूस
का बेटा सोपत्रुस, थिसलुनिकिया के रहने वाले
अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, दिरबे का निवासी
गयूस और तिमुथियुस तथा एशियाई क्षेत्र के
तुखिकुस और त्रुफिमुस उसके साथ थे। ५ ये लोग
पहले चले गये थे और त्रोआस में हमारी परीक्षा
कर रहे थे। ६ बिना ख़मीर की रोटी के दिनों के बाद
हम फिलिप्पी से नाव द्वारा चल पड़े और पाँच दिन
बाद त्रोआस में उनसे जा मिले। वहाँ हम सात
दिन तक ठहरे।

त्रोआस को पौलुस की अन्तिम यात्रा

७ सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी विभाजित
करने के लिये आपस में इकट्ठे हुए तो पौलुस
उनसे बातचीत करने लगा। उसे अगले ही दिन
चले जाना था सो वह आधी रात तक बातचीत
करता ही रहा। ८ सीढ़ीयों के ऊपर के कमरे में जहाँ
हम इकट्ठे हुए थे, वहाँ बहुत से दीपक थे। ९ वहीं
युतुखुस नामक एक युवक खिड़की पर बैठा था वह
गहरी नींद में डूबा था। क्योंकि पौलुस बहुत देर से
बोले ही चला जा रहा था सो उसे गहरी नींद आ
गयी थी। इससे वह तीसरी मंजिल से नीचे लुढ़क
पड़ा और जब उसे उठाया तो वह मर चुका था।
१० पौलुस नीचे उतरा और उस से लिपट गया।
उसे अपनी बाहों में ले कर उसने कहा, “घबराओ
मत क्योंकि उसके प्राण अभी उसी में हैं।” ११ फिर
वह ऊपर चला गया और उसने रोटी को तोड़ कर
विभाजित किया और उसे खाया। वह उनके साथ
बहुत देर, पौ-फटे तक बातचीत करता रहा। फिर
उसने उनसे विदा ली। १२ उस जीवित युवक को वे
घर ले आये। इससे उन्हें बहुत चैन मिला।

त्रोआस से मितुलेने की यात्रा

१३ हम जहाज़ पर पहले ही पहुँच गये और
अस्सुस को चल पड़े। वहाँ पौलुस को हमें जहाज़
पर लेना था। उसने ऐसी ही योजना बनायी थी।
वह स्वयं पैदल आना चाहता था। १४ वह जब
अस्सुस में हमसे मिला तो हमने उसे जहाज़
पर चढ़ा लिया और हम मितेलेने को चल पड़े।
१५ दूसरे दिन वहाँ से चल कर हम खियुस के
सामने जा पहुँचे और अगले दिन उस पार सामोस
आ गये। फिर उसके एक दिन बाद हम मिलेतुस
आ पहुँचे। १६ क्योंकि पौलुस जहाँ तक हो सके
पिन्तेकुस्त के दिन तक यरूशलेम पहुँचने की

जल्दी कर रहा था, सो उसने निश्चय किया कि वह इफ़िसुस में रुके बिना आगे चला जायेगा जिससे उसे एशिया में समय न बिताना पड़े।

पौलुस की इफ़िसुस के बुजुर्गों से बातचीत

१७ उसने मिलेतुस से इफिसुस के बुजुर्गों और कलीसिया को संदेसा भेज कर अपने पास बुलाया।

१८ उनके आने पर पौलुस ने उनसे कहा, "यह तुम जानते हो कि एशिया पहुँचने के बाद पहले दिन से ही हर समय मैं तुम्हारे साथ कैसे रहा हूँ १९ और दीनतापूर्वक आँसू बहा-बहा कर यहूदियों के षडयन्त्रों के कारण मुझ पर पड़ी अनेक परीक्षाओं में भी मैं प्रभु की सेवा करता रहा। २० तुम जानते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारे हित की कोई बात बताने से कभी हिचकिचाया नहीं। और मैं तुम्हें उन बातों का सब लोगों के बीच और घर-घर जा कर उपदेश देने में कभी नहीं झिझका। २१ यहूदियों और यूनानियों को मैं समान भाव से मन फिराव के परमेश्वर की तरफ़ मुड़ने को कहता रहा हूँ और हमारे प्रभु यीशु में विश्वास के प्रति उन्हें सचेत करता रहा हूँ।

२२ "और अब पवित्र आत्मा के अधीन होकर मैं यरूशलेम जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता वहाँ मेरे साथ क्या कुछ घटेगा। २३ मैं तो बस इतना जानता हूँ कि हर नगर में पवित्र आत्मा यह कहते हुए मुझे सचेत करती रहती है कि बंदीगृह और कठिनताएँ मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। २४ किन्तु मेरे लिये मेरे प्राणों का कोई मूल्य नहीं है। मैं तो बस उस दौड़ धूप और उस सेवा को पूरा करना चाहता हूँ जिसे मैंने प्रभु यीशु से ग्रहण किया है वह है — परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की साक्षी देना।

२५ "और अब मैं जानता हूँ कि तुममें से कोई भी, जिनके बीच मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह आगे कभी नहीं देख पायेगा। २६ इसलिये आज मैं तुम्हारे सामने घोषणा करता हूँ कि तुममें से किसी के भी खून का दोषी मैं नहीं हूँ। २७ क्योंकि मैं परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को तुम्हें बताने में कभी नहीं हिचकिचाया हूँ। २८ अपनी और अपने समुदाय की रखवाली करते रहो। पवित्र आत्मा ने उनमें से तुम्हें उन पर दृष्टि रखने वाला बनाया है ताकि तुम परमेश्वर की *उस कलीसिया का ध्यान रखो जिसे उसने अपने रक्त के बदले मोल लिया था। २९ मैं जानता हूँ कि मेरे विदा होने के बाद हिंसक भेड़िये तुम्हारे बीच आयेंगे और वे इस भोले-भाले समूह को नहीं छोड़ेंगे। ३० यहाँ तक कि तुम्हारे अपने बीच में से ही ऐसे लोग भी उठ खड़े होंगे, जो शिष्यों को अपने पीछे लगा लेने के लिए बातों को तोड़-मरोड़ कर कहेंगे। ३१ इसलिये सावधान रहना। याद रखना कि मैंने तीन साल तक एक एक को दिन रात रो रो कर सचेत करना कभी नहीं छोड़ा था।

३२ "अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके सुसंदेश के अनुग्रह के हाथों सौंपता हूँ। वही तुम्हारा निर्माण कर सकता है और तुम्हें उन लोगों के साथ जिन्हें पवित्र किया जा चुका है, तुम्हारा उत्तराधिकार दिला सकता है। ३३ मैंने कभी किसी के सोने-चाँदी या वस्त्रों की अभिलाषा नहीं की। ३४ तुम स्वयं जानते हो कि मेरे इन हाथों ने ही मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताओं को पूरा किया है। ३५ मैंने अपने हर कर्म से तुम्हें यह दिखाया है कि कठिन परिश्रम करते हुए हमें निर्बलों की सहायता किस प्रकार करनी चाहिये और हमें प्रभु यीशु का वह वचन याद रखना चाहिये जिसे उसने स्वयं कहा था, 'लेने से देने में अधिक सुख है।'"

३६ यह कह चुकने के बाद वह उन सब के साथ घुटनों के बल झुका और उसने प्रार्थना की। ३७–३८ हर कोई फूट फूट कर रो रहा था। गले मिलते हुए वे उसे चूम रहे थे। उसने जो यह कहा था कि वे उसका मुँह फिर कभी नहीं देखेंगे, इससे लोग बहुत अधिक दुःखी थे। फिर उन्होंने उसे सुरक्षा पूर्वक जहाज़ तक पहुँचा दिया।

पौलुस का यरूशलेम जाना

२१ १ फिर उनसे विदा हो कर हम ने सागर में अपनी नाव खोल दी और सीधे रास्ते कोस जा पहुँचे और अगले दिन रोदुस। फिर वहाँ से हम पतरा को चले गये। २ वहाँ हमने एक जहाज़ लिया जो फिनीके जा रहा था।

३ जब साइप्रस दिखाई पड़ने लगा तो हम उसे बायीं तरफ़ छोड़ कर सीरिया की ओर मुड़ गये क्योंकि जहाज़ को सूर में माल उतारना था सो हम भी वहीं उतर पड़े। ४ वहाँ हमें अनुयायी मिले जिनके साथ हम सात दिन तक ठहरे। उन्होंने आत्मा से प्रेरित होकर पौलुस को यरूशलेम जाने से रोकना चाहा। ५ फिर वहाँ ठहरने का अपना

*२० :२८ परमेश्वर की कुछ यूनानी प्रतियों "प्रभु की" कहती हैं।

समय पूरा करके हमने विदा ली और अपनी यात्रा
पर निकल पड़े। अपनी पत्नियों और बच्चों समेत
वे सभी नगर के बाहर तक हमारे साथ आये। फिर
वहाँ सागर तट पर हमने घुटनों के बल झुक कर
प्रार्थना की। ६ और एक दूसरे से विदा लेकर हम
जहाज़ पर चढ़ गये। और वे अपने-अपने घरों को
लौट गये।

७ सूर से जल मार्ग द्वारा यात्रा करते हुए हम
पतुलिमयिस में उतरे। वहाँ भाईयों का स्वागत
सत्कार करते हम उनके साथ एक दिन ठहरे।
८ अगले दिन उन्हें छोड़ कर हम कैसरिया आ गये।
और इंजील के प्रचारक फिलिप्पुस के, जो चुने
हुए विशेष सात सेवकों में से एक था, घर जा कर
उसके साथ ठहरे। ९ उसके चार कुवाँरी बेटियाँ थीं
जो भविष्यवाणी किया करती थीं।

१० वहाँ हमारे कुछ दिनों ठहरे रहने के बाद
यहूदिया से अगबुस नामक एक नबी आया।
११ हमारे निकट आते हुए उसने पौलुस का कमर
बंध उठा कर उससे अपने ही पैर और हाथ बाँध
लिये और बोला, "यह है जो पवित्र आत्मा कह
रहा है-यानी यरूशलेम में यहूदी लोग, जिसका
यह कमर बंध है, उसे ऐसे ही बाँध कर विधर्मियों
के हाथों सौंप देंगे।"

१२ हमने जब यह सुना तो हमने और वहाँ के
लोगों ने उससे यरूशलेम न जाने की प्रार्थना की।
१३ इस पर पौलुस ने उत्तर दिया, "इस प्रकार रो-
रो कर मेरा दिल तोड़ते हुए यह तुम क्या कर रहे
हो? मैं तो यरूशलेम में न केवल बाँधे जाने के लिये
बल्कि प्रभु यीशु मसीह के नाम पर मरने तक को
तैयार हूँ।"

१४ क्योंकि हम उसे मना नहीं पाये। सो बस
इतना कह कर चुप हो गये, "जैसी प्रभु की
इच्छा।"

१५ इन दिनों के बाद फिर हम तैयारी करके
यरूशलेम को चल पड़े। १६ कैसरिया से कुछ शिष्य
भी हमारे साथ हो लिये थे। वे हमें साइप्रस के एक
व्यक्ति मनासोन के यहाँ ले गये जो एक पुराना
शिष्य था। हमें उसी के साथ ठहरना था।

पौलुस की याकूब से भेंट

१७ यरूशलेम पहुँचने पर भाईयों ने बड़े उत्साह
के साथ हमारा स्वागत सत्कार किया। १८ अगले
दिन पौलुस हमारे साथ याकूब से मिलने गया।
वहाँ सभी अग्रज उपस्थित थे। १९ पौलुस ने
उनका स्वागत सत्कार किया और उन सब कामों
के बारे में जो परमेश्वर ने उसके द्वारा विधर्मियों के
बीच कराये थे, एक एक करके कह सुनाया।

२० जब उन्होंने यह सुना तो वे परमेश्वर की
स्तुति करते हुए उससे बोले, "बंधु तुम तो देख
ही रहे हो यहाँ कितने ही हज़ारों यहूदी ऐसे हैं
जिन्होंने विश्वास ग्रहण कर लिया है। किन्तु वे
सभी व्यवस्था के प्रति अत्यधिक उत्साहित हैं।
२१ तेरे विषय में उनसे कहा गया है कि तू विधर्मियों
के बीच रहने वाले सभी यहूदियों को मूसा की
शिक्षाओं को त्यागने की शिक्षा देता है। और उनसे
कहता है कि वे न तो अपने बच्चों का ख़तना करायें
और न ही हमारे रीति-रिवाज़ों पर चलें।

२२ "सो क्या किया जाये? वे यह तो सुन ही लेंगे
कि तू आया हुआ है। २३ इसलिये तू वही कर जो
तुझ से हम कह रहे हैं। हमारे साथ चार ऐसे व्यक्ति
हैं जिन्होंने कोई मन्नत मानी है। २४ इन लोगों
को ले जा और उनके साथ शुद्धीकरण समारोह में
सम्मिलित हो जा। और उनका खर्चा दे दे ताकि वे
अपने सिर मुँडवा लें। इससे सब लोग जान जायेंगे
कि उन्होंने तेरे बारे में जो सुना है, उसमें कोई
सचाई नहीं है बल्कि तू तो स्वयं ही व्यवस्था के
अनुसार जीवन जीता है।

२५ "जहाँ तक विश्वास ग्रहण करने वाले ग़ैर
यहूदियों का प्रश्न है, हमने उन्हें एक पत्र में
लिख भेजा है,

'मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन तुम्हें नहीं लेना
चाहिये।
गला घोंट कर मारे गये किसी भी पशु का मांस खाने
से बचें और लहू को कभी न खायें।
व्यभिचार से बचे रहो।'"

पौलुस का बंदी होना

२६ इस प्रकार पौलुस ने उन लोगों को अपने
साथ लिया और उन लोगों के साथ अपने आप को
भी अगले दिन शुद्ध कर लिया। फिर वह मन्दिर में
गया जहाँ उसने घोषणा की कि शुद्धीकरण के दिन
कब पूरे होंगे और हममें से हर एक के लिये चढ़ावा
कब चढ़ाया जायेगा।

२७ जब वे सात दिन लगभग पूरे होने वाले
थे, कुछ यहूदियों ने उसे मन्दिर में देख लिया।
उन्होंने भीड़ में सभी लोगों को भड़का दिया और
पौलुस को पकड़ लिया। २८ फिर वे चिल्ला कर
बोले, "इस्राएल के लोगो सहायता करो। यह
वही व्यक्ति है जो हर कहीं हमारी जनता के,
हमारी व्यवस्था के और हमारे इस स्थान के विरोध
में लोगों को सिखाता फिरता है। और अब तो यह

विधर्मियों को मन्दिर में ले आया है। और इसने
इस प्रकार इस पवित्र स्थान को ही भ्रष्ट कर
दिया है।" २९ (उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि
त्रुफिमुस नाम के एक इफिसी को नगर में उन्होंने
उसके साथ देखकर ऐसा समझा था कि पौलुस उसे
मन्दिर में ले गया है।)
३० सो सारा नगर विरोध में उठ खड़ा हुआ। लोग
दौड़-दौड़ कर चढ़ आये और पौलुस को पकड़
लिया। फिर वे उसे घसीटते हुए मन्दिर के बाहर
ले गये और तत्काल फाटक बंद कर दिये गये।
३१ वे उसे मारने का जतन कर ही रहे थे कि रोमी
टुकड़ी के सेनानायक के पास यह सूचना पहुँची कि
समुचे यरूशलेम में खलबली मची हुई है। ३२ उसने
तुरंत कुछ सिपाहियों और सेना के अधिकारियों
को अपने साथ लिया और पौलुस पर हमला करने
वाले यहूदियों की ओर बढ़ा। यहूदियों ने जब उस
सेनानायक और सिपाहियों को देखा तो उन्होंने
पौलुस को पीटना बंद कर दिया।
३३ तब वह सेनानायक पौलुस के पास आया और
उसे बंदी बना लिया। उसने उसे दो ज़ंजीरों में बाँध
लेने का आदेश दिया। फिर उसने पूछा कि वह
कौन है और उसने क्या किया है? ३४ भीड़ में से
कुछ लोगों ने एक बात कही तो दूसरों ने दूसरी।
इस हो-हुल्लड़ में क्योंकि वह यह नहीं जान पाया
कि सच्चाई क्या है, इसलिये उसने आज्ञा दी कि
उसे छावनी में ले चला जाये। ३५-३६ पौलुस जब
सीढ़ियों के पास पहुँचा तो भीड़ में फैली हिंसा
के कारण सिपाहियों को उसे अपनी सुरक्षा में ले
जाना पड़ा। क्योंकि उसके पीछे लोगों की एक
बड़ी भीड़ यह चिल्लाते हुए चल रही थी कि इसे
मार डालो।
३७ जब वह छावनी के भीतर ले जाया जाने
वाला ही था कि पौलुस ने सेनानायक से कहा,
"क्या मैं तुझसे कुछ कह सकता हूँ?"
सेनानायक बोला, "क्या तू यूनानी बोलता है?
३८ तो तू वह मिस्री तो नहीं है न जिसने कुछ
समय पहले विद्रोह शुरू कराया था और जो
यहाँ रेगिस्तान में चार हज़ार आतंकवादियों की
अगुवाई कर रहा था?"
३९ पौलुस ने कहा, "मैं सिलिकिया के तरसुस
नगर का एक यहूदी व्यक्ति हूँ। और एक प्रसिद्ध
नगर का नागरिक हूँ। मैं तुझसे चाहता हूँ कि तू
मुझे इन लोगों के बीच बोलने दे।"
४० उससे अनुमति पा कर पौलुस ने सीढ़ियों पर
खड़े होकर लोगों की तरफ़ हाथ हिलाते हुए संकेत
किया। जब सब शांत हो गये तो पौलुस इब्रानी
भाषा में लोगों से कहने लगा।

पौलुस का भाषण

२२ १ पौलुस ने कहा, "हे भाइयो और पितृ
तुल्य सज्जनो! मेरे बचाव में अब मुझे जो
कुछ कहना है, उसे सुनो।"
२ उन्होंने जब उसे इब्रानी भाषा में बोलते हुए
सुना तो वे और अधिक शांत हो गये। फिर पौलुस
ने कहा,
३ "मैं एक यहूदी व्यक्ति हूँ। किलिकिया के
तरसुस में मेरा जन्म हुआ था और मैं इसी नगर में
पल-पुस कर बड़ा हुआ। गमलिएल *के चरणों में
बैठ कर हमारे परम्परागत विधान के अनुसार बड़ी
कड़ाई के साथ मेरी शिक्षा-दीक्षा हुई। परमेश्वर
के प्रति मैं बड़ा उत्साही था। ठीक वैसे ही जैसे
आज तुम सब हो। ४ इस पंथ के लोगों को मैंने
इतना सताया कि उनके प्राण तक निकल गये।
मैंने पुरुषों और स्त्रियों को बंदी बनाया और जेलों
में ठूँस दिया।
५ "स्वयं महायाजक और बुजुर्गों की समूची सभा
इसे प्रमाणित कर सकती है। मैंने दमिश्क में
इनके भाइयों के नाम इनसे पत्र भी लिया था और
इस पंथ के वहाँ रह रहे लोगों को पकड़ कर बंदी
के रूप में यरूशलेम लाने के लिये मैं गया भी था
ताकि उन्हें दण्ड दिलाया जा सके।

पौलुस का मन कैसे बदला

६ "फिर ऐसा हुआ कि मैं जब यात्रा करते-करते
दमिश्क के पास पहुँचा तो लगभग दोपहर के समय
आकाश से अचानक एक तीव्र प्रकाश मेरे चारों
ओर कौंध गया। ७ मैं धरती पर जा पड़ा। तभी मैंने
एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'शाऊल,
ओ शाऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?'
८ "तब मैंने उत्तर में कहा, 'प्रभु, तू कौन है?'
वह मुझसे बोला, 'मैं वही नासरी यीशु हूँ जिसे तू
सता रहा है।' ९ जो मेरे साथ थे, उन्होंने भी वह
प्रकाश देखा किन्तु उस ध्वनि को जिस ने मुझे
सम्बोधित किया था, वे समझ नहीं पाये।
१० "मैंने पूछा, 'हे प्रभु, मैं क्या करूँ?' इस पर
प्रभु ने मुझसे कहा, 'खड़ा हो, और दमिश्क को

---

*२२:३ गमलिएल यहूदियों की एक धार्मिक शाखा, फरीसियों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण धर्म-गुरु। देखें प्रेरित ५:३४

चला जा। वहाँ तुझे वह सब बता दिया जायेगा,
जिसे करने के लिये तुझे नियुक्त किया गया है।'
११ क्योंकि मैं उस तीव्र प्रकाश की चौंध के कारण
कुछ देख नहीं पा रहा था, सो मेरे साथी मेरा हाथ
पकड़ कर मुझे ले चले और मैं दमिश्क जा पहुँचा।
१२ "वहाँ हनन्याह *नाम का एक व्यक्ति था।
वह व्यवस्था का पालन करने वाला एक भक्त
था। वहाँ के निवासी सभी यहूदियों के साथ उसकी
अच्छी बोलचाल थी। १३ वह मेरे पास आया और
मेरे निकट खड़े होकर बोला, 'भाई शाऊल, फिर से
देखने लग' और उसी क्षण में उसे देखने योग्य हो
गया।
१४ "उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने
तुझे चुन लिया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, उस
धर्म-स्वरूप को देखे और उसकी वाणी को सुने।
१५ क्योंकि तूने जो देखा है और जो सुना है, उसके
लिये सभी लोगों के सामने तू उसकी साक्षी होगा।
१६ सो अब तू और देर मत कर, खड़ा हो बपतिस्मा
ग्रहण कर और उसका नाम पुकारते हुए अपने
पापों को धो डाल।'
१७ "फिर ऐसा हुआ कि जब मैं यरूशलेम लौट
कर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था तभी मेरी
समाधि लग गयी। १८ और मैंने देखा वह मुझसे
कह रहा है, 'जल्दी कर और तुरंत यरूशलेम से
बाहर चला जा क्योंकि मेरे बारे में वे तेरी साक्षी
स्वीकार नहीं करेंगे।'
१९ "सो मैंने कहा, 'प्रभु ये लोग तो जानते हैं कि
तुझ पर विश्वास करने वालों को बंदी बनाते हुए
और पीटते हुए मैं यहूदी आराधनालयों में घूमता
फिरा हूँ। २० और तो और जब तेरे साक्षी स्तिफनुस
का रक्त बहाया जा रहा था, तब भी मैं अपना
समर्थन देते हुए वहीं खड़ा था। जिन्होंने उसकी
हत्या की थी, मैं उनके कपड़ों की रखवाली कर रहा
था।'
२१ "फिर वह मुझसे बोला, 'तू जा, क्योंकि मैं
तुझे विधर्मियों के बीच दूर-दूर तक भेजूँगा।'"
२२ इस बात तक वे उसे सुनते रहे पर फिर ऊँचे
स्वर में पुकार कर चिल्ला उठे, "ऐसे मनुष्य से
धरती को मुक्त करो। यह जीवित रहने योग्य नहीं
है।" २३ वे जब चिल्ला रहे थे और अपने कपड़ों
को उतार उतार कर फेंक रहे थे तथा आकाश में
धूल उड़ा रहे थे, २४ तभी सेनानायक ने आज्ञा
दी कि पौलुस को किले में ले जाया जाये। उसने
कहा कि कोड़े लगा लगा कर उससे पूछ-ताछ की
जाये ताकि पता चले कि उस पर लोगों के इस
प्रकार चिल्लाने का कारण क्या है। २५ किन्तु जब
वे उसे कोड़े लगाने के लिये बाँध रहे थे तभी वहाँ
खड़े सेनानायक से पौलुस ने कहा, "किसी रोमी
नागरिक को, जो अपराधी न पाया गया हो, कोड़े
लगाना क्या तुम्हारे लिये उचित है?"
२६ यह सुनकर सेनानायक सेनापति के पास
गया और बोला, "यह तुम क्या कर रहे हो? क्योंकि
यह तो रोमी नागरिक है।"
२७ इस पर सेनापति ने उसके पास आकर पूछा,
"मुझे बता, क्या तू रोमी नागरिक है?"
पौलुस ने कहा, "हाँ।"
२८ इस पर सेनापति ने उत्तर दिया, "इस
नागरिकता को पाने में मुझे बहुत सा धन खर्च
करना पड़ा है।"
पौलुस ने कहा, "किन्तु मैं तो जन्मजात रोमी
नागरिक हूँ।"
२९ सो वे लोग जो उससे पूछताछ करने को
थे तुरंत पीछे हट गये और वह सेनापति भी यह
समझ कर कि वह एक रोमी नागरिक है और उसने
उसे बंदी बनाया है, बहुत डर गया।

यहूदी नेताओं के सामने पौलुस का भाषण

३० क्योंकि वह सेनानायक इस बात का ठीक
ठीक पता लगाना चाहता था कि यहूदियों ने
पौलुस पर अभियोग क्यों लगाया, इसलिये उसने
अगले दिन उसके बन्धन खोलदिए। फिर प्रमुख
याजकों और सर्वोच्च यहूदी महासभा को बुला
भेजा और पौलुस को उनके सामने लाकर खड़ा कर
दिया।

२३ १ पौलुस ने यहूदी महासभा पर गम्भीर
दृष्टि डालते हुए कहा, "मेरे भाईयों! मैंने
परमेश्वर के सामने आज तक उत्तम निष्ठा के साथ
जीवन जिया है।" २ इस पर महायाजक हनन्याह
ने पौलुस के पास खड़े लोगों को आज्ञा दी कि वे
उसके मुँह पर थप्पड़ मारें। ३ तब पौलुस ने उससे
कहा, "अरे सफेदी पुती दीवार! तुझ पर परमेश्वर
की मार पड़ेगी। तू यहाँ व्यवस्था के विधान के
अनुसार मेरा कैसा न्याय करने बैठा है कि तू
व्यवस्था के विरोध में मेरे थप्पड़ मारने की आज्ञा
दे रहा है।"

*२२:१२ हनन्याह प्रेरितों के काम में हनन्याह नाम के तीन व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है। अन्य दो के लिए देखें प्रेरित के काम ५:१ और २३:२

४ पौलुस के पास खड़े लोगों ने कहा, "परमेश्वर
के महायाजक का अपमान करने का साहस तुझे
हुआ कैसे।"
५ पौलुस ने उत्तर दिया, "मुझे तो पता ही नहीं
कि यह महायाजक है। क्योंकि शासन में लिखा है,
'तुझे अपनी प्रजा के शासक के लिये बुरा बोल
नहीं बोलना चाहिये।' *"
६ फिर जब पौलुस को पता चला कि उनमें
से आधे लोग सदूकी हैं और आधे फ़रीसी तो
महासभा के बीच उसने ऊँचे स्वर में कहा, "हे
भाईयों, मैं फ़रीसी हूँ एक फ़रीसी का बेटा हूँ। मरने
के बाद फिर से जी उठने के प्रति मेरी मान्यता के
कारण मुझ पर अभियोग चलाया जा रहा है!"
७ उसके ऐसा कहने पर फरीसियों और सदूकियों
में एक विवाद उठ खड़ा हुआ और सभा के बीच फूट
पड़ गयी। ८ (सदूकियों का कहना है कि पुनरुत्थान
नहीं होता न स्वर्गदूत होते हैं और न ही आत्माएँ।
किन्तु फरीसियों का इनके अस्तित्त्व में विश्वास
है।) ९ वहाँ बहुत शोरगुल मचा। फरीसियों के दल
में से कुछ धर्मशास्त्रि उठे और तीखी बहस करते
हुए कहने लगे, "इस व्यक्ति में हम कोई खोट नहीं
पाते हैं। यदि किसी आत्मा ने या किसी स्वर्गदूत
ने इससे बातें की हैं तो इससे क्या?"
१० क्योंकि यह विवाद हिंसक रूप ले चुका था,
इससे वह सेनापति डर गया कि कहीं वे पौलुस के
टुकड़े-टुकड़े न कर डालें। सो उसने सिपाहियों को
आदेश दिया कि वे नीचे जा कर पौलुस को उनसे
अलग करके छावनी में ले जायें।
११ अगली रात प्रभु ने पौलुस के निकट खड़े
होकर उससे कहा, "हिम्मत रख, क्योंकि तूने जैसे
दृढ़ता के साथ यरूशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे
ही रोम में भी तुझे मेरी साक्षी देनी है।"

कुछ यहूदि की पौलुस को मारने की योजना

१२ फिर दिन निकले। यहूदियों ने एक षडयन्त्र
रचा। उन्होंने शपथ उठायी कि जब तक वे पौलुस
को मार नहीं डालेंगे, न कुछ खायेंगे, न पियेंगे।
१३ उनमें से चालीस से भी अधिक लोगों ने यह
षडयन्त्र रचा था। १४ वे प्रमुख याजकों और
बुजुर्गों के पास गये और बोले, "हमने सौगन्ध
उठाई है कि हम जब तक पौलुस को मार नहीं
डालते हैं, तब तक न हमें कुछ खाना है, न पीना।
१५ तो अब तुम और यहूदी महासभा, सेनानायक से
कहो कि वह उसे तुम्हारे पास ले आए यह बहाना
बनाते हुए कि तुम उसके विषय में और गहराई से
छानबीन करना चाहते हो। इससे पहले कि वह
यहाँ पहुँचे, हम उसे मार डालने को तैयार हैं।"
१६ किन्तु पौलुस के भाँन्जे को इस षडयन्त्र की
भनक लग गयी थी, सो वह छावनी में जा पहुँचा
और पौलुस को सब कुछ बता दिया। १७ इस पर
पौलुस ने किसी एक सेनानायक को बुलाकर उससे
कहा, "इस युवक को सेनापति के पास ले जाओ
क्योंकि इसे उससे कुछ कहना है।" १८ सो वह उसे
सेनापति के पास ले गया और बोला, "बंदी पौलुस
ने मुझे बुलाया और मुझसे इस युवक को तेरे पास
पहुँचाने को कहा क्योंकि यह तुझसे कुछ कहना
चाहता है।"
१९ सेनापति ने उसका हाथ पकड़ा और उसे एक
ओर ले जाकर पूछा, "बता तू मुझ से क्या कहना
चाहता है?"
२० युवक बोला, "यहूदी इस बात पर एकमत
हो गये हैं कि वे पौलुस से और गहराई के साथ
पूछताछ करने के बहाने महासभा में उसे लाये
जाने की तुझ से प्रार्थना करें। २१ इसलिये उनकी
मत सुनना। क्योंकि चालीस से भी अधिक लोग
घात लगाये उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने
यह कसम उठाई है कि जब तक वे उसे मार न
लें, उन्हें न कुछ खाना है, न पीना। बस अब तेरी
अनुमति की प्रतीक्षा में वे तैयार बैठे हैं।"
२२ फिर सेनापति ने युवक को यह आदेश देकर
भेज दिया, "तू यह किसी को मत बताना कि तूने
मुझे इसकी सूचना दे दी है।"

पौलुस का कैसरिया भेजा जाना

२३ फिर सेनापति ने अपने दो सेनानायकों को
बुलाकर कहा, "दो सौ सैनिकों, सत्तर घुड़सवारों
और सौ भालैतों को कैसरिया जाने के लिये तैयार
रखो। रात के तीसरे पहर चल पड़ने के लिये तैयार
रहना। २४ पौलुस की सवारी के लिये घोड़ों का भी
प्रबन्ध रखना और उसे सुरक्षा पूर्वक राज्यपाल
फ़ेलिक्स के पास ले जाना।" २५ उसने एक पत्र
लिखा जिसका विषय था:

२६ महामहिम राज्यपाल फ़ेलिक्स को
क्लोदियुस लूसियास का
नमस्कार पहुँचे।
२७ इस व्यक्ति को यहूदियों ने पकड़ लिया
था और वे इसकी हत्या करने ही वाले थे कि
मैंने यह जानकर कि यह एक रोमी नागरिक

*२३:५ उद्धरण निर्गमन २२:२८

है, अपने सैनिकों के साथ जा कर इसे बचा लिया। २८ मैं क्योंकि उस कारण को जानना चाहता था जिससे वे उस पर दोष लगा रहे थे, उसे उनकी महा-धर्म सभा में ले गया। २९ मुझे पता चला कि उनकी व्यवस्था से संबंधित प्रश्नों के कारण उस पर दोष लगाया गया था। किन्तु उस परकोई ऐसा अभियोग नहीं था जो उसे मृत्यु दण्ड के योग्य या बंदी बनाये जाने योग्य सिद्ध हो। ३० फिर जब मुझे सूचना मिली कि वहाँ इस मनुष्य के विरोध में कोई षडयन्त्र रचा गया है तो मैंने इसे तुरंत तेरे पास भेज दिया है। और इस पर अभियोग लगाने वालों को यह आदेश दे दिया है कि वे इसके विरुद्ध लगाये गये अपने अभियोग को तेरे सामने रखें।

३१ सो सिपाहियों ने इन आज्ञाओं को पूरा किया और वे रात में ही पौलुस को अंतिपतरिस के पास ले गये। ३२ फिर अगले दिन घुड़-सवारों को उसके साथ आगे जाने के लिये छोड़ कर वे छावनी को लौट आये। ३३ जब वे कैसरिया पहुँचे तो उन्होंने राज्यपाल को वह पत्र देते हुए पौलुस को उसे सौंप दिया।

३४ राज्यपाल ने पत्र पढ़ा और पौलुस से पूछा कि वह किस प्रदेश का निवासी है। जब उसे पता चला कि वह किलिकिया का रहने वाला है ३५ तो उसने उससे कहा, "तुझ पर अभियोग लगाने वाले जब आ जायेंगे, मैं तभी तेरी सुनवाई करूँगा।" उसने आज्ञा दी कि पौलुस को पहरे के भीतर हेरोदेस के महल में रखा जाये।

यहूदियों द्वारा पौलुस पर अभियोग

२४ १ पाँच दिन बाद महायाजक हनन्याह कुछ बुजुर्ग यहूदी नेताओं और तिरतुल्लुस नाम के एक वकील को साथ लेकर कैसरिया आया। वे राज्यपाल के सामने पौलुस पर अभियोग सिद्ध करने आये थे। २ फेलिक्स के सामने पौलुस की पेशी होने पर मुकदमे की कार्यवाही आरम्भ करते हुए तिरतुल्लुस बोला, "हे महोदय, तुम्हारे कारण हम बड़ी शांति के साथ रह रहे हैं और तुम्हारी दूर-दृष्टि से देश में बहुत से अपेक्षित सुधार आये हैं। ३ हे सर्वश्रेष्ट फेलिक्स, हम बड़ी कृतज्ञता के साथ इसे हर प्रकार से हर कहीं स्वीकार करते हैं। ४ तुम्हारा और अधिक समय न लेते हुए, मेरी प्रार्थना है कि कृपया आप संक्षेप में हमें सुन लें। ५ बात यह है कि इस व्यक्ति को हमने एक उत्पाती के रूप में पाया है। सारी दुनिया केयहूदियों में इसनेदंगे भड़कवाए हैं। यह नासरियों के पंथ का नेता है। ६-८ इसने मन्दिर को भी अपवित्र करने का जतन किया है। हमने इसे इसीलिए पकड़ा है। हम इस पर जो आरोप लगा रहे हैं, *उनसबको आप स्वयं इससे पूछताछ करके जान सकते हो।" ९ इस अभियोग में यहूदी भी शामिल हो गये। वे दृढ़ता के साथ कह रहे थे कि ये सब बातें सच हैं।

पौलुस का अपने आपको फेलिक्स के सामने बचाव करना

१० फिर राज्यपाल ने जब पौलुस को बोलने के लिये इशारा किया तो उसने उत्तर देते हुए कहा, "तू बहुत दिनों से इस देश का न्यायाधीश है। यह जानते हुए मैं प्रसन्नता के साथ अपना बचाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। ११ तू स्वयं यह जान सकता है कि अभी आराधना के लिए मुझे यरूशलेम गये बस बारह दिन बीते हैं। १२ वहाँ मन्दिर में मुझे न तो किसी के साथ बहस करते पाया गया है और न ही आराधनालयों या नगर में कहीं और लोगों को दंगों के लिए भड़काते हुए १३ और अब तेरे सामने जिन अभियोगों को ये मुझ पर लगा रहे हैं उन्हें प्रमाणित नहीं कर सकते हैं।

१४ "किन्तु मैं तेरे सामने यह स्वीकार करता हूँ कि मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की आराधना अपने पंथ के अनुसार करता हूँ, जिसे ये एक पंथ कहते हैं। मैं हर उस बात में विश्वास करता हूँ जिसे व्यवस्था बताती है और जो नबियों के ग्रन्थों में लिखी है। १५ और मैं परमेश्वर में वैसे ही भरोसा रखता हूँ जैसे स्वयं ये लोग रखते हैं कि धर्मियों और अधर्मियों दोनों का ही पुनरुत्थान होगा। १६ इसीलिये मैं भी परमेश्वर और लोगों के समक्ष सदा अपनी अन्तरात्मा को शुद्ध बनाये रखने के लिए प्रयत्न करता रहता हूँ।

१७-१८ "बरसों तक दूर रहने के बाद मैं अपने दीन जनों के लिये उपहार ले कर भेंट चढ़ाने आया था। और जब मैं यह कर ही रहा था उन्होंने मुझे मन्दिर में पाया, तब मैं विधि-विधान पूर्वक शुद्ध था। न वहाँ कोई भीड़ थी और न कोई अशांति। १९ एशिया से आये कुछ यहूदी वहाँ मौजूद थे।

*२४:६-८ कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है : "हम अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करना चाहते थे। ७ किन्तु सेनानायक लिसिआस ने बलपूर्वक उसे हमसे छीन लिया ८ और अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे इसे अभियोग लगाने के लिए तेरे सामने ले जाये।"

यदि मेरे विरुद्ध उनके पास कुछ है तो उन्हें तेरे सामने उपस्थित हो कर मुझ पर आरोप लगाने चाहियें। २० या ये लोग जो यहाँ हैं वे बतायें कि जब मैं यहूदी महासभा के सामने खड़ा था, तब उन्होंने मुझ में क्या खोट पाया। २१ सिवाय इसके कि जब मैं उनके बीच में खड़ा था तब मैंने ऊँचे स्वर में कहा था, 'मरे, हुओं में से जी उठने के विषय में आज तुम्हारे द्वारा मेरा न्याय किया जा रहा है।'"

२२ फिर फेलिक्स, जो इस-पंथ की पूरी जानकारी रखता था, मुकदमे की सुनवाई को स्थगित करते हुए बोला, "जब सेनानायक लुसिआस आयेगा, मैं तभी तुम्हारे इस मुकदमे पर अपना निर्णय दूँगा।" २३ फिर उसने सूबेदार को आज्ञा दी कि थोड़ी छूट देकर पौलुस को पहरे के भीतर रखा जाये और उसके मित्रों को उसकी आवश्यकताएँ पूरी करने से न रोका जाये।

पौलुस की फेलिक्स और उसकी पत्नी से बातचीत

२४ कुछ दिनों बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला के साथ वहाँ आया। वह एक यहूदी महिला थी। फेलिक्स ने पौलुस को बुलवा भेजा और यीशु मसीह में विश्वास के विषय में उससे सुना। २५ किन्तु जब पौलुस नेकी, आत्मसंयम और आने वाले न्याय के विषय में बोल रहा था तो फेलिक्स डर गया और बोला, "इस समय तू चला जा, अवसर मिलने पर मैं तुझे फिर बुलवाऊँगा।" २६ उसी समय उसे यह आशा भी थी कि पौलुस उसे कुछ धन देगा इसीलिए फेलिक्स पौलुस को बातचीत के लिए प्राय: बुलवा भेजता था।

२७ दो साल ऐसे बीत जाने के बाद फेलिक्स का स्थान पुरुखियुस फेस्तुस ने ग्रहण कर लिया। क्योंकि फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न रखना चाहता था इसीलिये उसने पौलुस को बंदीगृह में ही रहने दिया।

पौलुस कैसर से अपना न्याय चाहता है

२५ १ फिर फेस्तुस ने उस प्रदेश में प्रवेश किया और तीन दिन बाद वह कैसरिया से यरूशलेम को रवाना हो गया। २ वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदियों के मुखियाओं ने पौलुस के विरुद्ध लगाये गये अभियोग उसके सामने रखे और उससे प्रार्थना की ३ कि वह पौलुस को यरूशलेम भिजवा कर उन का पक्ष ले। (वे रास्ते में ही उसे मार डालने का षडचन्त्र बनाये हुए थे।) ४ फेस्तुस ने उत्तर दिया, "पौलुस कैसरिया में बन्दी है और वह जल्दी ही वहाँ जाने वाला है।" उसने कहा, ५ "तुम अपने कुछ मुखियाओं को मेरे साथ भेज दो और यदि उस व्यक्ति ने कोई अपराध किया है तो वे वहाँ उस पर अभियोग लगायें।"

६ उनके साथ कोई आठ दस दिन बात कर फेस्तुस कैसरिया चला गया। अगले ही दिन अदालत में न्यायासन पर बैठ कर उसने आज्ञा दी कि पौलुस को पेश किया जाये। ७ जब वह पेश हुआ तो यरूशलेम से आये यहूदी उसे घेर कर खड़े हो गये। उन्होंने उस पर अनेक गम्भीर आरोप लगाये किन्तु उन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके। ८ पौलुस ने स्वयं अपना बचाव करते हुए कहा, "मैंने यहूदियों के विधान के विरोध में कोई काम नहीं किया है, न ही मन्दिर के विरोध में और न ही कैसर के विरोध में।"

९ फेस्तुस यहूदियों को प्रसन्न करना चाहत था, इसलिए उत्तर में उसने पौलुस से कहा, "तो क्या तू यरूशलेम जाना चाहता है ताकि मैं वहाँ तुझ पर लगाये गये इन अभियोगों का न्याय करूँ?"

१० पौलुस ने कहा, "इस समय मैं कैसर की अदालत के सामने खड़ा हूँ। मेरा न्याय यहीं किया जाना चाहिये। मैंने यहूदियों के साथ कुछ बुरा नहीं किया है, इसे तू भी बहुत अच्छी तरह जानता है। ११ यदि मैं किसी अपराध का दोषी हूँ और मैंने कुछ ऐसा किया है, जिसका दण्ड मृत्यु है तो मैं मरने से बचना नहीं चाहूँगा, किन्तु यदि ये लोग मुझ पर जो अभियोग लगा रहे हैं, उनमें कोई सत्य नहीं है तो मुझे कोई भी इन्हें नहीं सौंप सकता। यही कैसर से मेरी प्रार्थना है।"

१२ अपनी परिषद् से सलाह करने के बाद फेस्तुस ने उसे उत्तर दिया, "तूने कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना की है, इसलिये तुझे कैसर के सामने ही ले जाया जायेगा।"

पौलुस की अग्रिप्पा के सामने पेशी

१३ कुछ दिन बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनिके फेस्तुस से मिलते कैसरिया आये। १४ जब वे वहाँ कई दिन बिता चुके तो फेस्तुस ने राजा के सामने पौलुस के मुकदमे को इस प्रकार समझाया, "यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसे फेलिक्स बंदी के रूप में छोड़ गया था। १५ जब मैं यरूशलेम में था, प्रमुख याजकों और बुजुर्गों ने उसके विरुद्ध मुकदमा प्रस्तुत किया था और माँग की थी कि उसे दण्डित किया जाये। १६ मैंने उनसे कहा, 'रोमियों में ऐसा चलन नहीं है कि किसी व्यक्ति को, जब तक वादी-प्रतिवादी को आमने-सामने न करा दिया जाये

और उस पर लगाये गये अभियोगों से उसे बचाव का अवसर न दे दिया जाये, उसे दण्ड के लिये सौंपा जाये।'

१७ "सो वे लोग जब मेरे साथ यहाँ आये तो मैंने बिना देर लगाये अगले ही दिन न्यायासन पर बैठ कर उस व्यक्ति को पेश किये जाने की आज्ञा दी। १८ जब उस पर दोष लगाने वाले बोलने खड़े हुए तो उन्होंने उस पर ऐसा कोई दोष नहीं लगाया जैसा कि मैं सोच रहा था। १९ बल्कि उनके अपने धर्म की कुछ बातों पर ही और यीशु नाम के एक व्यक्ति पर जो मर चुका है, उनमें कुछ मतभेद था। यद्यपि पौलुस का दावा है कि वह जीवित है। २० मैं समझ नहीं पा रहा था कि इन विषयों की छानबीन कैसे कि जाये, इसलिये मैंने उससे पूछा कि क्या वह अपने इन अभियोगों का न्याय कराने के लिये यरूशलेम जाने को तैयार है? २१ किन्तु पौलुस ने जब प्रार्थना की कि उसे सम्राट के न्याय के लिये ही वहाँ रखा जाये, तो मैंने आदेश दिया, कि मैं जब तक उसे कैसर के पास न भिजवा दूँ, उसे यहीं रखा जाये।"

२२ इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "इस व्यक्ति की सुनवाई मैं स्वयं करना चाहता हूँ।"

फेस्तुस ने कहा, "तुम उसे कल सुन लेना।"

२३ सो अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनिके बड़ी सजधज के साथ आये और उन्होंने सेनानायकों तथा नगर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ सभा भवन में प्रवेश किया। फेस्तुस ने आज्ञा दी और पौलुस को वहाँ ले आया गया।

२४ फिर फेस्तुस बोला, "महाराजा अग्रिप्पा तथा उपस्थित सज्जनो! तुम इस व्यक्ति को देख रहे हो जिसके विषय में समूचा यहूदी-समाज, यरूशलेम में और यहाँ, मुझसे चिल्ला-चिल्ला कर माँग करता रहा है कि इसे अब और जीवित नहीं रहने देना चाहिये। २५ किन्तु मैंने जाँच लिया है कि इसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि इसे मृत्युदण्ड दिया जाये। क्योंकि इसने स्वयं सम्राट से पुनर्विचार की प्रार्थना की है इसलिये मैंने इसे वहाँ भेजने का निर्णय लिया है। २६ किन्तु इसके विषय में सम्राट के पास लिख भेजने को मेरे पास कोई निश्चित बात नहीं है। मैं इसे इसीलिये आप लोगों के सामने और विशेष रूप से हे महाराजा अग्रिप्पा! तुम्हारे सामने लाया हूँ ताकि इस जाँच पड़ताल के बाद लिखने को मेरे पास कुछ हो। २७ कुछ भी हो मुझे किसी बंदी को उसका अभियोग-पत्र तैयार किये बिना वहाँ भेज देना असंगत जान पड़ता है।"

पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने

२६ १ अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे स्वयं अपनी ओर से बोलने की अनुमति है।" इस पर पौलुस ने अपना हाथ उठाया और अपने बचाव में बोलना आरम्भ किया, २ "हे राजा अग्रिप्पा! मैं अपने आप को भाग्यवान समझता हूँ कि यहूदियों ने मुझ पर जो आरोप लगाये हैं, उन सब बातों के बचाव में, मैं तेरे सामने बोलने जा रहा हूँ। ३ विशेष रूप से यह इसलिये सत्य है कि तुझे सभी यहूदी प्रथाओं और उनके विवादों का ज्ञान है। इसलिये मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि धैर्य के साथ मेरी बात सुनी जाये।

४ "सभी यहूदी जानते हैं कि प्रारम्भ से ही स्वयं अपने देश में और यरूशलेम में भी बचपन से ही मैंने कैसा जीवन जिया है। ५ वे मुझे बहुत समय से जानते हैं और यदि वे चाहें तो इस बात की गवाही दे सकते हैं कि मैंने हमारे धर्म के एक सबसे अधिक कट्टर पंथ के अनुसार एक फ़रीसी के रूप में जीवन जिया है। ६ और अब इस विचाराधीन स्थिति में खड़े हुए मुझे उस वचन का ही भरोसा है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को दिया था। ७ यह वही वचन है जिसे हमारी बारहों जातियाँ दिन रात तल्लीनता से परमेश्वर की सेवा करते हुए, प्राप्त करने का भरोसा रखती हैं। हे राजन्, इसी भरोसे के कारण मुझ पर यहूदियों द्वारा आरोप लगाया जा रहा है। ८ तुम में से किसी को भी यह बात विश्वास के योग्य क्यों नहीं लगती है कि परमेश्वर मरे हुए को जिला देता है।

९ "मैं भी सोचा करता था नासरी यीशु के नाम का विरोध करने के लिए जो भी बन पड़े, वह बहुत कुछ करूँ। १० और ऐसा ही मैंने यरूशलेम में किया भी। मैंने परमेश्वर के बहुत से भक्तों को जेल में ठूँस दिया क्योंकि प्रमुख याजकों से इसके लिये मुझे अधिकार प्राप्त था। और जब उन्हें मारा गया तो मैंने अपना मत उन के विरोध में दिया। ११ यहूदी आराधनालयों में मैं उन्हें प्राय: दण्ड दिया करता और परमेश्वर के विरोध में बोलने के लिए उन पर दबाव डालने का यत्न करता रहता। उनके प्रति मेरा क्रोध इतना अधिक था कि उन्हें सताने के लिए मैं बाहर के नगरों तक गया।

पौलुस द्वारा यीशु के दर्शन के विषय में बताना

१२ "ऐसी ही एक यात्रा के अवसर पर जब मैं प्रमुख याजकों से अधिकार और आज्ञा पाकर दमिश्क जा रहा था, १३ तभी दोपहर को जब मैं

सभी मार्ग में ही था कि मैंने हे राजन, स्वर्ग से
एक प्रकाश उतरते देखा। उसका तेज सूर्य से भी
अधिक था। वह मेरे और मेरे साथ के लोगों के
चारों ओर कौंध गया। १४ हम सब धरती पर लुढ़क
गये। फिर मुझे एक वाणी सुनाई दी। वह इब्रानी
भाषा में मुझसे कह रही थी, 'हे शाऊल, हे शाऊल,
तू मुझे क्यों सता रहा है? पैंने की नोक पर लात
मारना तेरे बस की बात नहीं है।'
१५ "फिर मैंने पूछा, 'हे प्रभु, तु कौन है?'
"प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं यीशु हूँ जिसे तु
यातनाएँ दे रहा है। १६ किन्तु अब तू उठ और अपने
पैरों पर खड़ा हो जा। मैं तेरे सामने इसीलिए
प्रकट हुआ हूँ कि तुझे एक सेवक के रूप में
नियुक्त करूँ और जो कुछ तूने मेरे विषय में देखा है
और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँगा, उसका तू साक्षी
रहे। १७ मैं जिन यहूदियों और विधर्मियों के पास
१८ उनकी आँखें खोलने, उन्हें अंधकार से प्रकाश
की ओर लाने और शैतान की ताकत से परमेश्वर
की ओर मोड़ने के लिये, तुझे भेज रहा हूँ, उनसे
तेरी रक्षा करता रहूँगा। इससे वे पापों की क्षमा
प्राप्त करेंगे और उन लोगों के बीच स्थान पायेंगे
जो मुझ में विश्वास के कारण पवित्र हुए हैं।'"

पौलुस के कार्य

१९ "हे राजन अग्रिप्पा, इसीलिये तभी से उस
दर्शन की आज्ञा का कभी भी उल्लंघन न करते हुए
२० बल्कि उसके विपरीत मैं पहले उन्हें दमिश्क में,
फिर यरूशलेम में और यहूदिया के समूचे क्षेत्र
में और ग़ैर यहूदियों को भी उपदेश देता रहा
कि मनफिराव के, परमेश्वर की ओर मुड़े और
मनफिराव के योग्य काम करें।
२१ "इसी कारण जब मैं यहाँ मन्दिर में था,
यहूदियों ने मुझे पकड़ लिया और मेरी हत्या का
यत्न किया। २२ किन्तु आज तक मुझे परमेश्वर
की सहायता मिलती रही है और इसीलिए मैं
यहाँ छोटे और बड़े सभी लोगों के सामने साक्षी
देता खड़ा हूँ। मैं बस उन बातों को छोड़ कर और
कुछ नहीं कहता जो नबियों और मूसा के अनुसार
घटनी ही थीं २३ कि मसीह को यातनाएँ भोगनी
होंगी और वही मरे हुओं में से पहला जी उठने
वाला होगा और वह यहूदियों और ग़ैर यहूदियों
को ज्योति का सन्देश देगा।"

पौलुस द्वारा अग्रिप्पा का भ्रम दूर करने का यत्न

२४ वह अपने बचाव में जब इन बातों को कह ही
रहा था कि फेस्तुस ने चिल्ला कर कहा, "पौलुस,
तेरा दिमाग़ख़राब हो गया है! तेरी अधिक पढ़ाई
तुझे पागल बनाये डाल रही है!"
२५ पौलुस ने कहा, "हे परमगुणी फेस्तुस, मैं
पागल नहीं हूँ बल्कि जो बातें मैं कह रहा हूँ, वे
सत्य हैं और संगत भी। २६ स्वयं राजा इन बातों को
जानता है और मैं मुक्त भाव से उससे कह सकता
हूँ। मेरा निश्चय है कि इनमें से कोई भी बात उसकी
आँखों से ओझल नहीं है। मैं ऐसा इसलिये कह
रहा हूँ कि यह बात किसी कोने में नहीं की गयी।
२७ हे राजन अग्रिप्पा! नबियों ने जो लिखा है,
क्या तू उसमें विश्वास रखता है? मैं जानता हूँ कि
तेरा विश्वास है।"
२८ इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "क्या तू
यह सोचता है कि इतनी सरलता से तू मुझे मसीही
बनने को मना लेगा?"
२९ पौलुस ने उत्तर दिया, "थोड़े समय में, चाहे
अधिक समय में, परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि
न केवल तू बल्कि वे सब भी, जो आज मुझे सुन
रहे हैं, वैसे ही हो जायें, जैसा मैं हूँ, सिवाय इन
ज़ंजीरों के।"
३० फिर राजा खड़ा हो गया और उसके साथ ही
राज्यपाल, बिरनिके और साथ में बैठे हुए लोग भी
उठ खड़े हुए। ३१ वहाँ से बाहर निकल कर वे आपस
में बात करते हुए कहने लगे, इस व्यक्ति ने तो
ऐसा कुछ नहीं किया है, जिससे इसे मृत्युदण्ड या
कारावास मिल सके। ३२ अग्रिप्पा ने फेस्तुस से
कहा, "यदि इसने कैसर के सामने पुनर्विचार की
प्रार्थना न की होती, तो इस व्यक्ति को छोड़ा
जा सकता था।"

पौलुस को रोम भेजा जाना

२७ १ जब यह निश्चय हो गया कि हमें जहाज़
से इटली जाना है तो पौलुस तथा कुछ
दूसरे बंदियों को सम्राट की सेना के यूलियस
नाम के एक सेनानायक को सौंप दिया गया।
२ अद्रमुत्तियुम से हम एक जहाज़ पर चढ़े जो
एशिया के तटीय क्षेत्रों से हो कर जाने वाला था
और समुद्र यात्रा पर निकल पड़े। थिस्सलुनीके
निवासी एक मकदूनी, जिसका नाम अरिस्तर्खुस
था, भी हमारे साथ था।
३ अगले दिन हम सैदा में उतरे। वहाँ यूलियस
ने पौलुस के साथ अच्छा व्यवहार किया और उसे
उसके मित्रों का स्वागत सत्कार ग्रहण करने
के लिए उनके यहाँ जाने की अनुमति दे दी।
४ वहाँ से हम समुद्र-मार्ग से फिर चल पड़े। हम
साइप्रस की आड़ लेकर चल रहे थे क्योंकि हवाएँ

हमारे प्रतिकूल थीं। ५ फिर हम किलिकिया और
पंफूलिया के सागर को पार करते हुए लुकिया और
मीरा पहुँचे। ६ वहाँ सेनानायक को सिकन्दरिया का
इटली जाने वाला एक जहाज़ मिला। उसने हमें
उस पर चढ़ा दिया।
७ कई दिन तक हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए
बड़ी कठिनाई के साथ कनिदुस के सामने पहुँचे
क्योंकि हवा हमें अपने मार्ग पर नहीं बने रहने
दे रही थी, सो हम सलभौने के सामने से क्रीत
की ओट में अपनी नाव बढ़ाने लगे। ८ क्रीत के
किनारे-किनारे बड़ी कठिनाई से नाव को आगे
बढ़ाते हुए हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जिसका
नाम था सुरक्षित बंदरगाह। यहाँ से लसेआ नगर
पास ही था।
९ समय बहुत बीत चुका था और नाव को
आगे बढ़ाना भी संकटपूर्ण था क्योंकि तब तक
उपवास का दिन समाप्त हो चुका था इसलिए
पौलुस ने चेतावनी देते हुए उनसे कहा, १० “हे
पुरुषो, मुझे लगता है कि हमारी यह सागर-यात्रा
विनाशकारी होगी, न केवल माल असबाब और
जहाज़ के लिए बल्कि हमारे प्राणों के लिये भी।”
११ किन्तु पौलुस ने जो कहा था, उस पर कान देने
के बजाय उस सेनानायक ने जहाज़ के मालिक
और कप्तान की बातों का अधिक विश्वास किया।
१२ और वह बन्दरगाह शीत ऋतु के अनुकूल नहीं
था, इसलिए अधिकतर लोगों ने, यदि हो सके तो
फिनिक्स पहुँचने का प्रयत्न करने की ही ठानी।
और सर्दी वहीं बिताने का निश्चय किया। फिनिक्स
क्रीत का एक ऐसा बन्दरगाह है जिसका मुख
दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दोनों के ही
सामने पड़ता है।

तूफ़ान

१३ जब दक्षिणी पवन हौले-हौले बहने लगा तो
उन्होंने सोचा कि जैसा उन्होंने चाहा था, वैसा
उन्हें मिल गया है। सो उन्होंने लंगर उठा लिया
और क्रीत के किनारे-किनारे जहाज़ बढ़ाने लगे।
१४ किन्तु अभी कोई अधिक समय नहीं बीता था
कि द्वीप की ओर से एक भीषण आँधी उठी और
आरपार लपेटती चली गयी। यह “उत्तर पूर्वी”
आँधी कहलाती थी। १५ जहाज़ तूफान में घिर
गया। वह आँधी को चीर कर आगे नहीं बढ़ पा
रहा था सो हमने उसे यों ही छोड़ कर हवा के रूख
बहने दिया।
१६ हम क्लोदा नाम के एक छोटे से द्वीप की ओट
में बहते हुए बड़ी कठिनाई से रक्षा नौकाओं को
पा सके। १७ फिर रक्षा-नौकाओं को उठाने के बाद
जहाज़ को रस्सों से लपेट कर बाँध दिया गया और
कहीं सुरतिस के उथले पानी में फँस न जायें, इस
डर से उन्होंने पालें उतार दीं और जहाज़ को बहने
दिया।
१८ दूसरे दिन तूफान के घातक थपेड़े खाते हुए वे
जहाज़ से माल-असबाब बाहर फेंकने लगे। १९ और
तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ पर
रखे उपकरण फेंक दिये। २० फिर बहुत दिनों तक
जब न सूरज दिखाई दिया, न तारे और तूफान
अपने घातक थपेड़े मारता ही रहा तो हमारे बच
पाने की आशा पूरी तरह जाती रही।
२१ बहुत दिनों से किसी ने भी कुछ खाया नहीं
था। तब पौलुस ने उनके बीच खड़े होकर कहा,
“हे पुरुषो यदि क्रीत से रवाना न होने की मेरी
सलाह तुमने मानी होती तो तुम इस विनाश और
हानि से बच जाते। २२ किन्तु मैं तुमसे अब भी
आग्रह करता हूँ कि अपनी हिम्मत बाँधे रखो।
क्योंकि तुममें से किसी को भी अपने प्राण नहीं
खोने हैं। हाँ! बस यह जहाज़ नष्ट हो जायेगा,
२३ क्योंकि पिछली रात उस परमेश्वर का एक
स्वर्गदूत, जिसका मैं हूँ और जिसकी मैं सेवा करता
हूँ, मेरे पास आकर खड़ा हुआ २४ और बोला,
‘पौलुस डर मत। तुझे निश्चय ही कैसर के सामने
खड़ा होना है और उन सब को जो तेरे साथ यात्रा
कर रहे हैं, परमेश्वर ने तुझे दे दिया है।’ २५ सो
लोगो! अपना साहस बनाये रखो क्योंकि परमेश्वर
में मेरा विश्वास है, इसलिये जैसा मुझे बताया
गया है, ठीक वैसा ही होगा। २६ किन्तु हम किसी
टापू के उथले पानी में अवश्य जा फँसेंगे।”
२७ फिर जब चौदहवीं रात आयी हम अद्रिया
के सागर में थपेड़े खा रहे थे तभी आधी रात के
आसपास जहाज़ के चालकों को लगा जैसे कोई
तट पास में ही हो। २८ उन्होंने सागर की गहराई
नापी तो पाया कि वहाँ कोई अस्सी हाथ गहराई
थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने पानी की गहराई फिर
नापी और पाया कि अब गहराई साठ हाथ रह गयी
थी। २९ इस डर से कि वे कहीं किसी चट्टानी उथले
किनारे में न फँस जायें, उन्होंने जहाज़ के पिछले
हिस्से से चार लंगर फेंके और प्रार्थना करने
लगे कि किसी तरह दिन निकल आये। ३० उधर
जहाज़ के चलाने वाले जहाज़ से भाग निकलने का
प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने यह बहाना बनाते हुए
कि वे जहाज़ के अगले भाग से कुछ लंगर डालने
के लिये जा रहे हैं, रक्षा-नौकाएँ समुद्र में उतार
दीं। ३१ तभी सेनानायक से पौलुस ने कहा, “यदि

ये लोग जहाज़ पर नहीं रुके तो तुम भी नहीं बच
पाओगे।” ३२ सो सैनिकों ने रस्सियों को काट कर
रक्षा नौकाओं को नीचे गिरा दिया।
३३ भोर होने से थोड़ा पहले पौलुस ने यह कहते
हुए सब लोगों से थोड़ा भोजन कर लेने का आग्रह
किया कि चौदह दिन हो चुके हैं और तुम निरन्तर
चिंता के कारण भूखे रहे हो। तुमने कुछ भी तो
नहीं खाया है। ३४ मैं तुमसे अब कुछ खाने के लिए
इसलिए आग्रह कर रहा हूँ कि तुम्हारे जीवित
रहने के लिये यह आवश्यक है। क्योंकि तुममें से
किसी के सिर का एक बाल तक बाँका नहीं होना है।
३५ इतना कह चुकने के बाद उसने थोड़ी रोटी ली
और सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया।
फिर रोटी को विभाजित किया और खाने लगा।
३६ इससे उन सब की हिम्मत बढ़ी और उन्होंने भी
थोड़ा भोजन लिया। ३७ (जहाज़ पर कुल मिलाकर
हम दो सौ छिहत्तर व्यक्ति थे।) ३८ पूरा खाना खा
चुकने के बाद उन्होंने समुद्र में अनाज फेंक कर
जहाज़ को हल्का किया।

जहाज़ का टूटना

३९ जब भोर हुई तो वे उस धरती को पहचान नहीं
पाये किन्तु उन्हें लगा जैसे वहाँ कोई किनारेदार
खाडी है। उन्होंने निश्चय किया कि यदि हो सके
तो जहाज़ को वहाँ टिका दें। ४० सो उन्होंने लंगर
काट कर ढीले कर दिये और उन्हें समुद्र में नीचे
गिर जाने दिया। उसी समय उन्होंने पतवारों से
बँधे रस्से ढीले कर दिये; फिर जहाज़ के अगले
पतवार चढ़ा कर तट की ओर बढ़ने लगे। ४१ और
उनका जहाज़ रेते में जा टकराया। जहाज़ का
अगला भाग उसमें फँस कर अचल हो गया।
और शक्तिशाली लहरों के थपेड़ों से जहाज़ का
पिछला भाग टूटने लगा।
४२ तभी सैनिकों ने कैदियों को मार डालने की
एक योजना बनायी ताकि उनमें से कोई भी तैर
कर बच न निकले। ४३ किन्तु सेनानायक पौलुस
को बचाना चाहता था, इसलिये उसने उन्हें उनकी
योजना को अमल में लाने से रोक दिया। उसने
आज्ञा दी कि जो भी तैर सकते हैं, वे पहले ही कूद
कर किनारे जा लगें ४४ और बाकी के लोग तख्तों
या जहाज़ के दूसरे टुकड़ों के सहारे चले जायें। इस
प्रकार हर कोई सुरक्षा के साथ किनारे आ लगा।

माल्टा द्वीप पर पौलुस

२८ १ इस सब कुछ से सुरक्षापुर्वक बच
निकलने के बाद हमें पता चला कि उस
द्वीप का नाम माल्टा था। २ वहाँ के मूल निवासियों
ने हमारे साथ असाधारण रूप से अच्छा व्यवहार
किया। क्योंकि सर्दी थी और वर्षा होने लगी थी,
इसलिए उन्होंने आग जलाई और हम सब का
स्वागत किया। ३ पौलुस ने लकड़ियों का एक
गट्ठर बनाया और वह जब लकड़ियों को आग
पर रख रहा था तभी गर्मी खा कर एक विषैला
नाग बाहर निकला और उसने उसके हाथ को डस
लिया। ४ वहाँ के निवासियों ने जब उस जंतु को
उसके हाथ से लटकते देखा तो वे आपस में कहने
लगे, “निश्चय ही यह व्यक्ति एक हत्यारा है।
यद्यपि यह सागर से बच निकला है किन्तु न्याय
इसे जीने नहीं दे रहा है।”
५ किन्तु पौलुस ने उस नाग को आग में ही
झटक दिया। पौलुस को किसी प्रकार की हानि
नहीं हुई। ६ लोग सोच रहे थे कि वह या तो सूज
जायेगा या फिर बरबस धरती पर गिर कर मर
जायेगा। किन्तु बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के
बाद और यह देख कर कि उसे असाधारण रूप से
कुछ भी नहीं हुआ है, उन्होंने अपनी धारणा बदल
दी और बोले, “यह तो कोई देवता है।”
७ उस स्थान के पास ही उस द्वीप के प्रधान
अधिकारी पबलियुस के खेत थे। उसने अपने घर
ले जा कर हमारा स्वागत-सत्कार किया। बड़े
मुक्त भाव से तीन दिन तक वह हमारी आवभगत
करता रहा। ८ पबलियुस का पिता बिस्तर में था।
उसे बुखार और पेचिश हो रही थी। पौलुस उससे
मिलने भीतर गया। फिर प्रार्थना करने के बाद
उसने उस पर अपने हाथ रखे और वह अच्छा हो
गया। ९ इस घटना के बाद तो उस द्वीप के शेष सभी
रोगी भी वहाँ आये और वे ठीक हो गये।
१०–११ अनेक उपहारों द्वारा उन्होंने हमारा मान
बढ़ाया और जब हम वहाँ से नाव पर आगे को चले
तो उन्होंने सभी आवश्यक वस्तुएँ ला कर हमें दीं।

पौलुस का रोम जाना

फिर सिकंदरिया के एक जहाज़ पर हम वही चल
पड़े। इस द्वीप पर ही जहाज़ जाड़े में रुका हुआ
था। जहाज़ के अगले भाग पर जुड़वाँ भाईयों का
चिन्ह अंकित था। १२ फिर हम सरकुस जा पहुँचे
जहाँ हम तीन दिन ठहरे। १३ वहाँ से जहाज़ द्वारा
हम रेगियुम पहुँचे और फिर अगले ही दिन दक्षिणी
हवा चल पड़ी। सो अगले दिन हम पुतियुली आ
गये। १४ वहाँ हमें कुछ बंधु मिले और उन्होंने हमें
वहाँ सात दिन ठहरने को कहा और इस तरह हम
रोम आ पहुँचे। १५ जब वहाँ के बंधुओं को हमारी

सूचना मिली तो वे अप्पियुस का बाज़ार और तीन
सराय तक हमसे मिलने आये। पौलुस ने जब उन्हें
देखा तो परमेश्वर को धन्यवाद देकर वह बहुत
उत्साहित हुआ।

पौलुस का रोम आना

१६ जब हम रोम पहुँचे तो एक सिपाही की
देखरेख में पौलुस को अपने आप अलग से रहने
की अनुमति दे दी गयी।
१७ तीन दिन बाद पौलुस ने यहूदी नेताओं
को बुलाया और उनके एकत्र हो जाने पर वह
उनसे बोला, "हे भाईयों, चाहे मैंने अपनी जाति
या अपने पूर्वजों के विधि-विधानके प्रतिकूल
कुछ भी नहीं किया है, तो भी यरूशलेम में
मुझे बंदी के रूप में रोमियों को सौंप दिया गया
था। १८ उन्होंने मेरी जाँच पड़ताल की और मुझे
छोड़ना चाहा क्योंकि ऐसाकुछ मैंने किया ही नहीं
था जो मृत्युदण्ड के लायक होता १९ किन्तु जब
यहूदियों नेआपत्ति की तो मैं कैसर से पुनर्विचार
की प्रार्थना करने को विवश हो गया। इसलिये
नहींकि मैं अपने ही लोगों पर कोई आरोप लगाना
चाहता था। २० यही कारण है जिससे मैं तुमसे
मिलना और बातचीत करना चाहता था क्योंकि
यह इस्राएल का वह भरोसा ही है जिसके कारण
मैं ज़ंजीर में बँधा हूँ।"
२१ यहूदी नेताओं ने पौलुस से कहा, "तुम्हारे
बारे में यहूदिया से न तो कोई पत्र ही मिला है,
और न ही वहाँ सेआने वाले किसी भी भाई ने तेरा
कोई समाचार दिया और न तेरे बारे में कोई बुरी
बात कही। २२ किन्तु तेरे विचार क्या हैं, यह हम
तुझसे सुनना चाहते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि
लोग सब कहीं इस पंथ के विरोध में बोलते हैं।"
२३ सो उन्होंने उसके साथ एक दिन निश्चित
किया। और फिर जहाँ वह ठहरा था, बड़ी संख्या में
आकार वे लोग एकत्र हो गये। मूसा की व्यवस्था
और नबियों के ग्रंथों से यीशु के विषय में उन्हें
समझाने का जतन करते हुए उसने परमेश्वर के
राज्य के बारे में अपनी साक्षी दी और समझाया।
वह सुबह से शाम तक इसी में लगा रहा। २४ उसने
जो कुछ कहा था, उससे कुछ तो सहमत होगये
किन्तु कुछ ने विश्वास नहीं किया। २५ फिर आपस
में एक दूसरे से असहमत होते हुए वे वहाँ से
जाने लगे। तब पौलुस ने एक यह बात और कही,
"यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा पवित्र आत्मा
ने तुम्हारे पूर्वजों से कितना ठीक कहा था,
२६ 'जाकर इन लोगों से कह दे :
तुम सुनोगे,
पर न समझोगे कदाचित्!
तुम बस देखते ही देखते रहोगे
पर न बूझोगे कभी भी!
२७ क्योंकि इनका ह्रदय जड़ता से भर गया
कान इनके कठिनता से श्रवण करते
और इन्होंने अपनी आँखे बंद कर ली
क्योंकि कभी ऐसा न हो जाए कि
ये अपनी आँख से देखें,
और कान से सुनें
और ह्रदय से समझे,
और कदाचित् लौटें मुझको स्वस्थ करना पड़े
उनको।' *
२८ "इसलिये तुम्हें जान लेना चाहिये कि
परमेश्वर का यह उद्धार विधर्मियों के पास भेज
दिया गया है। वे इसे सुनेंगे।" २९ †
३० वहाँ किराये के अपने मकान में पौलुस पूरे
दो साल तक ठहरा। जो कोई भी उससे मिलने
आता, वह उसका स्वागत करता। ३१ वह परमेश्वर
के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह
के विषय में उपदेश देता। वह इस कार्य को पूरी
निर्भयता और बिना कोई बाधा माने किया करता
था।

---

*२८:२७ उद्धरण यशायाह ६:९-१०

†२८:२९ 'प्रेरितों के काम' की कुछ प्रतियों में पद २९ जोड़ा गया है : "जब पौलुस ये बातें कह चुका तो आपस में विवाद करते हुए यहूदी वहाँ से चले गये।"